राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित
श्री विमल मित्र की अन्य रचनाएँ

इकाई, दहाई, सैकड़ा
जीवन माने दुख ही दुख
बीच में है नदी
त्रिवेणी
पति परम गुरु (दो खडो मे)
जन-गण-मन
दायरे के बाहर
आखिरी पन्ने पर देखिए
चलते-चलते

बन्धुवर
श्री गोविन्दप्रसाद केजरीवाल को

लेखकीय वक्तव्य

'जा इतिहास मे नही है' लिखते-लिखते मेरे मन मे यह बात उठी है कि आखिर यह उपन्यास मैं लिख क्यो रहा हूँ ! आज से 40 वर्ष पहले की बात जानकर भला हम लोगो को क्या लाभ होगा ?

लाभ सिर्फ इतना ही है कि हम लोग जान सकेंगे कि सौन्दर्य मात्र वर्तमान मे ही निहित नही रहता—अतीत मे भी रहता है। अर्थात सौन्दर्य-बोध अतीत, वर्तमान और भविष्यत्—सब के परे होता है।

जिस घटना का सूत्रपात हुआ था अगरेज़-शासन के अन्तिम दिनो मे, उसकी एक झलक प्रस्तुत करने की कोशिश की है मैंने इस उपन्यास मे।

मैंने एक ऐसे युग मे जन्म लिया था, जब ब्रिटिश-राज पूरी तरह भारत मे कायम हो चुका था। रेल के जिस डिब्बे मे अंगरेज़ बैठते, उसमे पर्याप्त जगह रहने पर भी हम भारतीयो को बैठने का अधिकार नही मिला था। कलकत्ता की चौरगी मे हम लोग सिर उठाकर रास्ते पर चल नही पाते थे। कुल मिलाकर यह समझिये कि हम सब उस समय भारतीय होते हुए भी भारतवर्ष के निम्न स्तर के नागरिक होकर ज़िन्दगी बसर कर रहे थे।

देश की जब ऐसी हालत थी, उस समय अगरेज़ो के अत्याचारो के कारण कुछ भारतीयो ने 1885 ई० मे एक समिति की स्थापना की।

उन्होने उसको नाम दिया—'इडियन नेशनल कॉंग्रेस।' उसका काम था अनुनय-विनय कर अगरेज़ो से कुछ-कुछ शक्ति, क्षमता प्राप्त करना और देश के शासन मे हम भारतीयो मे से कुछ को प्रतिनिधित्व का अधिकार दिलाना।

अगरेज़ो ने वह अधिकार तो दिया, परन्तु अत्याचार और कुशासन उसके बावजूद कम नही हुआ, वरन बढा ही।

महात्मा गाधी थे अहिंसा के पुजारी। लेकिन बहुतेरे लोगो की धारणा थी कि अहिंसा के ज़रिये कुछ खास काम नहीं होगा। इसीलिए 1905 ई० के वगभग आन्दोलन के बीच से आतकवाद (टेर्ररिज्म) की शुरुआत हुई। देश के बडे-बडे नेता अहिंसा का छद्म-बेश धारण करने के बावजूद भीतर-ही-भीतर छुपे रूप से धन आदि देकर आतकवादियो की सहायता करने लगे।

हम सब उसी वातावरण मे बडे हुए। देश-सेवा के लिए हम लोगो ने 'दरिद्र-बान्धव-भडार' की स्थापना की, और हम सब मन-प्राण से देश का काम करने लगे। इसमे भी अगरेज़ो की पुलिस को सन्देह हुआ। अलकेश और तारक जैसे बहुतेरे लडको पर उन दिनो पुलिस की कुदृष्टि पडी। घर से उन्हे भागना पडा। अगरेज़ो ने उस समय 'डिवाइड ऐंड रूल' (बाँटो और राज्य करो) की नीति का अनुसरण किया।

आखिरकार हिन्दू-मुसलिम दगो के बीच अंगरेजो ने देश के दो टुकडे कर दिये। एक टुकडा बना पाकिस्तान और एक टुकड़ा यह—भारत।

बचपन से ही मुझमे साहित्यिक बनने की साध थी। वक़्त-बे-वक्त का साहित्यिक नही —पूरे-का-पूरा साहित्यिक, हर दिन-रात का साहित्यिक। सो 1947 ई० मे जब स्वाधीनता आयी तब मैंने अपने देश के इतिहास के सम्बन्ध मे सोचना प्रारम्भ किया। उस 1690 ई० से लेकर, जब कि अगरेज पहले-पहल कलकत्ता की गगा के घाट पर उतरे थे, आज तक की अवधि को लेकर कई-एक उपन्यास लिखने की इच्छा हुई। स्वाधीनता के बाद हम सोचते थे—क्या इसी स्वाधीनता को पाने के लिए झुड-के-झुड इतने लडको ने जेल काटी थी, अगरेज़ो की गोलियाँ खाकर जान गँवायी थी? तब मैं एक-एक कर लिखने लगा—'बेगम मेरी विश्वास,' अर्थात

इस देश मे ईस्ट इडिया कम्पनी के आविर्भाव की कहानी। उसके बाद मैंने लिखा—'साहब बीवी गुलाम', अर्थात जब 1912 ई० मे इडिया की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित हुई थी—उसकी कहानी। उसके बाद 'खरीदी कौडियो के मोल'—जिसकी परिधि थी 1912 ई० से लेकर 15 अगस्त 1947 ई० तक। उसके बाद मैंने लिखा—'इकाई दहाई सैकडा', अर्थात स्वाधीनता के बाद कांग्रेस मे अवसरवादियो की घुसपैठ (infiltration) से शुरू कर 1962 ई० म भारत-भूखड पर हुए चीनी आक्रमण तक। उसके बाद मैने लिखे—'पति परम गुरु' के दो खड, अर्थात कांग्रेस के पतन का वर्णन और कम्युनिस्ट-पथियो के उत्थान की कहानी।

हजार-हजार पृष्ठो की पुस्तको का यह लेखन-कार्य जब शेष हुआ तब जाँच करने पर मैंने पाया कि अगरेजो के बीच भी जिस तरह सिमसन-जैसे नेक अगरेज थे, उसी तरह भारतवासियो मे तारक-जैसे विश्वासघाती भी थे। अन्यथा क्यो वह अगरेजो का भेदिया बनकर अलकेश-सरीखे सच्चे देश-सेवी की हत्या का कारण बना?

इतिहास के इस उत्थान-पतन के बीच से होते हुए ही राष्ट्र आगे बढता है। कभी वह पिछड जाता है तो कभी उपयुक्त नेता का नेतृत्व पाकर आगे बढ जाता है। अपने प्राय. सभी स्थूलकाय उपन्यासो मे मैंने इतिहास-भाग्य-विधाता की इसी अमोघ लीला को दिखाने की कोशिश की है। मैने दिखाया है कि पानी के ऊपर नाव रहने पर कभी विपदा नही होती; जो भी कुछ विपदा होती है वह नाव के ऊपर पानी चढ आने पर। ठीक उसी तरह देश-सेवा के लिए रुपये-पैसे की ज़रूरत होती है, परन्तु जब लोग रुपये-पैसे के लिए देश-सेवा करने लगते है, तभी भारी मुश्किले आ खडी होती है।

किंवा नारी!

यह उपन्यास एक छोटे निम्न-मध्यवित्त परिवार के दायरे मे सीमा-बद्ध है। उस परिवार की एक युवती नारी को लेकर तारक और अलकेश के बीच जब खीच-तान शुरू हो गयी, तभी उनकी अतुल देश-सेवा, उनका अलौकिक त्याग—सभी कुछ मिथ्या हो गये। वे आदर्शच्युत हुए। एक ही ध्येय के प्रति नितात समर्पण, अथक परिश्रम और एकनिष्ठ त्याग के बिना

कोई भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र अपने आदर्श तक नही पहुँच सकता। यही है मेरे उपन्यास 'जो इतिहास मे नही है' का मुख्य कथ्य ।

ज़िन्दगी-भर लिखते-लिखते आज मैं प्रौढता की सीमा पर आ पहुँचा हूँ । लेखन-कार्य के लिए मैंने स्थायी व अच्छी-खासी नौकरी पाकर भी छोड दी । साहित्य को ही मैने अपनी आजीविका का एकमात्र साधन बना लिया है । तीस वर्ष लगातार मै रात मे सोया नही । मैने सिर्फ यही चाहा है कि इतिहास से इस युग के मानव कुछ शिक्षा पाये । लेकिन एक जर्मन कवि कह गये है—

"It is from history we learn that we do not learn from history."

—इतिहास पढ़कर ही हम यह समझ पाते है कि हम लोग इतिहास से कोई भी शिक्षा ग्रहण नही करते ।

अपने लेखन के कारण दो बार मुझे राज-कोप का सामना करना पडा था । फिर भी मैंने अपनी कलम नही रोकी । रोकूँगा भी नही ।

हिन्दी-भाषी पाठक-पाठिकाओ ने मुझे जो स्नेह दिया है, वैसा मैंने कही नही पाया । मै उनका चिरकृतज्ञ हूँ ।

—विमल मित्र

यह एक ऐतिहासिक कहानी है ।

फिर भी आपको यह कहानी इतिहास मे नही मिलेगी । इतिहास में इसे नही लिखा गया । इतिहास मे यह कहानी कभी स्थान पायेगी भी नही ।

इसका एक कारण है । इतिहास हमारे और आपके जैसे साधारण मनुष्यो को लेकर माथा-पच्ची नही करता । इतिहास की माथा-पच्ची होती है सिर्फ राजा-बादशाह, या प्रेसिडेंट और प्राइम मिनिस्टर के लिए । इतिहास माथा-पच्ची करता है सेनापतियो के लिए, सौदागरो के लिए, पूंजीपतियो के लिए, रानियो और उपरानियो के लिए । इतिहासज्ञ के पास इतना समय नही होता है कि वह हमारे और आपके जैसे शान्तिप्रिय सामान्य-जनो के सम्बन्ध में भी कुछ सोचे और करे ।

इस कहानी के अलकेश, तारक, निखिल, कालीपद अथवा मिस्टर डगलस या मिस्टर सिमसन की ही बात लीजिये । इनमे से किसी का भी नाम भारत के इतिहास मे नही है । यही क्यो, हरि मुख्तार की बेटी पारुल बाला का भी कही कुछ नाम-पता नही है । तथापि भारतवर्ष की आजादी की लडाई मे उनकी भी अपनी एक भूमिका थी । वे भी अपने जीवन की कुछ परवाह न कर एक दिन आजादी की लडाई मे कूद पडे थे ।

इतिहास के पन्नो पर इनमे से किसी के भी नाम का जिक्र नही, यह सही है । फिर भी, इनमे से एक को छोडकर बाकी सभी जीवित है । इनके सुख-दुख की कहानी आज भी मिस्टर सिमसन के हृदय-पटल पर लिखी हुई है ।...और इसीलिए तो यह कहानी आज जानी भी जा सकी

है। जानी जा सकी है यह बात कि मनुष्य का जीवन कितना विचित्र होता है, मनुष्य का प्रेम कितना गम्भीर होता है, और कितना कलुष होता है उसका विश्वासघात!

लन्दन से भारतवर्ष आते हुए विमान के भीतर बैठे मिस्टर सिमसन को वे सारी बातें याद आ रही थी। सिर्फ कुछ घंटो पहले ही वह विमान मे बैठे थे। विमान मे ही उन्होने लंच लिया था। विमान मे ही उन्होने शाम की चाय पी थी और रात के आठ बजे डिनर समाप्त किया था।

उसके बाद पहुँचे भारत—यही कलकत्ता।

विमान जब दमदम एयरपोर्ट पर पहुँचा तब रात के नौ बज चुके थे। मिस्टर सिमसन विमान की सीढी से उतरकर चारो ओर देखने लगे।

यह वही कलकत्ता है!

कितने दिनो के बाद मिस्टर सिमसन पुनः कलकत्ता आ पहुँचे है। कलकत्ता—एक समय ब्रिटिश-साम्राज्य के मुकुट की मणि, 1911 ई० तक भारत की राजधानी! मिस्टर सिमसन की युवावस्था की अनेकानेक स्मृतियो से जुडा हुआ है यह नगर!

वाह, बहुत खूब!. .उस समय दिल्ली उतनी बडी नहीं थी और न बम्बई ही। पहले-पहल जब वह यहाँ नौकरी करने के लिए आये थे तब वह जहाज मे बैठकर सीधे आ पहुँचे थे। एक महीने का समय लगा था पहुँचने मे। किन्तु पुलिस की नौकरी ठहरी। वह काफी भयभीत थे। यहाँ की सिविल-सर्विस मे आये हुए कितने ही अगरेजो की हत्या हो चुकी थी। उनके भाग्य मे तब क्या लिखा था, कौन जाने! वे दिन काफी भयावह थे। लन्दन के ऑफिस मे ही उन्हे बतलाया जा चुका था कि बगाली बडे भयानक होते है—वे अगरेज-विरोधी है और वे उन्हे बिलकुल भी पसन्द नही करते। बगालियो के साथ अत्यन्त सावधानी से बाते की जाये और उनसे मिलने-जुलने मे भी सावधानी बरती जाये! उनकी जैसी खतरनाक जाति हिन्दुस्तान-भर मे और दूसरी है ही नही। वे बम, पिस्तौल और बन्दूक चलाने मे तनिक भी नही डरते। बगाल के पार्टीशन के समय उन्होने अनेक अगरेजो का खून किया। उनको सही सबक सिखाने के लिए ही तुम्हे भेजा जा रहा है। आशा है कि तुम ब्रिटिश-साम्राज्य की मर्यादा को अक्षुण्ण रखोगे।

मिस्टर सिमसन को काफी समय तक अपने सूटकेस के लिए बगेज के काउटर पर प्रतीक्षा करनी पडी। प्राय· आध घटे तक। आखिर अपना सामान लेकर वह एयरपोर्ट की बस मे बैठे। वाह, वेरी गुड ! कलकत्ता की सड़को से गुजरते हुए मिस्टर सिमसन ने मन-ही-मन कहा—वेरी-वेरी गुड ! उन्होने सपने मे भी यह नही सोचा था कि वह इतने आराम के साथ कलकत्ता आ पहुँचेंगे। इन कुछेक वर्षों मे ही कलकत्ता कितना बदल गया है। दुनिया भी तो कितनी बदल गयी है। यही क्यो, खुद उनका अपना इगलैड, अपना लन्दन भी कितना बदल गया है। उनकी अपनी उम्र भी बढी है। भला और कितने दिनो तक वह जीवित रहेगे ! लाइफ इज़ शॉर्ट —ज्यादा दिन जीना नही होगा ! मिस्टर सिमसन तो बहुत कुछ देख चुके है। उन्होने बहुत कुछ देखा है, बहुत कुछ भोगा है, बहुत कुछ जाना-समझा है और बहुत कुछ सीखा भी है। किन्तु अब सब-कुछ शेष हो जाने वाला है। अब बस लास्ट चैप्टर है—अन्तिम अध्याय। इस बार उन्हे इति करनी ही होगी—इस लम्बे-चौडे अध्याय की समाप्ति ! लगाना ही होगा इस बार उन्हें जीवन के सामने पूर्णविराम।

चौरगी का होटल ठीक पहले की तरह ही है। ठीक वैसा ही, जैसा वह अतीत मे था। उस समय, जब कि वह यहाँ नौकरी करते थे, यहाँ वह अनेक बार आया करते थे। यहाँ आकर उन्होने कितनी ही बार लच लिया है, बियर पी है और ह्विस्की भी। ब्युटिफुल था यह कलकत्ता। अगरेज़ो का कितना आदर था यहाँ पर ! यहीकलकत्ता उस समय ब्रिटिश-साम्राज्य का दूसरा महानगर था—सेकड सिटी ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर !

सचमुच जीवन कितना छोटा होता है ! और फिर देखते-ही-देखते जीवन शेष हो जाता है !

खैर, जीवन समाप्त होने का भी उन्हे किसी तरह का क्षोभ नही है। उन्होनेअपना कर्तव्य-पालन किया है, ड्यूटी निभायी है। नौकरीकी ड्यूटी नही, जीवन के प्रति भी तो प्रत्येक मनुष्य की एक ड्यूटी होती है। अपने वही कर्तव्य उन्होने पूरे किये है।...नौकरी शुरू करने के पाँच वर्ष बाद ही उन्होने नौकरी से इस्तीफा दे दिया था।

'युअर नेम, प्लीज़ ?'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'लिखिये, जॉन सिमसन।'

'कहाँ से आये है ? कहाँ तक जाना है ?'

'लडन टु कैलकटा—लन्दन से कलकत्ता। यहाँ से वापस लन्दन लौट जाना है।'

और भी जो कुछ लिखना था, लिखा गया। कमरा भी ठीक हुआ। मिस्टर सिमसन सूटकेस हाथ मे लेकर लिफ्ट की ओर बढे। वहाँ से अपने कमरे की ओर। एक वढिया कमरा उन्हे दिया गया है। सही कहना हो तो कमरा ही नही—सूट कहिये। बैठने के लिए सामने एक कमरा है और पीछे एक बेड-रूम है। मिस्टर सिमसन की उम्र काफी हो चुकी है। एवाउट सिक्सटी फाइव—लगभग पैंसठ साल। नये सिरे से कुछ जानने और सीखने की यह उम्र नही। अब तो सामने बस रिटायरमेंट है—अवकाश-प्राप्ति।

हठात वाहर से किसी ने कॉल-बेल बजायी।

मिस्टर सिमसन तब तक स्नान कर ड्रेसिंग-गाउन पहन चुके थे। उन्होने शीघ्र ही बन्द दरवाजे को खोल दिया।

होटल के एक बॉय ने कमरे मे प्रवेश किया।

उसने पूछा, 'हुजूर, कुछ लेगे? टी या कॉफी ?'

मिस्टर सिमसन बोले, 'ना, कुछ भी नही। यू मे गो—तुम जा सकते हो।'

सचमुच तब मिस्टर सिमसन को कुछ भी अच्छा नही लग रहा था। वहुत दूर से आये है वह! अभी उन्हे थोडे विश्राम की जरूरत है। उन्हे रेस्ट चाहिए—कम्प्लीट रेस्ट। पहले की तरह अब उनमे एनर्जी नही—शक्ति नही। वैसे एक समय इसी कलकत्ता मे वह रात-रात-भर बिना सोये घूमते रहे है। पुलिस की नौकरी मे ड्यूटी का कोई बंधा समय नही होता। कितनी ही बार उन्हे न तो खाना नसीब हुआ है और न ही रात मे सोना। और फिर सिर्फ कलकत्ता की ही तो बात नही—उस समय उन्हे बगाल के प्रत्येक ज़िले मे घूमना पड़ता था।

फिर कॉल-बेल बज उठी।

इस बार कमरे मे होटल के बॉय ने नही, बल्कि एक बगाली सज्जन ने प्रवेश किया।

'सर !'

मिस्टर सिमसन पहले-पहल पहचान नही पाये। वह विस्मय से मुँह बाये देखने लगे।

'आप कौन हैं ? हू आर यू ?'

आगन्तुक सज्जन ने कहा, "मैं तारक हूँ सर, तारक सेन।'

मिस्टर सिमसन तारक को देखकर अवाक हो गये। वही तारक ? उसका चेहरा ही इतना बदल चुका था कि पहले-पहल उसे पहचानने मे असुविधा का होना स्वाभाविक था। बोले, 'अरे, बैठो तारक !'

तारक एक कुरसी पर बैठ गया। कहने लगा, 'सर, मैने सोचा था कि एयरपोर्ट पर ही आपके साथ मुलाकात करूँगा। किन्तु जब मैं वहाँ पहुँचा, तब तक आप वहाँ से चल चुके थे। मुझे वहाँ पहुँचने मे थोड़ी देर हो गयी थी।'

उसके वाद कुछ रुककर तारक ने पुन कहा, 'सर, आपको मेरी चिट्ठी मिली थी ?'

मिसटर सिमसन ने उसकी बात का जवाब न देते हुए पूछा, 'क्या तुम्हे मेरी चिट्ठी मिली थी ?,

'हाँ, सर ! आपकी चिट्ठी मुझे मिली थी, तभी तो मैं यह जान सका था कि आप आज आने वाले है।'

मिस्टर सिमसन बोले, 'और सुनाओ, क्या खबर है तुम्हारी ?'

तारक सेन ने उत्तर दिया, 'सर, खबर अच्छी नही है। कुछ दिनो तक सब-कुछ ठीक-ठाक था—मेरे काम-धन्धे मे रुपयो की आमदनी अच्छी ही हो रही थी। किन्तु फिर सब गोलमाल हो गया।'

'क्या काम करते थे तुम ?'

'सभी चीजो का। सर, मै आर्डर-सप्लाई का धन्धा किया करता था। जिन-जिन चीजो का आर्डर मिलता, उन-उन चीजो की सप्लाई कर डालता। शुरू मे ही धन्धा अच्छी तरह चल पडा था। दिन-भर काम करने पर भी काम पूरा नही हो पाता था। बैंक मे काफी रुपये जमा हो गये

थे। सर, मैं सोचा करता था कि अब मेरे दिन फिरे है।'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'तो आखिर हठात वह बिज़नेस खराव कैसे हो गया ?'

तारक सेन ने ज़वाव दिया, 'मैं ठहरा अकेला आदमी, हर तरफ देख नही पाता था। और उसके बाद चारो ओर नयी-नयी कम्पनियाँ खडी हो गयी। उनके पास अधिक पूँजी थी और मैं उनके मुकाबले प्रतियोगिता मे ठहर नही सका। इसलिए तो मैंने आपको पत्र लिखा था कि शायद आप मेरे लिए कुछ कर पाये !'

'किन्तु तुम्ही बोलो तारक, मैं क्या कर सकूँगा ? मैं तो एक फॉरेनर हूँ —विदेशी। अब तुम्हारी नयी इडियन गवर्नमेट बनी है—वे सब हम लोगों की वात क्यो सुनेगे ? हम अब है ही कौन ? और फिर मेरी ऐसी क्षमता ही क्या है भला, बोलो तो ! मेरे अपने देश के लोग मुझे गलत समझते रहे और अब तुम सब भी मुझे गलत समझोगे ही। और फिर यहाँ मेरी जान-पहचान वाले भी भला कौन रह गये है !'

तारक कहने लगा, 'सच कहा जाये तो आपके कारण ही आज मैं बचा हुआ हूँ, सर ! मेरे अभाव के दिनो मे अगर आप मेरी सहायता नही करते तो उस समय दो वक्त रोटियाँ जुटाना भी मेरे लिए मुश्किल होता। इस समय अगर आप मेरा खयाल नही करेगे तो और कौन करेगा ? मेरा है ही कौन, आप ही बताइये !'

मिस्टर सिमसन बोले, 'क्यो ? अब तो अगरेज़ नही रहे। अब तो तुम्हारे ही जात-भाई हैं। तो क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए तुम्हारे जात-भाइयो से भी अधिक अपना हूँ ?'

तारक वोला, 'हाँ सर, सिर्फ आप ही मेरे अपने है। आप तो देवता है...।'

'क्या फालतू वातें कर रहे हो, तारक ! ऐसी वाते मत किया करो। लोग तुम्हे पागल समझेंगे !'

तारक ने कहा, 'आपको इस समय मै परेशान नही करूँगा, सर ! इस समय आप आराम कीजिये। मैं कल सुवह आऊँगा। इस समय मैं चलता हूँ ..।'

यह कहकर तारक उठ खडा हुआ।

उसके बाद दरवाज़े की तरफ बढकर वह फिर रुका। फिर पीछे की ओर मुडकर उसने पूछा, 'सर, आप यहाँ कितने दिन तक रहेगे ?'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'देखूं, कितने दिन तक रुक पाता हूँ ? कलकत्ता मेरी पुरानी जगह है; कुछ दिन घूम-फिरकर इसे देखूँगा। कलकत्ता के बाहर भी जा सकता हूँ। चन्द्रनगर भी जा सकता हूँ। चन्द्रनगर—वही फ्रेंच टेरिटॅरी—फ्रासीसियो का उपनिवेश। किन्तु वह भी अब तो भारत सरकार के कंट्रोल मे है। चन्द्रनगर का गगा का किनारा उस समय मुझे बडा मनोरम लगता था। वह स्थान अब भी वैसा ही है ?'

'हाँ सर, ठीक वैसा ही है।'

मिस्टर सिमसन को अचानक मानो कोई बात याद आ गयी। उन्होने अपने सूटकेस से एक पैकेट बाहर निकाला। उसे तारक की ओर बढाते हुए उन्होने कहा, 'तुमने तो लिखा था कि तुम विवाह कर चुके हो। लो, ये खिलौने मै तुम्हारे बच्चो के लिए सीधे लन्दन से लाया हूँ।'

तारक बोला, 'सर, हमारे बाल-बच्चे तो हुए नही।'

'यह क्या ? विवाह हुए इतने दिन हो गये, फिर भी कोई बाल-बच्चे नही हुए ? खैर, मुझे तो यह मालूम नही था। लेकिन तुम्हारी वाइफ ?'

तारक का मुँह मानो कुछ गम्भीर हो गया। उसने कहा, 'वह आपके आशीर्वाद से अच्छी ही है, सर !'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'ठीक है, तारक ! तो अब तुम चलो; तुम्हे काफी देर हो गयी है। कल फिर भेट होगी। अगर मैं पहले जानता तो तुम्हारी वाइफ के लिए भी कुछ उपहार ले आता। खैर जाने दो; इस समय तुम जाओ, काफी रात हो चुकी है।'

तारक बोला, 'अच्छा, गुड नाइट, सर !'

यह कहकर तारक ने दरवाजा खोला और वह बाहर निकल गया।

मिस्टर सिमसन ने फिर दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और बिछौने पर लेट गये। कमरे मे पूर्ण अन्धकार था। उन्हे तारक की याद है—यही तारक सेन एक दिन उनके पास ही नौकरी की तलाश मे आया था। उस समय तारक की उम्र ही कितनी रही होगी ! दुबला-पतला तारक। शायद

भरपेट खाना भी उसे नसीव नही होता होगा। भरपेट खाना नही मिलने पर जैसा चेहरा हो जाता है, ठीक वैसा ही चेहरा था तारक का। इस तरह के दुवले-पतले लोगो के द्वारा ही पुलिस के काम सुविधापूर्वक सम्पन्न होते है। जो लोग कुछ मोटे-सोटे होते हैं—फूले और गोल चेहरो वाले—वे किसी काम के नही होते। वे कुछ भीरु प्रकृति के होते है। उन्हे पसन्द होता है—खाना और सोना। वे जीवन मे कोई जोखिम उठाना ही नही चाहते।

डगलस साहव उस समय कलकत्ता के पुलिस-कमिश्नर थे। मिस्टर सिमसन को बुलाकर डगलस साहब ने एक दिन पूछा था, 'सिमसन, यह क्या? तुम तो कोई केस नही दे रहे हो?'

मिस्टर सिमसन ने कहा था, 'मैं कोशिश कर रहा हूँ; किन्तु अभी तक एक भी केस नही मिला।'

मिस्टर डगलस ने मेज पीटते हुए कहा था, 'व्हट डू यू मीन? तुम क्या यह समझते हो कि सारे इडियन एकाएक भले आदमी बन गये है?'

सिमसन ने कहा, 'सर, वैसा तो मैने कहा नही। मै कहना चाहता हूँ कि मैं केस की तलाश मे हूँ।'

मिस्टर डगलस बोले, 'तुम जानते हो कि तुम जो केस दोगे, उसी पर तुम्हारी तरक्की निर्भर है। तुम्हे इडिया आये छह महीने बीत गये और हाल यह है कि अभी तक तुम एक भी मज़बूत केस नही दे सके हो।'

सिमसन ने जवाव दिया, 'मैंने तो कहा न, सर, कि मै कोशिश कर रहा हूँ।'

मिस्टर डगलस वोले, 'दिल्ली से होम-सेक्रेटरी ने तुम्हारे सम्बन्ध मे पूछा है। अव मैं तुम्हारे वारे मे क्या रिपोर्ट लिखूँ? तुम्ही वता दो।'

सिमसन ने कहा, 'मैं इस सम्बन्ध मे क्या कह सकता हूँ?'

मिस्टर डगलस वोले, 'तव मैं तुम्हे मुफस्सल मे ट्रासफर कर देता हूँ। जव यहाँ तुम केस दे ही नही सकते तो फिर एक वार मुफस्सल जाकर भी कोशिश कर लो।'

उन दिनो गोरी चमडी वाले आदमी को देखते ही वगाली उस पर सन्देह किया करते थे। सारे अँगरेज ही थे वगालियो के एनिमी—दुश्मन।

जो अँगरेज़ अफसर कलकत्ता मे बढिया काम नही दिखा पाते उन्हे मुफस्सल मे भेज दिया जाता था। साथ ही उनके वेतन मे कुछ वृद्धि की जाती। पर मुफस्सल जाने पर वृद्धि होती सिर्फ वेतन मे; ऐश-आराम मे नही। कहाँ वह इंगलैंड—सोने का देश—और कहाँ इडिया का यह एक छोटा-सा ज़िला मेदिनीपुर, अथवा नारायणगज, फरीदपुर, अथवा नोआखाली। गाँव-गज के छोटे-छोटे गन्दे निवासी ही थे सबसे ज्यादा डेजरस—सबसे ज्यादा खतरनाक। वे सब थे एक-एक काला नाग। काले नाग से भी अधिक ज़हरीले थे वे! कब पिस्तौल दाग दे, पता नही। उस ज़माने मे एक के बाद एक अँगरेज़ अफसर मुफस्सल भेजा गया और गोली खाकर ढेर हो गया। मेदिनीपुर ज़िले मे लगातार तीन-तीन मजिस्ट्रेटो का खून हो चुका था।

मिस्टर सिमसन बोले, 'आप मुझे मुफस्सल मे ट्रासफर कर दीजिये। आप मुझे जहाँ जाने का आर्डर देंगे, मै वही जाने के लिए राज़ी हूँ।'

सिमसन का जवाब सुनकर मिस्टर डगलस अवाक रह गये। उन्होने पूछा, 'तुम्हे डर नही लगता ? क्या तुम्हे यह मालूम नही कि ड्यूटी करते हुए हमारे डिपार्टमेट के कितने लोगो का वहाँ खून हो चुका है ?'

सिमसन ने कहा, 'मुझे मालूम है।'

'तब! तब अगर तुम्हारा भी खून हो जाये तो ?'

'यदि कोई मेरा खून कर भी डाले तो क्या है ? सोचूंगा कि अपने राजा की ड्यूटी मे मर रहा हूँ। और फिर मेरे मरने पर कोई नुकसान भी नही है, मिस्टर डगलस! मेरे मरने के बाद रोने वाला और कोई नही है।'

'क्यो, तुम्हारी वाइफ!'

'वाइफ! मेरी पत्नी की बात कह रहे हैं ? यह सही है कि मैने विवाह किया था, किन्तु अब उसे तलाक़ दे चुका हूँ। हमारे विवाह का विच्छेद हो चुका है।'

'चिल्ड्रन ? बाल-बच्चे ?'

'हमारी कोई सन्तान नही।'

'ओह, ऐसी बात है!'

मिस्टर डगलस उस दिन सिमसन की बाते सुनकर हैरान रह गये थे। मिस्टर डगलस कितनी ही देर तक सिमसन की ओर एकटक देखते रहे थे। सोच रहे थे—जिसकी मुखाकृति इतनी सुन्दर है, जिसका स्वभाव इतना निर्भीक है, उसका भी अपनी पत्नी से तलाक हो सकता है!

'तो फिर तुम्हारे परिवार मे और कौन है ?'

'नो वडी—कोई नही। मैं अकेला हूँ। आय एम एलोन इन दिस वर्ल्ड—इस दुनिया मे जिसे मैं अपना कह सकू, ऐसा कोई भी नही। बचपन मे ही मेरे पिता की मृत्यु हो गयी और उसके बाद जब मेरी उम्र बारह वर्ष की थी, तब मेरी माँ ने दूसरी शादी कर ली। उसके बाद से अब तक मैंने होस्टलो मे जीवन बिताया है। उस समय से ही मैं अकेला हूँ। उसके बाद अखबार मे एक विज्ञापन देखकर मैंने भी दरख्वास्त लिखकर भेज दी थी। और उसी के कारण मैं यहाँ हूँ, यहाँ, कलकत्ता मे।'

मिस्टर डगलस ने कहा, 'सो व्हट ? तुम इस तरह दिल छोटा क्यों करते हो ? यहाँ तुम्हे बहुत-सी अँगरेज़ लडकियाँ मिलेगी। तुम यहाँ के किसी क्लब के मेम्बर बन जाओ। कलकत्ता मे बहुत-से रिस्पेक्टेबल क्लब्स है। वहाँ यदि तुम मेम्बर बन जाओगे तो तुम बहुत-सी गर्ल-फ्रेड्स के सम्पर्क मे आ सकोगे। उनमे से किसी एक को चुनकर तुम विवाह कर डालो। तुम नौजवान हो—यग बॉय। तुम्हे अभी जीवन मे बहुत कुछ देखना है। अभी से अपने-आप मे इतना टूट जाना क्या अच्छी बात है ?'

बिछौने पर सोये हुए सिमसन ने करवट बदली। हाय रे वे दिन ! उन सब दिनो की घटनाएँ उनकी आँखो के सामने फिर से घटने लगी।

हठात ऐसा प्रतीत हुआ मानो, किसी ने कमरे मे प्रवेश किया हो।

मिस्टर सिमसन चकित रह गये। बोले, 'कौन ? कौन आया है ?'

उन्हे स्पष्ट याद आया कि सोने से पहले उन्होने दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लिया था। तो आखिर कोई उस कमरे मे घुसा भी तो कैसे ? तो क्या कमरे के भीतर आने के लिए सलग्न बाथरूम से होते हुए और कोई रास्ता भी है ? अथवा क्या वह भीतर से दरवाज़ा बन्द करना भूल गये थे ?

'कौन ? कौन हो तुम ? हू आर यू ?'

कमरे मे अँधेरा था। हो सकता है कि उनके मन का भ्रम हो। शीघ्र ही विछौना छोडकर उठ खडे हुए मिस्टर सिमसन। आगन्तुक व्यक्ति उस समय भी ठीक उनके सामने उनकी ओर एकटक देखता हुआ स्थिर खडा था।

मिस्टर सिमसन ने अपना ड्रेसिंग-गाउन पहन लिया। उसके बाद उस व्यक्ति के सामने जाकर उन्होने उसे चैलेज किया।

कहने लगे, 'बोलो, कौन हो तुम ? बोलते क्यो नही ? हू आर यू ?'

तब तक उस व्यक्ति ने अपनी चुप्पी तोड दी।

वह कहने लगा, 'सर, कृपा कर आप मुझे एक नौकरी दीजिये।'

मिस्टर सिमसन आश्चर्य से भर गये। बोले, 'नौकरी ? तो नौकरी पाने के लिए तुम इतनी रात मेरे कमरे मे आये हो ? भला क्या नौकरी देना मेरे वस की बात है ?'

'हाँ सर, आप पुलिस के इतने बडे अफसर है ! यदि आप चाहे तो मुझे एक नौकरी जरूर दे सकते है। और फिर अगर आप मुझे नौकरी नही देंगे तो और कौन देगा ? मेरा अपना और है ही कौन ?'

'तुम्हारा कोई नही है ?'

'नही सर, विश्वास कीजिये। मेरा अपना ऐसा कोई नही है जो मुझे नौकरी दे सके। घर पर मेरे बडे भाई साहब है, किन्तु विवाह करने के बाद वह अपनी पत्नी को लेकर अलग हो गये है। और मेरे जिम्मे आयी है मेरी विधवा माँ। कोई-सी भी नौकरी यदि नही मिली तो हम दोनो माँ-बेटो को निराहार रहना पडेगा।'

मिस्टर सिमसन को इस बार गुस्सा आ गया। वह बोले, 'किन्तु उसके लिए मैं क्या कर सकता हूँ ? मैं तो काफी दिनो पहले ही रिटायर हो चुका हूँ। रिटायर हो जाने के बाद इडिया छोडकर चला गया हूँ। ब्रिटिश सरकार तो 15 अगस्त, 1947 को इडिया छोडकर जा चुकी है। तुम्हे क्या यह सब-कुछ भी मालूम नही ? अब तो तुम्हारा देश इडिपेडेंट है—स्वाधीन। उसके बाद भी तुम क्यो मेरे पास आये हो तुम पागल तो नही हो ! आर यू मैड ?'

'नो सर, मै पागल नही हूँ। मुझे सब-कुछ मालूम है। मैं सब-कुछ जान-बूझकर ही आपके पास आया हूँ। आप यदि चाहे तो सब-कुछ कर सकते है।'

'अच्छा बतलाओ, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ ?'

उस व्यक्ति ने कहा, 'मैंने कहा न कि आप सब-कुछ कर सकते है। आप यदि चाहे तो भारत सरकार की कोई भी एक छोटी नौकरी मुझे दे सकते है।'

'किन्तु तुम यह समझने की कोशिश क्यो नही करते कि हम सब इडिया छोडकर जा चुके है।'

उस व्यक्ति ने कहा, 'नही सर, आप सब अभी गये कहाँ है ?'

'हम सब गये नही—इसका मतलब ?'

उस व्यक्ति ने कहा, 'आप लोगो के जाने के बाद भी, सर, यहाँ आप लोगो का बहुत दबदबा है। आप किसी को बोल-भर दे। फिर मेरे लिए एक छोटी-मोटी नौकरी जुट ही जायेगी।'

मिस्टर सिमसन न जाने क्या सोचने लगे। उसके बाद उन्होने पूछा, 'अच्छा, बोलो तो—तुम्हारी क्वालिफिकेशन क्या है ?'

'सर, मैंने वैसे कोई परीक्षा पास नही की है। स्कूल मे मैट्रिक तक पढा हूँ। इसीलिए मै पुलिस-लाइन की नौकरी चाहता हूँ। मैंने सुना है कि आप लोगो की पुलिस-लाइन मे तो पढाई-लिखाई की ऐसी कोई खास ज़रूरत नही होती।'

'तुम क्या इनफॉर्मर की नौकरी कर सकोगे ?'

'इनफॉर्मर ? इनफॉर्मर माने ?'

'इनफॉर्मर माने स्पाई। भेदिया। बगाल मे जो-जो बम-पिस्तौल लेकर अँगरेजो को मार रहे है, रेलगाडियाँ लूट रहे है और जो सरकारी खजानो पर हमले कर रहे है, क्या तुम हमे उन सबकी खबर दे सकते हो ?'

हठात जैसे उस व्यक्ति के चेहरे पर चमक आ गयी। वह कहने लगा, 'जरूर दे सकूँगा, सर ! यह काम मैं बडी कुशलता के साथ कर सकूँगा। सर, मुझे वही नौकरी दे दीजिये।'

'वेतन किन्तु अधिक नही मिलेगा। महीने मे सिर्फ दस रुपये मिलेंगे—हाथ-खर्च के तौर पर। और यदि कोई केस दोगे तो प्रत्येक केस के लिए अलग से पचास रुपये तुम्हे मिलेंगे।'

'ठीक है, सर! मैं उसी मे राजी हूँ।'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'बोलो, तुम्हारे घर का क्या ठिकाना है? मैं लिख लेता हूँ।'

उस व्यक्ति ने अपने घर का पता बतलाया।

'और अब अपना नाम भी बतलाओ।'

'तारक सेन!'

नाम सुनते ही चौक पडे मिस्टर सिमसन। चीत्कार कर उठे वह, 'तारक, तारक, तुम? क्या तुम तारक हो!'

साहब का चीत्कार सुनकर मानो तारक बहुत डर गया। डरकर वह पल-भर मे ही हवा मे अदृश्य हो गया। और मिस्टर सिमसन आँखे फाड-फाडकर चारो ओर देखने लगे। कहाँ गया तारक? और कहाँ है वह स्वय? वह तो अपने बिछौने पर सोये हुए है। कोई कही नही! कमरे मे अधकार छाया हुआ है। तब! तब आखिर उन्हे ऐसा स्वप्न क्यों दीखा?

वह पुन करवट बदलकर सोने की कोशिश करने लगे।

मिस्टर सिमसन को इस समय अपने बिछौने पर ही सोये रहने दे। इस बीच चलिये, हम सब और भी पिछले अतीत के दिनो मे लौट चलें। जिस तरह वृक्ष अपनी जडो की सहायता से मिट्टी से प्राण-शक्ति पाता है, ठीक उसी तरह समाज का मनुष्य भी अपने बीते हुए इतिहास की भूमि से प्राण-शक्ति ग्रहण करता है। अतीत की भित्ति पर ही खडा होकर मानव-समाज अपनी शाखा-प्रशाखा फैलाकर जीवनी शक्ति को सँजोता है। इसीलिए वर्तमान को भली-भाँति जानने के लिए अतीत को जानना जरूरी है।

अतीत को स्वीकार करने का अर्थ है—ऐतिह्य को स्वीकृति प्रदान करना। जिसका अतीत है, उसी का ऐतिह्य होता है। यह जो बीसवी शताब्दी के मध्य मे पश्चिम के एक देश से मिस्टर जॉन सिमसन नाम का एक पश्चिमी व्यक्ति भारत-भूखड मे आकर उपस्थित हुआ है—उसका भी एक अतीत है।

इसीलिए यह कहानी शुरू करने के लिए हम लोगो को चालीस-पचास साल पीछे अतीत मे लौट जाना पडेगा। चालीस-पचास साल पहले का वह कलकत्ता सम्भवत आज के अनेक लोगो का देखा हुआ है। आज कलकत्ता के होटल मे आकर जो मिस्टर सिमसन रुके हुए है, उन्होने भी वह अतीत देखा है।

सचमुच मिस्टर सिमसन को वे बीते दिन याद हैं। उस समय दोपहर के एक बजे कलकत्ता के निवासियो को एक धमाका सुनायी पडता था। तोप छूटने की-सी आवाज़! वह आवाज़ कलकत्ता के किले से आया करती थी।

लोग कहते, 'यह लो, तोप छूटी।'

तोप की आवाज़! वह आवाज़ सुनते ही लोग समझ जाते कि दोपहर का एक बजा है। जिनके पास घडी होती, वे तोप की आवाज़ के साथ-साथ ही अपनी घडी मिला लेते। जिनके पास घडी नही होती, वे उस आवाज़ के सहारे अपने दैनन्दिन कार्यो को नियमित रखते।

उस समय घडी थी ही भला कितने लोगो के पास! दीवार-घडी तो फिर भी थी। लेकिन हाथ-घडी शायद ही किन्ही दो-चार सौभाग्यशाली व्यक्तियो की कलाई पर होती थी। उन दिनो आज की तरह विवाह के समय दूल्हे को दहेज मे घडी देने का रिवाज़ नही था। बडे लोग दहेज मे अन्यान्य वस्तुओ के साथ घडी एव घडी की चेन की मॉग किया करते थे।

उस दिन जब यदु भट्टाचार्य लेन होकर अलकेश हाथ मे एक भरा हुआ झोला लिये पैदल ही बढा जा रहा था, हठात किले से तोप छूटने की वही आवाज आयी। अलकेश के चलने की गति बढ गयी। वह शीघ्र ही एक मकान के सामने जाकर सदर दरवाज़े पर दस्तक देने लगा।

वह बाहर से ही पुकारने लगा, 'मासी माँ, ओ मासी माँ..!'

घर के भीतर उस समय मासी माँ एक तख्तपोश पर चटाई बिछाकर

थोडी देर लेटने की कोशिश कर रही थी। उनकी आँखो की ज्योति धीमी पड़ जाने पर भी पता नही क्यो, उनके कान बडे तेज थे। ऐसा लगता है कि जो आँखो से देख नही पाते, ईश्वर उनकी दूसरी इन्द्रियो की क्षमता मे वृद्धि कर क्षति-पूर्ति करता है। तोप की आवाज़ उस दिन उन्होने भी सुनी थी। वह समझ गयी थी कि दोपहर का एक बज चुका है। ससार जिसे अस्वीकृत कर देता है, मै समझता हूँ कि ससार के प्रति उसी का आकर्षण और अधिक बढ जाता है। इसीलिए तो उस अँधेरे कमरे मे लेटे-लेटे ही सम्भवत वह पहले की तरह ही सुचारु रूप से परिवार का परिचालन करना चाह रही है। करुणामयी देवी के लिए घडी मे एक बजने का अर्थ ही है—समय कट जाना। उसका अर्थ यही हुआ कि और दो घटो के बाद ही नल मे पानी आयेगा। तब नल से पानी गिरने की आवाज़ उनके कानो मे आने लगेगी। तब वह पुकार उठेगी, 'पारू, ओ पारू !'

बार-बार पुकारने पर भी पारुल का कोई उत्तर नही पायेगी करुणामयी। तब खुद ही तख्तपोश छोडकर उठ पडने की कोशिश करेगी। उनके बदन मे अब ताकत नही रही। तख्तपोश से उठने मे उन्हे तकलीफ होगी। वात का दर्द कब बढ जाये और कम हो जाये, इसका क्या ठिकाना !

एक बार उसी तरह पारुल को बार-बार पुकारने पर भी उत्तर न पाने पर वह खुद तख्तपोश से उठने जा रही थी। किन्तु उठते-उठते हठात माथे मे चक्कर आ जाने पर वह सीमेट के सख्त फर्श पर गिर पडी थी और उसके बाद तीन महीने तक उन्हे उसी तख्तपोश पर पडे रहना पडा।

पारुल ने उस बार उनके साथ काफी बक-झक की थी।

कहने लगी थी, 'जरा मै भी सुनूँ तो माँ, भला तुम्हे तख्तपोश से उठने की ज़रूरत क्या आ पडी थी ? किसने तुम्हे उठने के लिए कहा था ? क्या मैं तुमसे साफ-साफ नही कह चुकी हूँ कि तुम्हे घर-गृहस्थी के कामो मे सिर खपाने की जरूरत नही। उसके बाद तुम तख्तपोश से उठी ही क्यो, ज़रा मुझे कहो तो ?'

करुणामयी उस समय दर्द से छटपटा रही थी।

उन्होने कहा था, 'अरी, क्या मै कोई अपनी मर्ज़ी से उठने गयी थी ! अरी बिटिया, किसी भी तरह की बरबादी मुझसे बरदाश्त नही होती। नल

का पानी बेकार बहा जा रहा था। इसीलिए सोचा कि नल चौबच्चे मे लगा दूँ।'

पारुल ने पूछा था, 'तो नल के पानी का मोल अधिक है, या तुम्हारे जीवन का? नल का पानी यदि नष्ट हो रहा हो तो क्या तुम अपना पैर तुड़ाकर बैठ जाओगी?'

करुणामयी ने कहा था, 'तुम मुझे डाँट रही हो! ठीक है, डाँट लो। जी भरकर डाँट लो। शायद भगवान ने मेरे भाग्य मे यही सज़ा लिखी थी। अरी! बजाय मेरे पैर के टूटने के मेरा पूरा सिर ही फट गया होता तो अच्छा होता। तब फिर मै यह सब देखने-सुनने के लिए ज़िन्दा तो नही रहती।'

तुरन्त ही पारुल अपनी माँ के पैर मे पीसी हुई हल्दी का गर्म लेप लगाने के लिए चली आयी थी।

करुणामयी ने पूछा था, 'यह क्या है?'

पारुल ने कहा था, 'हल्दी का गर्म लेप।'

पारुल की बात सुनते ही करुणामयी क्रोधित हो उठी। टूटे हुए पैर को हटाते हुए बोली, 'हल्दी का लेप लगाने की कोई ज़रूरत नही। किसी भी हालत मे नही। मेरा पैर ठीक हो जाये, इसकी कोई दरकार नही। मै मर जाऊँ, इसी मे भलाई है। हाय रे भगवान, तू मुझे उठाता क्यो नही? हाय रे...!'

पारुल ने जवाब दिया था, 'लेकिन तुम्हे मैं इतनी आसानी से तो मरने दूँगी नही, माँ! तुम मुझे जो कुछ भी कहो; तुमने यही सोचा है न कि तुम मुझे छोड़कर चली जाओगी! ऐसा मै कभी भी होने नही दूँगी।'

करुणामयी ने कहा था, 'सो तो मैं जानती हूँ। जिस तरह तुम खुद जलोगी, उसी तरह मुझे भी जलाओगी।'

यह करुणामयी जो इतनी तेज़-मिज़ाज हैं, उनका आक्रोश सिर्फ़ अपनी बेटी तक ही है। उनका जो भी अभिमान और अभियोग है, उस बेटी तक ही है। पारुल ही थी उनके जीवन का सबसे बड़ा भय और सबसे बड़ा भरोसा भी। कलकत्ता के एक मध्यवित्त मुहल्ले की एकाकी विधवा निवासिनी होने के नाते वह अपनी पुत्री को जितना प्यार करती, उतना ही

उन्हे उसके प्रति डर भी होता। सोचती कि वह अब और कितने दिन की मेहमान है ! आखिर वह तो लोक मे अक्षय आयु लेकर नही आयी है ! प्रायः प्रत्येक माँ की यही कामना होती है कि वह अपनी पुत्री को पीछे छोड़कर यथासमय ससार से विदा ले। लेकिन किस प्रकार और किस अवस्था मे वह पारुल को छोड जायेंगी, यही थी उनकी समस्या !

मुहल्ले के और सारे मकानो के सामने यदु भट्टाचार्य लेन के इस मकान की स्थिति एक छन्दपतन के समान ही थी। कब इस मकान के किसी एक मालिक ने अपना पैसा और खून देकर इसे एक सुखमय घरौंदे का रूप देना चाहा था, यह शायद कलकत्ता कार्पोरेशन के किसी पुराने खाते मे लिखा होगा। किन्तु एक हाथ से दूसरे हाथ मे हस्तान्तरित होने के निष्ठुर क्रम मे अव उस मकान पर विधवा करुणामयी और उनकी बेटी पारुलबाला का ही मालिकाना हक है। वे दोनो ही अब इस सम्पत्ति की सोल ओनर है—एकमात्र मालिक है।

लेकिन सिर्फ एक टूटे-फूटे मकान का मालिक होने पर ही तो पेट नही भर जाता। पेट भरने के लिए कोयला, उपले, चावल, दाल, नमक तथा और भी बहुत-कुछ चाहिए। उन चीजो को प्राप्त करने के लिए पैसे देने पडते है। वे पैसे आये कहाँ से ?

इसीलिए करुणामयी के दिमाग मे हर समय पैसो की ही चिन्ता बनी रहती थी।

बाहर से फिर किसी ने पुकारा, 'मासी माँ, ओ मासी माँ !'

अब तक वह आवाज़ मासी माँ के कानो तक पहुँच चुकी थी। वह तख़्त-पोश पर लेटी-लेटी ही अपनी बेटी को पुकारने लगी, 'अरी पारू, पारू रे ! अरी, तारक आया है। दरवाज़ा खोल दे।'

किसी भी तरफ से उत्तर न मिलने पर करुणामयी ख़ुद ही उठी। लँगडाती-लँगडाती वह कमरे से बाहर चबूतरे पर आयी। इस चबूतरे से ऑगन मे आने के लिए तीन सीढियाँ पार करनी होती। उसके बाद ही था एक सँकरा-सा आँगन। ऑगन मे चलते-चलते ही वह पूछने लगी, 'कौन है, बाबा ? क्या तारक, तुम हो ? ज़रा-सा ठहरो, बस अभी दरवाजा खोलती हूँ। लँगडे पर से चला भी तो नही जाता...।'

किन्तु दरवाज़ा खोलते ही तारक नही, अलकेश दिखायी पडा।

करुणामयी कहने लगी, 'ओ माँ, तुम अलकेश ? मैंने सोचा था कि शायद तारक आया है ! तुम ढाका से कब लौटे, बेटा ?'

अलकेश बोला, 'आज सुबह घर आकर ही मैंने यहाँ आने की बात सोची थी। लेकिन मुझे एक बार फिर बाज़ार जाना पडा।'

करुणामयी ने अलकेश के हाथ की ओर लक्ष्य करके कहा, 'अरे, यह तुम्हारे हाथ मे क्या है ?'

'सेर-भर आलू और कुछ बैंगन लाया हूँ। घर के लिए तो बाज़ार जाना पडा ही था। इसीलिए मैंने सोचा कि आप लोगो के लिए भी कुछ ले चलूँ। मैं यहाँ नही था, इसीलिए मैंने सोचा था कि शायद कई दिनो से आपके घर मे बाज़ार से सौदा कौन लाया होगा !'

करुणामयी बोली, 'बेटा, तुमने इतनी तकलीफ क्यो की ? तुम्हारे नही रहने पर भला क्या हम लोग निराहार रहे हैं ?'

उसके बाद उन्होने फिर कहा, 'जाओ, उस कमरे मे पारू है। उसे ये चीज़े दे आओ।'

फिर वह ख़ुद ही पुकारने लगी, 'ओ रे, अरी पारू, कहाँ मर गयी ? देख तो, अलकेश बाज़ार से क्या लाया है ! उन सब चीज़ो को तरकारी की टोकरी मे रख दो। मुँहजली कहाँ गयी है ?'

अलकेश बोला, 'आप जाकर सोइये, मासी माँ ! मैं जाकर देखता हूँ कि पारू क्या कर रही है !'

दो कमरो के मकान के एक छोर पर एक कमरा है और दूसरे छोर पर और एक कमरा। बीच मे एक ढँका हुआ बरामदा-सा है।

पारुल उस समय अपने और माँ के कपड़े तह करके रख रही थी।

अलकेश ने वहाँ जाकर पारुल को देखा और कहा, 'यह रही, मुँहजली तो यहाँ बैठी है। उधर मासी माँ पुकार-पुकारकर गला फाड रही है और इधर बिटिया रानी को सुनायी ही नही पडता है !'

पारुल ने हाथ का काम रोक दिया। वह अलकेश के हाथ से बाज़ार का झोला लेकर उसे यथास्थान रखने के लिए जाने लगी।

किन्तु अलकेश उसके पहले ही उसकी राह रोककर खड़ा हो गया।

कहने लगा, 'बडी आयी हो चली जाने वाली !'

पारुल ने इस बार अलकेश के मुख की ओर नज़र डालकर देखा।

वोली, 'चली जाऊँगी नही तो क्या इसी तरह तुम्हारा चेहरा देखती हुई मुँह वाये खड़ी रहूँगी ?'

अलकेश वोला, 'मुँह बाये खडी नही रह सकती -तो बाबा मुँह वन्द करके तो खडी रह सकती हो !'

पारुल ने कहा, 'ओह, तुम जो कितने बडे वीर पुरुष हो न कि मै डर के मारे विलकुल थर-थर काँपने लगूंगी ! मुँह बन्द करके खड़ी रहूँ मै—मेरी बला से !'

अलकेश बोला, 'ना-ना, जाओ मत। सुनो, एक बात है।'

पारुल ने कौतूहल से अलकेश के मुँह की ओर देखा।

अलकेश बोला, 'तुमने तो यह पूछा ही नही कि मैं ढाका से तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ !'

पारुल बोली, 'लाओगे और क्या ? यह आलू और बैंगन लाये हो न !'

अलकेश ने पारुल का खोपा हिलाते हुए कहा, 'इसी अक्ल के कारण ही तो मासी माँ तुम्हे 'मुँहजली' कहा करती है। यह देख...।'

यह कहकर उसने थैले के भीतर हाथ डाला। उसके बाद उसने एक पिस्तौल निकालकर दिखायी।

पिस्तौल को देखते ही पारुल चौककर एक कदम पीछे हट गयी।

उसने पूछा, 'क्या है ?'

अलकेश ने पारुल के मुंह पर अँगुली रखी और गरदन नीची कर उसने कहा, 'चुप रहो। इस कदर ज़ोर से क्यो बोल रही हो ?'

पारुल ने पिस्तौल को हाथ मे लेकर घुमा-फिराकर देखा।

उसने पूछा, 'यह क्या है ?'

अलकेश ने कहा, 'इसे कही भी छिपाकर रख दो। यह पिस्तौल है।'

'पिस्तौल !' पारुल पिस्तौल का नाम सुनते ही चमक उठी। पूछा उसने, 'इससे क्या करोगे ?'

'उस डगलस बेटे को मारूँगा। और सब जितने भी अंगरेज़ के बच्चे हैं—सभी को मारूँगा।'

'किन्तु तुमने इसे पाया कहाँ ?'

अलकेश ने उत्तर दिया, 'मैं ढाका गया था, वहाँ प्रफुल्ल-दा थे। किन्तु छोडो भी, इस समय यह बताओ कि इसे तुम रखोगी कहाँ ? देखो, कोई जान नही पाये। इसे खूब सावधानी से छिपाकर रखना होगा।'

'चावल की कलशी के भीतर रख दूं क्या ?'

अलकेश ने कहा, 'नही, वहाँ रखने पर मासी माँ देख लेंगी। उससे अच्छा तो यह होगा कि तुम इसे अपने बिछौने के नीचे रख दो।'

उस ओर से मासी माँ की आवाज़ आयी, 'अरी पारू, पारू..., आलू और बैंगन तुमने सब्ज़ियो की टोकरी मे रख दिये है तो !'

पारुल बोली, 'वह देखो, माँ फिर बुला रही है।'

'बुलाने दो। पहले तुम इसे छिपाकर रख दो। मै कुछ देर मासी माँ को सभाल लूंगा।'

यह कहकर वह पारुल के तख्तपोश के ऊपर से बिछौना उठाने लगा। बिछौना उठाते ही नजर पडी एक फोटो पर। फोटो देखते ही अलकेश का मुख-मडल न जाने क्यो गम्भीर हो गया।

'तारक की फोटो यहाँ कैसे आयी ? तुमने क्या तारक के साथ फोटो खिचवायी थी ?'

अपराध पकडा जाते ही उस समय पारुल का मुँह सफेद पड गया।

सिर्फ इतना ही बोली वह, 'हाँ, तारक-दा ने कहा था। इसीलिए ..।'

अलकेश ने कहा, 'किस दुकान मे तुमने फोटो खिचायी है ? क्या तुम तारक के साथ फोटोवाले की दुकान पर गयी थी ? मुझे तो कुछ भी मालूम नही। मुझे तुमने कभी भी बतलाया तो नही !'

पारुल बोली, 'झूठ-मूठ तुम गुस्सा क्यो हो गये हो ?'

अलकेश बोला, 'ना, मैं वह बात नही सोच रहा। मैं भला कितने दिनो के लिए कलकत्ता से ढाका चला गया था ! और इसी बीच तारक तुम्हे सीधे फोटो वाले की दुकान मे ले जाकर फोटो उतरवा लाया !'

पारुल ने कहा, 'तुम गुस्सा होगे, यह मैं जानती थी। इसीलिए तो मैंने फ़ोटो वहाँ छिपाकर रख दी थी।'

'मुझे गुस्सा होने की क्या पडी है ! तुम तारक के बिलकुल पास

होकर फोटो खिचवाओ, इसमे मेरे गुस्सा होने की क्या बात है ? तुम' जितनी फोटो चाहो, उसके साथ खिचाओ, इसमे मेरा क्या आता-जाता है ?

यह कहकर उसने फोटो पारुल की तरफ बढा दी ।

पारुल ने फोटो जहाँ थी, वही रख दी । फिर उसने कहा, 'लाओ, वह पिस्तौल दो । यहाँ रख दूँ... '

अलकेश ने कहा, 'नही, रहने दो ।'

पारुल बोली, 'यह क्या, देख रही हूँ कि तुम तो सचमुच गुस्सा हो गये हो ।'

उधर से करुणामयी का चीत्कार पुनः शुरू हो गया, 'अरी मुँहजली, कहाँ चली गयी ? तुम्हारे कानो मे क्या कुछ सुनायी नही पडता ? अलकेश चला गया क्या ?'

पारुल झल्लाती हुई बोल उठी, 'आ रही हूँ माँ, अभी आ रही हूँ ।'

अलकेश ने और रुकना पसन्द नही किया । वह दरवाज़े की तरफ कदम बढाने लगा । पारुल उसके सामने रास्ता रोककर खडी हो गयी ।

बोली, 'तुम नाराज़ होकर हमारे घर से चले जाओगे, यह नही होगा ।'

अलकेश बोला, 'हटो, मुझे काम है ।'

पारुल ने उत्तर दिया, 'तुम्हारे काम मे मै बाधा नही देना चाहती । किन्तु पिस्तौल से क्या काम है ? उसे रखकर चले जाओ । बिना रखे यदि तुम चले गये तो मै यही समझूँगी कि तुम सचमुच मुझसे गुस्सा हो गये हो ।'

अलकेश ने कहा, 'यदि गुस्सा हूँ भी तो इसमे गलत क्या है ?'

पारुल बोली, 'देख रही हूँ कि तारक-दा के प्रति तुम्हारे मन मे बडी जलन है ।'

'मै तारक से क्यो जलूँगा ? तुम सब-कुछ जान-बूझकर भी यह कह रही हो ? जानती हो, तारक हमारी पार्टी का लडका है । जानती हो, हमारी पार्टी के किसी भी व्यक्ति से ईर्ष्या करने का नियम नही है । कोई किसी से यदि विश्वासघात करे तो उसकी क्या सज़ा है, वह भी तुम्हे

मालूम है । फिर भी क्या तुम कहोगी कि मै तारक से ईर्ष्या करता हूँ ?'

'तो फिर हम दोनो की फोटो देखकर तुम्हारा मुख गम्भीर क्यो हो गया ?'

उसके बाद अलकेश के सामने बढकर वह फिर बोली, 'तो सुनो, खुलकर ही बोलती हूँ। फोटो खिचवाने के लिए तारक-दा मुझे बाहर किसी भी दुकान मे नही ले गया। घर पर ही फोटोवाले को बुला लाया था। उसी ने हम दोनो की फोटो खीची थी।'

अलकेश ने कहा, 'तो हठात फोटो खिचवाने की इच्छा किसकी हुई ? तुम्हारी या तारक की ?'

पारुल बोली, 'क्या सच्ची बात बतलाऊँ ?'

'हाँ, तुम सच्ची बात बतलाओगी, इसीलिए तो तुम से पूछ रहा हूँ।'

पारुल बोली, 'मेरी।'

तुम्हारी ? तुम्हारी इच्छा हुई फोटो खिचवाने की ?'

पारुल बोली, 'हाँ, मेरी ही इच्छा हुई। मैंने ही तारक-दा से कहा था कि तुम सब स्वदेशी आन्दोलन कर रहे हो, कब हो, कब नही..., इसलिए एक फोटो खिचवाकर रख लेना अच्छा ही होगा। लेकिन उसी बात को लेकर तुम इतना गुस्सा हो जाओगे, यह तो मै सोच भी नही सकी थी।'

हठात घर के बाहर से फिर पुकारने की अवाज सुनायी पड़ी, 'मासी माँ, मासी माँ...!'

करुणामयी ने भीतर से जवाब मे कहा, 'अरी पारू, दरवाजा खोल दे रे ! देख तो पारू, कौन आया है ?'

पारुल ने अलकेश से कहा, 'यह लो, तारक-दा आ गया है। लाओ सब-कुछ भीतर छुपाकर रख दूँ, अन्यथा वह देख लेगा।'

अलकेश के हाथ से पिस्तौल लेकर पारुल ने उसे बिछौने के नीचे छिपा दिया। उसके बाद वह बोली, 'जाती हूँ, तारक-दा के लिए दरवाजा खोल आऊँ।'

पारुल शीघ्र ही दरवाजा खोलने जा रही थी।

अलकेश ने कहा, 'ना, रुको। दरवाजा खोलने से पहले एक बात

बतलाती जाओ।'

पारुल जाती-जाती लौट आयी।

बोली, 'क्या ?'

अलकेश ने कहा, 'सचमुच तुमने मुझे हैरत मे डाल दिया। मुझसे छिपाकर जिसके साथ पास-पास खडी होकर तुम फोटो खिचवा सकी हो, उसी से छिपाकर पुन मेरी पिस्तौल बिछौने के नीचे रखने मे तुम्हे कोई हिचकिचाहट नही हुई। सचमुच तुम लोग सब-कुछ कर सकती हो।'

पारुल बोली, 'तुम्हारी इस बात का जवाब मै अभी नही दूँगी।'

अलकेश ने कहा, 'जवाब जब तक नही दोगी, मै तुम्हे छोडूँगा नही।'

पारुल ने हाथ बढाकर उसे हटाते हुए कहा, 'छि, हटो तो! लगता है कि तुम मे थोड़ा-सा साधारण ज्ञान भी नही, थोडी-सी भी बुद्धि नही...।'

यह कहकर वह सीधी सदर दरवाजे की तरफ जाने लगी।

तब तक दरवाज़े के बाहर पुकार-पुकारकर तारक हार चुका था। पारुल को देखते ही वह बोला, 'दरवाज़ा खोलने मे इतनी देर हुई! शायद सो गयी थी, क्यो ?'

उसकी बात का जवाब न देकर पारुल ने पूछा, 'तुम तो आज इतने सवेरे आ गये ?'

तारक ने घर के भीतर पाँव रखते हुए कहा, 'मासी माँ ने तो आज सवेरे-सवेरे ही आने के लिए कहा था...।'

पारुल ने दरवाज़ा बन्द करते हुए कहा, 'तुम्हारे हाथ मे यह क्या है ?'

तारक बोला, 'मासी माँ की अफीम खत्म हो गयी थी। वही लाया हूँ।'

यह कहकर वह मासी माँ के कमरे की तरफ आगे बढ रहा था, लेकिन जाते-जाते न जाने उसे क्या याद आ गया।

बोला, 'अलकेश अभी तक आ क्यो नही रहा है, बतलाओ तो? उसने दो-एक दिनो मे ही लौट आने की बात कही थी और इतने दिन बीत गये, फिर भी...।'

भीतर से हठात करुणामयी ने कहा, 'कौन आया है, बाबा ? कौन, तारक ? अफीम लाये हो ?'

तारक ने कमरे मे प्रवेश करते हुए कहा, 'हाँ मासी माँ, आपकी अफीम लाया हूँ। यह लीजिये।'

करुणामयी बोली, 'चलो बची, जान मे जान आयी। मेरी अफीम की डिबिया बिलकुल ख़ाली हो गयी थी।'

तारक ने कहा, 'आपको जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत हो मासी माँ, आप मुझे बतायेगी। इसमे सकोच करने की कोई बात नही है।'

मासी माँ बोली, 'जीते रहो, बेटा ! यह मुँहजली अगर बेटी न होकर मेरा बेटा होती तो मुझे चिन्ता ही क्या थी !'

उसके बाद पारुल की तरफ लक्ष्य करती हुई बोली, 'अरी पारुल, मुँह बाये खडी क्यो हो ? बेटे के लिए चाय तो बनाकर ले आओ। इस धूप मे जलता हुआ आया है। तुम्हे क्या थोडा-सा भी ख़याल नही ?'

तारक ने कहा, 'न, न, इसकी कोई ज़रूरत नही। आप फिक्र न करे।'

पारुल बोली, 'आओ, तारक-दा ! यदि चाय नही पियोगे तो कम-से-कम एक गिलास पानी ही सही। आओ...।'

यह कहकर पारुल आगे-आगे चलने लगी। पीछे-पीछे तारक भी जा रहा था। पीछे से ही तारक ने पुकारते हुए कहा, 'पारू, सुनो तो !'

पारुल पीछे घूमकर खडी हो गयी। बोली, 'क्या ?'

तारक ने कहा, 'ज़रा अलकेश की करतूत भी देखो। वह जो ढाका चला गया; अब लौटने का नाम ही नही ले रहा है। हम लोग सभी चिन्तित है . ।'

पारुल बोली, 'अलकेश-दा तो आ चुका है।'

'आ चुका है ? लौट आया है ? तुम्हे कैसे मालूम हुआ ?'

पारुल बोली, 'तुम इस कमरे मे आओ, आओ न ! तुम खुद देख लोगे कि वह लौटकर आया है या नही !'

पारुल के कमरे मे प्रवेश करते ही तारक को जैसे काठ मार गया। उसने देखा कि कमरे के भीतर एक चेयर पर अलकेश अकेला बैठा था।

'अरे अलकेश, तुम ? तुम कब आये ?'

अलकेश ने कहा, 'आज सुबह।'

'ढाका की क्या खबर है ? प्रफुल्ल-दा कहाँ हैं ?'

'ढाका मे ।'

'सारी बातचीत हुई तो ?'

अलकेश ने कहा, 'हाँ, हुई है ।'

तारक अलकेश का उत्तर सुनकर जाने क्यो फिर अबोला रह गया। अलकेश तो कभी भी इतना गम्भीर नही रहता ! ढाका से लौटते ही उसे क्या हो गया !

तारक ने पूछा, 'क्यो भई, क्या तुम्हारे साथ कोई सीरियस बात हुई है ? ढाका से कोई गम्भीर खबर सुनकर आये हो क्या ?'

अलकेश ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'नही ।'

तारक ने पूछा, 'तो फिर इतने गम्भीर क्यो दीख रहे हो ? क्या सोच रहे हो तुम ?'

अलकेश बोला, 'नही तो । मैं गम्भीर कहाँ हूँ ? मै कुछ भी तो सोच नही रहा !'

तारक ने पारुल को साक्षी मानकर पूछा, 'क्या अलकेश का चेहरा गम्भीर नही लग रहा है ? तुम्ही बतलाओ ।'

पारुल बोली, 'छोडो भी । कोई दूसरी बात करो । क्या लोगे ? चाय बना दूं क्या ? तो फिर ज़रा रुको, मै अँगीठी मे आँच दे आऊं ।'

अलकेश बोला, 'मेरे लिए कुछ लाने की जरूरत नही । मैं चलता हूँ ।'

तारक ने कहा, 'यह क्या ? क्यो उठ गये ? तुम्हे इतना क्या काम पड गया ?'

पारुल बोली, 'सचमुच, जा क्यो रहे हो ? बैठो न, अलकेश-दा ! चाय बनाने मे भला कितनी देर लगेगी !'

'न, मैं चलता हूँ ।'

यह कहकर अलकेश और रुका नही । सरपट घर से निकलकर वह अदृश्य हो गया ।

आश्चर्यान्वित तारक ने पारुल की तरफ देखा । उसने पूछा, 'अलकेश को क्या हुआ, बतलाओ तो ? आज वह इतना गम्भीर क्यो दिखायी पड रहा था ? तुम्हे कुछ मालूम है क्या ?'

पारुल ने कहा, 'कोई खास बात हुई हो, ऐसा तो मैं नही समझती।'

'अलकेश को आये कितनी देर हुई थी ?'

पारुल बोली, 'दोपहर ठीक एक बजे—जब किले मे तोप छूटी थी।'

'इतनी देर तक तुम्हारे साथ क्या बाते हो रही थी ? शायद तुमने कोई नाराजी की बात की होगी !'

पारुल बोली, 'वाह रे, मैं क्यो नाराजी की बात करने जाऊँगी ?'

'तो क्या उसने मेरे सम्बन्ध मे कुछ कहा है ?'

'न, तुम्हारे बारे मे तो कोई बात हुई नही।'

तारक न जाने क्या मन-ही-मन सोचने लगा। अनेक दिनों से तारक अलकेश को कुछ अन्यमनस्क-सा पा रहा था। ठीक पहले की तरह वह उसके साथ सहज और सरल व्यवहार नही कर रहा था। जाने कहाँ उनके सम्बन्धो के बीच एक दरार पडने लगी थी ! वैसे देखा जाये तो वे दोनो एक ही पार्टी से जुडे हुए थे, एक ही था दोनो का आदर्श। बचपन से ही दोनों एक ही विद्यालय मे पढे है, एक ही मैदान मे फुटबॉल खेला है। इस समय एक ही साथ एक ही पार्टी मे काम कर रहे है वे। जब 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की गयी थी, तब एक ही तरह के उत्साह के साथ उन दोनो ने चावल जमा किया था और साथ-ही-साथ दूसरो को मेम्बर बनाया था।

और फिर क्या यह काम कोई आसान काम है ? एकमत होकर काम करना तो बगालियो का स्वभाव है ही नही। एक आदमी एक बात करेगा तो दूसरा कोई दूसरी बात। इस तरह के लोगो को खीचकर एक दल मे लाना क्या सहज काम होता है ?

हठात तारक ने कहा, 'मै चलता हूँ।'

पारुल बोली, 'आज अभी ही चले जाओगे क्या ? लगता है कि कोई विशेष काम है ?'

तारक ने कहा, 'हाँ, काम तो है ही। आज फिर हरीश पार्क मे मीटिंग है। हो सकता है कि पुलिस आकर लाठी-चार्ज करे। ऐसी अवस्था मे मेरा वहाँ न होना क्या ठीक होगा ? अलकेश की भी जाने की बात है। मै चलता हूँ...।'

यह कहकर घर से बाहर जाते-जाते भी वह फिर रुक गया। उसने

कहा, 'तो फिर मासी माँ से पूछ आऊँ कि कल क्या लाना होगा ?'

पारुल बोली, 'अलकेश-दा ने आलू और बैंगन लाकर दिया है। और कुछ लाने की आवश्यकता नही पडेगी ।'

तारक ने पूछा, 'सरसो का तेल और नमक-वमक है तो ? इस समय एक बार देखकर वता दो, अन्यथा फिर उस दिन की तरह की ही बात होगी—तेल के विना सभी लोगो को निराहार रह जाना पडेगा ।'

पारुल बोली, 'न, सारी चीज़े हैं । तुम चाहो तो इस समय जा सकते हो ।'

तारक फिर मानो कुछ सोचने लगा । बोला, 'मासी माँ की रबडी ?'

पारुल ने जवाब दिया, 'सो तो तुम सुबह ही खरीदकर दे चुके हो। आज उसी से काम चल जायेगा । और फिर कल सबेरे तो तुम आओगे ही ।'

'हाँ, सो तो आऊँगा ही । और फिर मेरे न आने पर भी क्या नुकसान होगा ? अकलेश तो आ ही गया है ।'

पारुल बोली, 'तो क्या अलकेश के आ जाने पर तुम्हे नही आना है भला ?'

तारक ने उसकी बात का जवाब न देकर कहा, 'अच्छा, मैं चलता हूँ । तुम सदर दरवाज़ा बन्द कर लो ।'

यह कहकर वह बाहर रास्ते पर निकल पडा । पारुल ने आँगन पार करके सदर दरवाज़े की कुडी लगा दी ।

।

जब मिस्टर सिमसन कलकत्ता आये थे, उस समय कलकत्ता के मध्यवित्त अथवा निम्नवित्त समाज का यही चित्र था। अलकेश या तारक-जैसे लडको ने मैट्रिक अथवा बी० ए० की परीक्षा पास की थी—दूसरो के घर पर ट्यूशन करके या फिर अपनी विधवा माँ का एक-एक गहना बेचकर। सुबह आँख खुलते ही वे सब मुहल्ले की लाइब्रेरी के फ्री रीडिंग-रूम मे जाकर अखबार पढा करते। अखबार पढने का असल उद्देश्य होता नौकरी का विज्ञापन देखना या फिर खबरो पर भी एक सरसरी निगाह डालना।

सभी का यही हाल था।

इस प्रकार अखबार पढने के लिए जाने पर ही तारक के साथ अलकेश का परिचय हुआ था और उसी के फलस्वरूप दोनो मे घनिष्ठता स्थापित हुई थी।

अलकेश कहता, 'इस बार अगरेज साले मरेंगे।'

तारक समझ नही पाता। पूछता, 'क्यो ?'

अलकेश कहता, 'तुम मेरे साथ शर्त लगा लो।'

तारक बोलता, 'मेरे पास रुपये ही नही है। मैं भला क्या शर्त लगाऊँगा ?'

अलकेश कहता, 'रुपये तो मेरे पास भी नही है। भला मैं ही कौन बडे आदमी का बेटा हूँ कि हजार-हजार रुपये की शर्त लगाऊँगा ? न तो तुम बडे आदमी हो, और न मैं ही। हमारे देश मे जितने भी बडे आदमियो को तुम देख रहे हो, वे सभी दलाल है।'

'दलाल ? किसके दलाल ?'

'अगरेज सालो के दलाल। वे सभी अगरेजो की दलाली करते है। क्या तुमने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का नाम सुना है ? जे० एम० सेनगुप्त का नाम सुना है ? देशबन्धु सी० आर० दास और मोतीलाल नेहरू का नाम सुना है ?'

तारक का उत्तर होता, 'हॉ, समाचार-पत्रो मे मैंने उनके नाम पढे है।'

'वे सब कौन है ?'

तारक की समझ मे नही आता कि वह क्या जवाब दे ! वह कहता, 'क्यो, वे सब दलाल है क्या ?

'धत् ..!' अलकेश मुँह टेढा करते हुए बोल उठता।

वह कहता, 'ऐसा लगता है कि तुम्हे कुछ भी मालूम नही। मेरी समझ मे तो यह नही आता कि तुमने किस तरह मैट्रिक पास किया ! भला कौन-सी डिवीजन मे तुमने मैट्रिक पास किया है, बोलो तो ?'

तारक जवाब देता, 'गणित मे मुझे अधिक नम्बर नही मिले। इसीलिए मैं सेकड डिवीज़न मे पास हुआ हूँ।'

अलकेश कहता, 'इसीलिए तो कहता हूँ कि कलकत्ता-विश्वविद्यालय

बिलकुल बेकार है। तुम्हे किसने पास किया, यही मेरी समझ मे नही आ रहा है। तुम्हें तो फेल होना चाहिए था। तुमने मोतीलाल नेहरू को दलाल कैसे कह डाला?'

तारक लज्जित होकर कहता, 'नही-नही, मैंने वैसा नही कहा। मैंने तो कहा है कि वे सब लीडर है। हमारे देश के लीडर हैं न वे...।'

अलकेश पूछता, 'तो यही अगर तुम्हे मालूम है तो ज़रा बतलाओ कि वे सब लीडर क्यो बने? उन्हे लीडर बनने की जरूरत क्या पडी थी? वे तो खूब आराम के साथ पैर के ऊपर पैर रखे मौज कर सकते थे! तो फिर उन्हे लीडर बनने की क्यो सूझी? जान-बूझकर जेल जाने की उन्हे क्या पडी थी?'

तारक चुप्पी साध लेता। इस बात का सही जवाब उसके पास था ही नही।

अलकेश बोलता, 'दरअसल देख रहा हूँ कि तुम्हारी पढाई-लिखाई ही कम हुई है। जिस देश मे तुमने जन्म लिया है, वह देश—भारतवर्ष—क्या है? यह कलकत्ता किस तरह अस्तित्व मे आया? बम्बई, मद्रास और दिल्ली—ये सारे नगर रातोंरात तो ऐसे नही बन गये। अरब देश की कहानियो की तरह जादुई करिश्मे के बल पर ये नही खडे हो गये है। आखिर इनका भी तो एक इतिहास है। यह कहानी जानने की क्या तुम्हारी इच्छा नही होती? यह जानने की साध नही जगती है तुम्हारे मन मे कि हम आखिर इन अगरेज़ सालो के गुलाम क्यो है?'

तारक तब भी गूंगे की तरह मुँह बाये अलकेश की बातें सुनता रह जाता।

'क्या तुम जानते हो कि स्वामी रामकृष्ण परमहसदेव नाम के एक साधु-पुरुष इसी कलकत्ते मे थे?'

तारक कहता, 'हाँ, दीवार पर टँगी उनकी तसवीरे मैंने देखी है।'

'तसवीर देख लेने से ही क्या काम खत्म हो गया? और भी तो लोग हैं, फिर क्यो उन्ही की तसवीरें टाँगी जा रही है? क्या यह प्रश्न नही उठता तुम्हारे मन मे? उस स्वामी रामकृष्ण परमहसदेव की कहानी सुनोगे? जानते नही हो कि पानी पर जब तक नाव तैर रही है तभी तक ठीक है, नाव के ऊपर पानी बह आने पर ही सत्यानाश समझो। यह उनकी

ही वाणी है। इसका अर्थ समझ मे आया ?'

'अर्थ ?'

'हाँ—हाँ, अर्थ। इसका अर्थ यह है कि देशभक्ति के लिए रुपये-पैसो की आवश्यकता है, लेकिन जब रुपये-पैसे के लिए लोग देश के प्रति भक्ति दिखाने लगते है, तभी मुश्किल होती है।'

और भी बहुत-सी बाते कहता अलकेश। वही—उन दिनो वाला अलकेश ! पढाई-लिखाई मे अलकेश हीरा था। अलकेश था हीरे की कनी—स्कूल की प्रत्येक परीक्षा मे वही फर्स्ट या सेकड रहता। वह इनाम और पदक जीतता। वह कालीघाट हाई स्कूल का गौरव था। किन्तु वही लडका पढाई-लिखाई के बाहर की भी इतनी बाते जानता था, यह देखकर तारक स्तब्ध रह जाता। वह अलकेश कितने ही महापुरुषो का नाम गिनाया करता और कहता, 'क्या तुमने स्वामी विवेकानन्द का नाम सुना है ? उन्ही स्वामी जी ने क्या कहा है, जानते हो ? उन्होने कहा है कि हम लोगो का वर्तमान धर्म या वेद मे नही, पुराण मे नही, भक्ति मे नही, मुक्ति मे नही; धर्म इस समय भात की हँडिया-भर मे रह गया है।'

और भी बहुत-सी बाते बोलता अलकेश। तारक सुन-सुनकर मौन रह जाता और मुँह बाये अलकेश की तरफ ताकता रहता।

वह अलकेश से पूछ बैठता, 'तुमने इतना सब-कुछ जाना किस तरह ?'

अलकेश जवाब देता, 'किताबें पढकर। तुम भी किताबें पढो, किताबें पढने पर सब-कुछ जान जाओगे।'

तारक कहता, 'उपन्यास पढने पर मेरे पिताजी नाराज होते हैं। कहते हैं कि सिर्फ स्कूल की किताबे पढो।'

'पिताजी आदि तो नाराज़ होगे ही। मेरी माँ भी उसी तरह कहती है। किन्तु क्या मैं माँ की बात सुनता हूँ ? माँ की बात सुनूँगा तो मेरी अक्ल के बारह नही बज जायेंगे ? पहले मैं—बाद मे मेरी माँ।'

तारक पूछता, 'तो तुम अपनी माँ से खुद अपने-आपको अधिक चाहते हो ?'

अलकेश ठहाका मारकर हँस पडता और कहता, 'अरे, मेरी तो दो माताएं है।'

'तुम्हारी दो माताएँ है ? तुम्हारे पिताजी ने दो शादियाँ की थी क्या ?'

अलकेश भभक उठता। कहता, 'धत्..., तुम बडे बुद्धू हो ! क्या सिर्फ मेरी ही दो माताएँ है ? हम सबो की दो माताएँ है। तुम्हारी भी।'

'यह क्या कह रहे हो ?'

अलकेश कहता, 'हाँ, पहली माता है भारत-माता और दूसरी माता वह है, जिसने मुझे गर्भ मे धारण किया था।'

तारक इन बातो को सुनकर कुछ भी न बोल पाता। वह पूछता, 'यह सब किस किताब मे लिखा है रे ? मैं भी वह किताब पढूंगा।'

अलकेश जवाब देता, 'यह सब क्या मैंने किताब पढकर सीखा है ? यह सब मेरे गुरु ने सिखाया है।'

'तुम्हारे गुरु ने ? तुम्हारे गुरु भी है क्या ?'

'गुरु कैसे नही होगे ? गुरु न होने पर क्या देश-सेवा सम्भव है ?'

'तुम्हारे गुरु का नाम क्या है ?'

'प्रफुल्ल-दा !'

प्रफुल्ल-दा माने प्रफुल्ल चौधरी। उन्होने शादी-वादी नही की थी। उनका अपना निज का कोई पक्का ठौर-ठिकाना भी नही। अगर कुछ अपना है तो सिर्फ हँसी। एक उन्मुक्त हँसी हर समय उनके होठो पर थिरकती रहती है। कभी भी किसी ने उन्हे गम्भीर नही देखा। मिस्टर सिमसन जिस समय कलकत्ता मे आये थे, उस समय कलकत्ता के अधिकाश लडके ऐसे ही थे। सिर्फ अलकेश और तारक जैसे गरीब लडके ही नही, बल्कि और भी बडे-बडे लोग प्रफुल्ल चौधरी के पास आया करते।

प्रफुल्ल-दा कहते, 'पुलिस अगर आती है तो आने दो, पुलिस कोई तुम्हे काट तो खायेगी नही।'

अलकेश कहता, 'न प्रफुल्ल-दा, पुलिस का एक नया साहब आया है। वह सारे कलकत्ता मे भेष बदलकर घूमता-फिरता है। हम सब क्या करते

है, वह इसकी निगरानी रखता है ।'

प्रफुल्ल-दा कहते, 'इसमे डरने की क्या बात है ? भय पर विजय पाने का नाम ही है आत्मविश्वास ! उस आत्मविश्वास को प्राप्त करने के लिए कुछ नियमो का पालन करना होगा ।'

'कैसे नियम ?'

'ब्रह्मचर्य-पालन । यह बहुत ही कडी साधना है । आचरण, चिन्तन और कर्म मे बिलकुल सयमी होना पडेगा, सपूर्णत. सयमी । तुम लोग अगर सचमुच विप्लवी होना चाहते हो तो मै तुम लोगो को विप्लव की शिक्षा दूँगा ।'

अलकेश एक दिन तारक को उन्ही प्रफुल्ल-दा के पास ले गया था । वहाँ जाने के पहले तारक को बहुत डर लग रहा था । इतने बडे पडित, इतने बडे विप्लवी और इतने बडे ज्ञानी-गुणी पुरुष—उनके सामने जाकर खडा होना भी क्या कोई आसान बात है ?

अलकेश ने अवश्य ही जाने के पहले उसके भय को दूर करते हुए कहा था, 'बाहर से तुम प्रफुल्ल-दा को देखकर कुछ भी समझ नही पाओगे, समझे ? देखने पर लगेगा कि वे हमारे-तुम्हारे जैसे ही हैं । लेकिन भीतर-ही-भीतर वे अटूट विप्लवी है ।'

प्रफुल्ल-दा के सम्बन्ध मे प्रचलित बहुतेरी कहानियाँ तारक को अलकेश सुना चुका था । बारीसाल मे जो ट्रेन-डकैती हुई थी, उसके पीछे थे प्रफुल्ल-दा । मेदिनीपुर मे जो एक के बाद एक करके तीन गोरे मजिस्ट्रेटो का खून हुआ था, उसके पीछे भी थे वही प्रफुल्ल-दा । और फिर चटगाँव के शस्त्रागार की जो इतनी बडी लूट हुई थी, उसके पीछे भी थे वही— प्रफुल्ल-दा !

तारक ने कहा था, 'किन्तु फिर मास्टर-दा कौन है ? सूर्य सेन के नाम के जो व्यक्ति थे, वह फिर कौन थे ?'

तारक उस समय कुछ भी नही जानता था । अलकेश के सामने वह बिलकुल अनाडी था । लोगो के मुँह से जो कुछ सुनता, समाचार-पत्रो में जो कुछ पढता —उसे ही वह आप्त-वाक्य मान लेता । अलकेश ने ही उसे पहले-पहल बतलाया था कि भीतर की खबर कभी भी लोगो को बतलायी

नही जाती। सच पूछा जाये तो कलकत्ता मे और भारतवर्ष मे जो कुछ हो रहा है, उन सव के पीछे है उन्ही प्रफुल्ल-दा की योजनाएँ !

इसीलिए प्रफुल्ल-दा के पास तारक तैयार होकर ही गया था। प्रफुल्ल-दा के किसी भी कार्य-कलाप से वह हैरान नही हुआ।

तारक को याद है कि जब अलकेश ने प्रफुल्ल-दा से उसका प्रथम परिचय कराया था तव प्रफुल्ल-दा उसकी तरफ देखकर हँस पडे थे। अर्थात वे मानो कह रहे थे, 'भई, मालूम है। ..मुझे सभी कुछ मालूम है।'

उसके वाद काफी वातो के बाद वे वोले थे, 'इस समय मै तुम लोगो को कोई भी काम नही दूँगा। तुम लोग अभी केवल सोशल-वर्क करोगे—समाज-सेवा करोगे। समाज-सेवा करने के वाद ही देश-सेवा का अधिकार मिलेगा तुम्हे। उसके पहले नही...।'

समाज-सेवा !

तारक के जीवन मे वह समाज-सेवा ही उसका काल बन गयी। प्रफुल्ल-दा तो चले गये। उनके जैसे व्यक्ति के लिए अधिक दिनो तक एक ही स्थान मे रहना न तो सम्भव था और न ही उचित। उन पर तो सभी का दावा है। पुलिस जानती थी कि इस देश मे जो कुछ घटनाएँ घट रही है, उनके पीछे प्रफुल्ल-दा का हाथ था, किन्तु उनके पास कोई प्रमाण नही था। प्रफुल्ल-दा—यानी अधमैली कमीज़ पहने हुए एक अधेड व्यक्ति ! भला उनमे ऐसी क्या क्षमता थी !

तारक ने अगर कोई बात कही थी तो सिर्फ यही कि कलकत्ता मे पुलिस के भेदिए खूव घूम रहे है। एक डिप्टी-कमिश्नर कलकत्ता मे आये है जो धोती-कुरता पहनकर किसी सामान्य बगाली-सज्जन का छद्म-वेश धारण किये घूमते-फिरते है।

प्रफुल्ल-दा उसकी वात सुनकर ठहाका मारकर हँस पडे थे। उन्होने कहा था, 'तो क्या वह घूमेगे नही ? उनकी जमीदारी है—वह ज़मीदारी हाथ से निकल न जाये, इसकी चेष्टा तो करेंगे ही।'

'लेकिन फिर हम सब काम कैसे करेंगे ?'

'तुम सव तो समाज-सेवा करोगे। ऋषि-मुनि, पडित ओर अग्रज जिन कामो को करने का निर्देश दे गये है, वही काम करोगे तुम सब। जीवो के

प्रति दया, गुरुजनो के प्रति भक्ति और श्रद्धा एव दरिद्रनारायण की सेवा —इन सब कामो को करने मे क्या कोई तुम्हे बाधा पहुँचायेगा ?'

उन दिनो के अलकेश और तारक इन्ही सब कामो के माध्यम से ही देश-सेवा का 'क ख ग घ' शुरू करते।

प्रफुल्ल-दा कह चुके थे, 'तुम सब इस समय विद्यार्थी हो। अभी तुम लोग इन्ही कामो को करो। भविष्य मे मै तुम्हे और दूसरे काम भी दूँगा।'

प्रफुल्ल-दा बीच-बीच मे धूमकेतु के समान ही हठात कलकत्ता मे हाजिर हो जाते और फिर एक दिन अचानक गायब भी हो जाते।

अलकेश था प्रफुल्ल-दा का बडा भारी भक्त, लेकिन हर किसी के सामने वह अपनी भक्ति प्रगट नही करता। सच कहा जाये तो अलकेश के प्रयासो से ही उनके मुहल्ले से 'दरिद्र बान्धव भंडार' की स्थापना सम्भव हो सकी थी। तब प्रफुल्ल-दा कहाँ रहते, इसकी खबर तारक को नही होती। उस समय अलकेश जो कुछ कहता, वही सभी को करना पडता। सभी यही समझते कि अलकेश की बात का अर्थ ही है, प्रफुल्ल-दा की बात।

याद है कि मुहल्ले के एक सज्जन के मकान मे एक कमरा लेकर 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की गयी थी। प्रत्येक रविवार को अलकेश और उसके सभी साथी मिलकर घर-घर घूमते और चावल इकट्ठा करते। चावल लाकर उसे वे एक जगह जमा करते, बाद मे वही चावल वे मुहल्ले के जरूरतमन्द भद्र गृहस्थो के घर पर पहुँचा आते। अनेक विधवाएँ थी, जिनकी देख-भाल करने वाला कोई नही था। उनके घरो मे जाकर अलकेश और उसके साथी चावल बाँट आते। वे थे समाज के असहाय श्रेणी के मनुष्य। उनकी सेवा करने का मतलब ही था देश की सेवा करना। उसी सेवा के माध्यम से आम मनुष्य मे मनुष्यत्व जाग्रत करना होगा—यही थी प्रफुल्ल-दा की सीख। देश को अगर आजाद करना है तो सेवा के माध्यम से ही वह उद्देश्य सिद्ध हो सकेगा।

अलकेश था तारक आदि लडको का नेता। वह जिन जिनके घर पर चावल दे आने के लिए कहता, तारक और उसके साथी उनके घरो पर चावल दे आते। और सिर्फ चावल ही नही, नक़द रुपये-पैसे देने की भी

व्यवस्था थी ।

पारुल का घर एक ऐसा ही घर था ।

पारुल के घर आना-जाना भी अनायास ही हुआ था ।

हठात एक दिन अलकेश तारक के पास आया। उस समय रात का अन्तिम पहर था । बाहर से उसने पुकारा, 'तारक, अरे तारक !'

तारक उस समय गहरी नीद मे सोया हुआ था ।

माँ ने उसे झकझोरते हुए कहा, 'अरे खोका, देख, तुझे कौन बुला रहा है ?'

तारक ने बाहर आकर देखा, अलकेश था ।

तारक ने कुछ अचम्भे से पूछा, 'क्या रे, तुम हो ? इतनी रात मे ?'

अलकेश ने कहा, 'रात कहाँ ? अब तो भोर होने वाली है। भोर के साढे तीन बजे हैं ।'

तारक ने कहा, 'लगता है कि प्रफुल्ल-दा आये है। क्या प्रफुल्ल-दा ने बुलाया है ?'

अलकेश ने कहा, 'न, मैं दूसरे काम से आया हूँ । तुम्हे अभी ही बाहर चलना होगा।'

'कहाँ ?'

अलकेश ने कहा, 'तुम्हे एक बार मेरे साथ यदु भट्टाचार्य लेन मे चलना होगा ।'

'क्यो ?'

'वहाँ एक घर मे एक सज्जन की मृत्यु हो गयी है। उनका दाह-सस्कार करने वाला कोई नही है ।'

अलकेश की बात अमान्य करने वाला उस समय कोई भी नही था दल मे । सिर्फ तारक ही नही, तारक के साथ उस दिन दो लडके और थे—निखिल और तारापद । उन्हे भी अलकेश बुलाकर लाया था । सभी उसके 'दरिद्र बान्धव भडार' के सदस्य थे । सभी देश-सेवा मे जुटे रहते थे ।

तारक ने कधे पर एक गमछा डाला और कहा, 'चलो ?'

अलकेश ने चलते-चलते कहा, 'मुर्दा फूँक देना कोई आसान नही । कुछ रुपये तो लगेंगे ही ।'

निखिल ने कहा, 'मेरे पास एक रुपया है।

अलकेश ने कहा, 'दुर! एक रुपये मे क्या होगा? किसी भी तरह कम-से-कम बारह रुपये चाहिए।'

'किन्तु इतने रुपये कहाँ से मिलेंगे?'

अलकेश ने कहा, 'मेरे इस दुशाले को बेचने पर कम-से-कम बीस रुपये जरूर मिल सकेगे।'

'हाँ, सो तो मिल सकते है। लेकिन कौन खरीदेगा? शीत-काल की उस रात मे भला दुशाले का ग्राहक मिलेगा भी तो कहाँ?'

अलकेश ने कहा, 'बहुत-से ग्राहक मिलेगे। चलो मेरे साथ, देखा जाये।'

कालीघाट से गगा का पुल पार करने पर ही है गोपालनगर। अलकेश के कहने के अनुसार तारक आदि सभी उस ठडी रात मे पैदल ही चल पड़े। हड्डियो को कँपा देने वाली ठडी सनसनाती हवा बह रही थी। वे सभी थे गरीबो के लड़के। उनके बीच कोई भी इतना बडा आदमी नही था जो जेब से बीस रुपये निकालकर दे सकता। ट्राम की पटरी के साथ-साथ चलते वे सीधे गोपालनगर बस्ती मे पहुँचे। उस समय अलस्सुबह के चार बज रहे थे लगभग। फिर भी जाडे के दिन होने के कारण चारो ओर घना अँधेरा था।

अलकेश आगे-आगे चल रहा था। वह बस्ती के भीतर घुसकर टीन के एक मकान के सामने खडा होकर पुकारने लगा, "कालीचरण, ओ कालीचरण! घर पर तो हो न?'

बहुत देर तक पुकारने के बाद किसी एक आदमी ने भीतर से जवाब दिया, 'कौन?'

अलकेश ने जोर से कहा, 'मैं हूँ छोटे बाबू। एक बार बाहर तो आओ, कालीचरण! एक जरूरी बात है।'

कुछ देर बाद ही कालीचरण नाम वाला वह व्यक्ति बाहर आया। वह बदन पर और सिर पर कम्बल लपेटे हुए था। अलकेश को देखकर उसने पूछा, 'क्या बात है, छोटे बाबू? इतने तडके आये हो!'

अलकेश ने कहा, 'तुम्हे कुछ रुपये देने पडेगे, कालीचरण!'

'कितने रुपये ?'

अलकेश ने कहा, 'बीस रुपये होने पर ही काम चल जायेगा। मेरा यह दुशाला तुम रखो। इसकी कीमत बीस रुपयो से भी अधिक ही है।'

यह कहकर उसने अपने बदन से दुशाला उतारकर उसकी तरफ बढा दिया। पहले तो कालीचरण अलकेश का प्रस्ताव सुनकर धक्-से रह गया था, किन्तु उस समय अलकेश की बात पर सोच-विचार करने का और समय नही था।

अलकेश ने कहा, 'तुम इतना सोच क्या रहे हो, कालीचरण ? तुम्हारा पहले का बकाया—दस रुपये—तो मैं चुकता कर चुका हूँ। तुम शायद सोच रहे हो कि यदि चीज़ रखकर मैं छुडा नही पाया तो ? सो अगर छुडा नही भी पाऊँ, तो भी तुम्हारा कोई नुकसान नही है। तुम अगर यह दुशाला बाज़ार मे बेच भी दो, तो तुम बिना किसी कठिनाई के चालीस रुपये पा ही जाओगे।'

एक तो हड्डियो को कँपा डालने वाली सनसनाती जाडे की हवा, और उस पर भोर-रात्रि। सम्भवत कालीचरण ऐसी किसी बात के लिए तैयार नही था।

अलकेश ने कहा, 'तुम देर क्यो कर रहे हो ? रुपये दोगे या नही, बतलाओ ? हम लोगो को रुपयो की सख़्त ज़रूरत है, इसीलिए हम तुम्हारे पास आये है। हमे एक मृत व्यक्ति का दाह-सस्कार करना है अभी।'

उसकी बात सुनने के पश्चात कालीचरण ने और देर नही की। शीघ्र ही भीतर से बीस रुपये लाकर उसने अलकेश के हाथ मे रख दिये। और फिर उसने कहा, 'छोटे बाबू, आपको यह दुशाला देने की कोई ज़रूरत नही। आप इसे ले जाये। अन्यथा आप इतनी ठंड मे ज़रूर बीमार हो जायेंगे।'

अलकेश, जो तब तक रुपये ले चुका था, बोल उठा, 'दुर्! मेरी बीमारी के बारे मे तुम्हे सोचना नही होगा। मुझे बीमारी-वीमारी कभी होती ही नही।'

यह कहकर दुशाला रखकर सबके साथ वह बस्ती से बाहर चला

आया। जाड़े की ठडी हवा से उनकी हड्डियाँ तक कँपकँपा रही थी, किन्तु अलकेश का उस ओर ध्यान तक नही था। वह सबके आगे-आगे चल पडा। तारक और उसके साथी पीछे-पीछे आ रहे थे। किसी के मुँह से एक भी शब्द नही निकल रहा था। उसके बाद जब सभी पुन: कालीघाट पहुँच गये तब अलकेश उन्हे लेकर यदु भट्टाचार्य लेन के एक मकान के सामने आकर हाज़िर हुआ।

घर के भीतर से उस समय किसी नारी-कठ से निकली हुई क्रन्दन की आवाज़ आ रही थी। सदर दरवाज़ा खुला ही था।

अलकेश ने घर के भीतर प्रवेश किया और फिर पीछे मुडकर उसने सब से कहा, 'आओ, भीतर चले आओ।'

उस समय तक आकाश कुछ-कुछ साफ होने लगा था। किन्तु घर के भीतर था घुप्प अँधेरा। तारक ने उस समय ही पारुल को सर्वप्रथम देखा था। घर के भीतर एक तख्तपोश पर एक प्रौढ सज्जन अचेत पड़े थे। उनके निकट ही उनकी स्त्री चीत्कार करती हुई रो रही थी। उनकी आँखो से गगा-यमुना बही जा रही थी और पास ही पत्थर के समान मौन होकर बैठी हुई थी पारुल। वह मानो उस समय भी यथार्थ ससार के इस चरम कठोर सत्य को ठीक-ठीक महसूस नही कर पा रही थी। वह मानो उस समय भी यह समझ नही पा रही थी कि उसके पिता की मृत्यु का अर्थ है उसका भी सर्वनाश !

मासी माँ तब तक यह जान नही पायी थी कि उसके मृत पति का अन्तिम सस्कार करने के लिए अलकेश अपने तीन साथियो के साथ वहाँ आकर उपस्थित हो चुका है।

अलकेश ने पुकारकर कहा, 'मासी माँ, ओ मासी माँ ! हम सब आ गये है।'

उस महिला को तभी मानो होश आया, और होश आते ही वह फिर गला फाडकर रोने लगी।

अलकेश ने पुन. कहा, 'मासी माँ, आप उठिये तो ! हम सब मेसो मोशाय[1] को ले जाने के लिए आये है।'

1 मौसाजी।

किन्तु उस असहाय अवस्था मे कौन किसकी बात सुनता ! मृत्यु के इस आघात को मासी माँ तब भी स्वीकार करने के लिए तैयार नही थी।

यदि सचमुच देखा जाये तो मासी माँ ही क्यो, किसी के लिए भी शायद इतनी आसानी से मृत्यु को स्वीकार कर लेना सम्भव नही होता।

अलकेश ने तब पारुल की ओर ताककर कहा, 'तुम जरा अपनी माँ को पकडो तो, पारुल ! इस तरह रोने से तो कोई फायदा होगा नही। तुम मासी माँ को थोडी देर के लिए पकडकर रखो।'

पारुल अपनी जगह से उठी। उसके बाद माँ को दोनो हाथो से कस-कर पकडा उसने और कहा, 'माँ, रोना बन्द करो। उठो, अलकेश और उसके साथी पिताजी को ले जायेगे।'

किन्तु इससे भी कोई बात बनी नही। आखिर माँ को जबरदस्ती पकडकर हटाना पडा। तभी अलकेश तारक की ओर देखकर बोला, 'अरे, इस बार तुम पकडो। चलो, मेसो मोशाय को बाहर ले जाया जाये।'

उधर निखिल और तारापद अलकेश के पास से रुपये लेकर उस समय तक एक बाँस की खटिया और थोड़े-से फूल लेकर आ चुके थे। अलकेश और तारक ने मेसो मोशाय को खटिया पर लिटा दिया, चारो आदमियो ने मिलकर खटिया को कधे पर उठा लिया।

पीछे-पीछे पारुल आ रही थी। सदर दरवाज़े के पास आकर उसने पुकारा, 'अलकेश-दा !'

अलकेश ने पीछे घूमकर कहा, 'क्या ? कुछ कहना चाहती हो ?'

पारुल बोली, 'मेरा यह सोने का कगन ले जाओ तुम।'

'तुम्हारा कगन ? कगन किसलिए ?'

पारुल बोली, 'श्मशान मे तुम लोगो को क्या रुपयो की ज़रूरत नहीं होगी ? इसे बेचकर तुम लोग रुपयो की व्यवस्था कर लेना।'

अलकेश ने कहा, 'दुर्, पगली...!'

यह कहकर मानो उसने और कुछ भी कहने की ज़रूरत नही समझी। मेसो मोशाय को कंधो पर उठाकर वे चारों आदमी केवडातल्ला श्मशान की ओर बढ चले।

मासी माँ के घर से निकलकर रास्ते मे आने पर तारक को ऐसा मालूम हुआ मानो यह सब कल की ही घटना थी। सच कहा जाये तो उसी दिन पारुल के साथ उसका पहला परिचय हुआ था, जिस दिन मेसो मोशाय की मृत्यु हुई थी। ठीक परिचय न भी कहे, तो भी उसके साथ पारुल की पहली मुलाकात तभी हुई थी। उसके बाद कितने-कितने काड घट चुके, कितनी बार उस घर मे वह जा चुका था—इसका कोई हिसाब नही। पारुल के घर पर जाते रहने के कारण उसके और पारुल के बीच मेलजोल काफी गहरा हो चुका था।

श्मशान से आने के वाद फिर सभी उसी यदु भट्टाचार्य लेन मे मासी माँ के घर लौट आये थे। वही अलकेश निखिल, तारापद और खुद वह। उस समय अपराह्न का समय था; दोपहर के तीन बजे थे। जाडे की दोपहर! उस समय धूप शरीर को प्यारी लगती है। चारो व्यक्ति भीगे कपडो मे ही आकर हाजिर हुए थे। मासी माँ तब तक अचेत ही पडी थी, लेकिन पारुल तब तक शोक के वेग को मभाल चुकी थी।

अलकेश ने पूछा, 'कुछ खाया भी है आप लोगो ने या फिर सुबह से ही सब निराहार है?'

किन्तु यह प्रश्न पूछते ही मानो उसने महसूस किया कि यह प्रश्न करना उचित नही हुआ। जिस घर मे ताजा मौत हुई हो, उस घर के लोग खा कैसे सकते हैं? खासकर उस घर मे जिसमे कोई भी मरद-मानुष नही हो।

उसके वाद उसने कहा, 'तो आज खाना-वाना नही करना है क्या?'

पारुल बोली, 'मै नही जानती।'

अलकेश ने कहा, 'तुम नही जानोगी तो और कौन जानेगा? तुम्हे ही तो सव-कुछ जानना पडेगा। हम लोग तो तुम्हारे घर के कोई नही है। हम सव श्मशान मे तुम्हारे पिताजी का दाह-सस्कार कर आये है। इससे अधिक और तुम सब के लिए हम क्या कर सकते है, वोलो?'

पारुल इस वात का ही भला क्या जवाब देती। शायद इसीलिए वह चुप ही रह गयी थी। अलकेश की वात का कुछ भी उत्तर नही दिया था उसने।

तारक, निखिल और तारापद—वे तब भी भीगे कपडो मे काँप रहे

थे। और उस घर को चारो ओर से असहाय अवस्था घेरे हुए थी, उसे वे स्वय अपनी आँखो से देख रहे थे। 'दरिद्र बान्धव भडार' के लडके और भी बहुत-से गरीबो के घर देख चुके थे, परन्तु सब-कुछ होने पर भी कुछ भी न होने की ऐसी अवस्था उन्होने पहले कभी नही देखी थी। कालीघाट मे कितने ही लोगो के पास सिर छिपाने लायक छत तक नही। किन्तु पारुल का तो फिर भी अपना एक मकान था। चाहे टूटा-फूटा हो या पुराना हो—मकान तो था ही आखिर। वह भी कलकत्ता मे कितने लोगो के पास होता है ?

फिर भी सबसे अधिक ध्यान आकृष्ट करने वाली अगर कोई चीज थी तो वह पारुल स्वय ही थी। अपने पिता की मौत पर भी जो लडकी हताश और निराश हुए बिना माथा ऊँचा किये सीधी खड़ी रह सकती हो, उसकी बहादुरी—और असहायता—का क्या कहना !

अलकेश ने फिर पूछा, 'तो फिर आज तुम क्या खाओगी ?'

पारुल ने इस बात का भी कोई जवाब नही दिया। जिस तरह चुपचाप खडी थी, उसी तरह खडी रही।

अलकेश बोला, 'अरे, मेरी बातो का कोई उत्तर क्यो नही दे रही हो ?'

पारुल के पास शायद इस बात का भी कोई जवाब नही था। इसीलिए अलकेश की ओर वह गूँगी-सी देखती रही।

अलकेश तब मानो स्वय मन-ही-मन कह उठा—इन सब को लेकर तो देख रहा हूँ कि बडी मुश्किल आ खडी हुई है।

उसके बाद तारक और उसके साथियो की तरफ देखकर वह बोल उठा, 'अरे, तुम सब घर चले जाओ। तुम सब भला और कितनी देर तक भीगे कपडो मे यही खडे रहोगे ? तुम सब बीमार हो जाओगे इस तरह तो। जाओ, तुम सब लौट जाओ।'

इसके बाद तारक तथा उसके साथी और ज्यादा वहाँ रुके नही। निखिल और तारापद के साथ तारक भी अलकेश को वहाँ छोडकर अपने घर चला आया।

इस समय कलकत्ता मे एक ऐसी हवा वह रही थी कि कब किसके भाग्य से क्या घटेगा—यह पहले से बताना किसी के लिए भी सम्भव नही था। हठात एक-एक दिन आधी रात मे पुलिस किसी के भी घर मे आकर हाज़िर होती और घर के किसी भी नयी उम्र के लड़के के हाथो मे हथकडी पहना देती और उसे पकडकर ले जाती। किसी को खबर तक नही होती कि उसे पकडकर पुलिस वाले ले कहाँ गये हैं! मुहल्ले-मुहल्ले मे जासूस घूमते रहते दिन-रात। सादी पोशाक मे पुलिस के आदमी चाय की दुकान मे, रास्ते मे और खेल के मैदान मे लडको के साथ घुल-मिल जाते, और इस तरह घुल-मिलकर वे लडको की गतिविधियो पर नज़र रखते।

अलकेश कहता, 'किसी भी अनजान आदमी से तुम मेल-जाल हरगिज़ नही रखोगे।'

इसीलिए अनजान आदमी को देखते ही तारक, निखिल, तारापद—सभी सावधान हो जाते। किन्तु अलकेश की बुद्धि भी क्या खूब थी! और वह 'दरिद्र बान्धव भडार' के काम मे ही व्यस्त रहता। गरीब गृहस्थो के घर मे जाकर वे चावल दे आते। आवश्यकता होने पर वे किसी-किसी घर के मृत व्यक्ति को कधा देकर श्मशान भी ले जाते और उसके दाह-सस्कार की व्यवस्था भी करते। इसके अलावा कई बँधे हुए घरो से चन्दा वसूल करने का काम तो था ही।

कितनी ही बार तारक भी साथ मे जाता। अलकेश जाकर कहता, 'आप लोगो का इस महीने का 'दरिद्र बान्धव भडार' का चन्दा?'

यदि नये लोग होते तो वे बहस करते।

पूछते, 'चन्दा लेकर तुम सब क्या करते हो?'

अलकेश जवाब देता, 'गरीब लोगो की सहायता करते हैं हम सब। अनेक दुखी विधवाएँ कपडो के अभाव मे सडक पर निकल भी नही पाती, हम खरीदकर उन्हे कपडे दे आते हैं। उनके बच्चो के लिए भी हम कमीज़, पतलून ख़रीद देते हैं। साथ ही हम सब चावल भी उन्हे दे आते है।'

यह उत्तर सुनकर भी कितनो का ही सन्देह दूर नही होता। वे पूछते, 'स्वदेशी आन्दोलन वगैरह मे तो तुम लोग नही हो? बम-वम के धन्धे मे तो नही हो?'

अलकेश कहता, 'स्वदेशी आन्दोलन से हमें क्या लेना-देना ?'

'हॉ, उस सब के चक्कर मे बिलकुल ही नही पडना तुम, समझे ? अगर छोटे लोगो के उन सब कामो मे तुम सब पडोगे तो फिर हम तुम्हे चन्दा-वन्दा कुछ भी नही देगे ।'

अलकेश कहता, 'नही साहब, हम सब वैसे छोटे आदमी नही। हम तो दीन-दुखियो की सेवा को छोडकर और कुछ भी नही करते ।'

'तो फिर ठीक है ।'

यह कहकर घर के भीतर से वे चार-एक आने लाकर अलकेश के हाथ मे रख देते। उन कुछेक पैसो को अपनी जेब के हवाले कर वह बढकर एक और मकान के सामने जा पहुँचता । इसी तरह कही भी किसी के घर के मृत व्यक्ति के दाह-सस्कार का इन्तज़ाम करना, किसी के घर पर चावल पहुँचाकर आना या फिर किसी घर के टायफायड के रोगी की सेवा-शुश्रूषा करना—यह सब चलता रहता ।

प्रफुल्ल-दा ने कहा था, 'देश यानी देश के मनुष्य ! उन मनुष्यो की सेवा करने का नाम ही है देश-सेवा ।'

वे फिर कहते, 'इस समय इन्ही कामो को करके हाथ पक्का करो। उसके बाद जब समय आयेगा, मैं तुम लोगो को और दूसरे काम भी सौपूँगा।'

दूसरे काम—यानी गोली-बारूद और बम। उन सभी कामो को करने के लिए काफी समझ-बूझ और ज़िम्मेवारी चाहिए। पारुल के पिताजी की मृत्यु के बाद ही और एक घर का काम बढ गया था उनके दल के लिए। पृथ्वी पर करने लायक इतने काम है—यह बात तारक को उस समय तक मालूम न थी। और इसके अलावा पृथ्वी पर मनुष्य इतने अभाव-ग्रस्त भी है, उस समय तक वह यह भी नही जानता था ।

और ठीक उसी समय जैसे सारे देश मे आग भडक उठी। पुलिस की निगरानी और भी कडी हो गयी ।

अलकेश का माथा तब ठीक नही था। मेदिनीपुर की तरफ ही ज्यादा गोलमाल था । प्रतिदिन पुलिस आकर 'दरिद्र बान्धव भडार' के लडको पर नज़र रखने लगी। वे कहाँ जाते है, क्या काम करते है, किसके साथ

मिलते है—इस सबकी वे सब लुक-छिपकर ख़बर लेते, और उसके बाद एक दिन घर पर आकर उन्हे गिरफ्तार करके ले जाते।

तारक को याद है कि उस दिन उस घटना के बाद घर आने पर ही माँ बक-झक करने लगी थी।

बोली, 'तुम कहाँ गये थे, ज़रा सुनूँ तो! कपडे-लत्ते भिगोकर कहाँ से आये हो?'

तारक ने जवाब दिया, 'श्मशान गया था।'

'श्मशान? श्मशान क्यो गये थे? किसको फूँकने गये थे?'

तारक ने कहा, 'सो तुम पहचान नही सकोगी, माँ! घर के एकमात्र मरद थे—वही चल बसे थे। इसीलिए हम सब श्मशान मे उनका दाह-सस्कार करने के लिए गये थे।'

'उन्हें देखने वाला कोई नही और तुम्हे देखने वाले शायद बहुत-से लोग हैं! जब मैं मरूँगी तब मेरा दाह-सस्कार कौन करेगा, बता सकते हो? तुम्हारा कौन है, ज़रा बतलाओ तो?'

तारक ने कहा, 'इन सब बातो का जवाब देने का समय अभी नही है। तुम इस समय मुझे खाना दोगी कि नही, यह बतलाओ। मुझे बहुत ज़ोरो की भूख लगी है।'

माँ बोली, 'क्यो, खाने के समय ही शायद घर की याद आती है! अगर इतनी ही भूख लगी है तो जिनके घर के मुर्दे को फूँककर आये हो, उन्ही के घर पर खाकर भी आ सकते थे। उन्होने खिलाया नही क्या?'

तारक ने कहा, 'तुम नही जानती माँ, उनका कोई भी नही। घर मे एक बालिग या नाबालिग लडका तक नही। जो बचे हैं उनमे है दिवगत की बूढी विधवा और एक छोटी लडकी। बुढिया तो अपने पति के शोक मे अचेत पडी है और लडकी की हालत अगर एक बार तुम देखती तो...।

'दरकार नही है मुझे देखने की। मुझे कौन देखेगा—इसी का कुछ ठीक नही, और मै चलूँगी उन्हे देखने! मैं भात लाकर दे देती हूँ। भात खाकर फिर देशोद्धार करने निकल पडो!'

तारक अपनी माँ की इन सब बातो को सह लेने का आदी हो चुका

था। माँ जितना चाहे बके—उसे लेकर माथा-फच्ची नही करनी है। अलकेश बता चुका है—'माँ-बाप का तो काम ही है बहकना, नाराज होना। इस वजह से देश-सेवा का काम तो बन्द नही किया जा सकता।'

तारक खाना समाप्त कर भी नही पाया था कि बाहर से अलकेश की आवाज़ आयी, 'तारक, अरे तारक...!'

खाते-खाते ही तारक ने चिल्लाकर जबाब दिया,''आ रहा हूँ।'

अलकेश की आवाज़ माँ भी सुन चुकी थी। सुनते ही वह बोली, 'वे हरामजादे फिर बुलाने आ गये ..!'

उसके बाद वह फिर बोली, 'तुम खाना खा लो, मै बाहर जाती हूँ।'

यह कह कर उसने सीधे जाकर सदर दरवाजा खोला और देखा कि उसके पुत्र का वही दोस्त खडा था। माँ उसे कुछ भी कहने का अवसर दिये बिना कहने लगी, 'बेटे, तुम किस तरह के लडके हो—बोलो तो ! तुम सब खुद तो जहन्नुम मे जा ही रहे हो, लेकिन भला मेरे बेटे को भी उधर क्यो ढकेल रहे हो ? तुम्हारा मतलब क्या है, ज़रा सुनूँ तो ! गरीब के लडके का सर्वनाश करके तुम्हे क्या मिलेगा, ज़रा बतलाना तो !'

अलकेश ने कहा, 'नही ताई, हम लोग भला तारक का सर्वनाश करेगे —यह आप क्या कह रही है ? हम सब देश का काम कर रहे है। हम सब तो यही चाहते है कि गरीबों की भलाई हो। गरीबो की भलाई ही हमारा लक्ष्य है ..।'

माँ को उसकी बात सुनकर और भी क्रोध आया।

बोली, 'बेटे, गरीबो की इतनी ज्यादा भलाई करने की ज़रूरत नही। तुम सब खूब भलाई कर रहे हो ! कहाँ रात तीन बजे खोका को बुलाकर ले गये थे और अब शाम को उसे घर छोडा है ! तुम्हारी दुहाई है, अब खोका को ज़रा रिहाई दो। इतना देशोद्धार करने पर तो मेरा लडका मर मिटेगा। तुम सब क्या यही चाहते हो कि इस विधवा का इकलौता बेटा नही रहे ? तभी क्या तुम्हारी मनोवाछा पूर्ण होगी, बाबा ?'

अलकेश सम्भवत. इस बात का कोई जवाब देता, लेकिन इसके पहले ही तारक भीतर से दौड़ कर चला आया और अपनी माँ को चुप करा दिया।

वह कहने लगा, 'तुम क्या बेकार की बाते कर रही हो माँ, चुप रहो। जो मेरे मन मे आयेगा, मै वही करूँगा। मुझे मना करने वाली तुम कौन होती हो?'

और फिर माँ रुक नही पायी। बोली, 'खोका, तुमने आज मुझसे यह बात कह दी! मै तुम्हारी माँ हूँ और मुझसे यह सब कहने मे तुम्हे कोई भी सकोच नही हुआ? क्या मैं तुम्हारा भला नही चाहती?'

तारक ने जवाब दिया, 'मेरे भले कि बात तुम्हे अब नही सोचनी होगी, माँ! अपना भला-बुरा समझने लायक मेरी उम्र हो चुकी है। तुम घर के भीतर जाओ। मै चला...।'

'चला, माने?'

'हाँ, मै जा रहा हूँ! अलकेश से मुझे काम है।'

यह कहते-कहते तारक तब तक जूते पहनकर घर से निकल आया। माँ ने भी पीछे से गला फाडकर कहा, 'खोका, तुम जा रहे हो—जाओ। लेकिन यह भी बोल रखती हूँ कि घर लौटने पर तुम मेरी लाश पाओगे।'

उसकी बात पर कान न देते हुए तारक ने अलकेश से कहा, 'क्या रे, फिर क्या हुआ? और कुछ खबर है क्या?'

अलकेश ने कहा, 'तुम्हारी माँ मेरे ऊपर बहुत नाराज़ हो गयी है न?''

तारक ने कहा, 'माँ की बात तुम छोड दो। माँ हर समय इसी तरह कहती रहती है। इस समय तुम फिर क्यो लौट आये हो, पहले यह बात बतलाओ।'

अलकेश बोला, 'सुना है कि मेदिनीपुर मे गोलमाल शुरू हो गया है।'

'अच्छा, ऐसी बात है?'

'हाँ।'

'तो फिर प्रफुल्ल-दा इस समय कहाँ है?'

'मुझे क्या पता? निश्चय ही मेदिनीपुर मे होगे। मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि मैं मेदिनीपुर जा रहा हूँ।'

'तुम मेदिनीपुर चले जाओगे, तो फिर यहाँ के इतने कामो की देख-भाल कौन करेगा?'

अलकेश ने कहा, 'क्यो, तुम करोगे! क्या तुम काम चला नही पाओगे ?'

उस दिन तारक की उस बात का उत्तर देने मे कुछ समय लगा था। सचमुच इतने घरो से नियमित रूप से चन्दा वसूल करना, उसे खाते मे जमा करना, चावल की व्यवस्था करना और फिर उस चावल को निर्दिष्ट घरो मे बाँट आना ! कोई आसान काम था क्या भला ?

'अरे, मै कोई हमेशा के लिए तो जिन्दा रहूँगा नही।'

'क्यो ? क्यो नही ज़िन्दा रहोगे तुम ?'

अलकेश ने जवाब दिया, 'अरे, मै किस दिन पुलिस की गोली खाकर मर जाऊँगा, इसका क्या कोई ठिकाना है ? उस समय फिर तुम्हे ही तो इस सबको चलना पडेगा। इतने दिनो से इतने प्रकार के काम तुम्हे मैंने सिखाये किसलिए है।'

नारक ने कहा, 'तो क्या तुमने सोच रखा है कि तुम अकेले ही पुलिस की गोली खाकर मर जाओगे और मैं बचा रहूँगा ?'

,क्यो, यदि तुम मारे गये तो फिर निखिल है, तारापद है। उन्हे सारे काम सिखा जाना—वे देखेगे सारा काम !'

उन दिनो किस लडके के भाग्य मे क्या लिखा था—यह पहले से बतलाना किसी के लिए भी सम्भव नही होता। कारण यह था कि समूचे बगाल मे उस समय पुलिस के आदमी घूमते-फिरते। उनका काम ही था—खबरे इकट्ठी करना और ऐसे लडको की हरकतो पर नजर रखना।

कौन किस घर का लडका है, कौन किस-किस लडके के साथ मिलता-जुलता है अथवा कौन दूसरे लडको के साथ क्या-क्या बहस करता है—इन बातो का पता लगाना ही उनका काम था।

हठात अलकेश ने कहा, 'सुनो, तुम्हे किस लिए बुलाया है, यह बनलाता हूँ। मैं कल ही मेदिनीपुर जा रहा हूँ।'

'कल ही ? क्यो ?'

अलकेश ने कहा, 'प्रफुल्ल-दा ने आज मुझे खबर भेजी है। वहाँ बहुत गोलमाल चल रहा है। मुझे जितनी जल्दी हो सके, वहाँ जाना ही होगा।'

'तो फिर यहाँ के काम ?'

'यहाँ के काम तुम सब चलाओगे। क्यों, नही चला पाओगे क्या ? आखिर इतने दिनो तक तुम लोगो ने मुझसे क्या काम सीखा ? छोडो उन बातो को, मुझे वहाँ जाना ही होगा। ये रुपये तुम अपने पास रखो—सत्तर रुपये है।'

'रुपये लेकर क्या करूँगा ?'

वे चलते-चलते एक एकान्त स्थान मे आ गये थे वे। पास मे ही गगा थी। एक जगह कई साधु धूनी जलाकर आग ताप रहे थे।

अलकेश ने कहा, 'इस तरफ चले आओ। वे साले शायद जासूस है...।'

'सचमुच ?'

'हॉ, आजकल पुलिस के बहुत-से आदमी साधु का रूप धारण कर शरीर पर भभूत लगाये शहर मे घूमते-फिरते है। उनको देखते ही हट जाना।'

यह कहकर दोनो ही दूसरी तरफ चलने लगे। बाजार की ओर आने पर ही कुछ निरापद-सा महसूस हुआ उन्हे। शाम होने पर भी बाज़ार उस समय पूरा जमा हुआ था। अनेकानेक लोग ज़रूरत की चीजो की खरीद कर रहे थे।

अलकेश बोला, 'एक काम करो तुम। दो रुपये के रसगुल्ले खरीदकर दे रहा हूँ। उन्हे लेकर उन लोगो के घर पर दे आओ।'

'किन लोगो के घर पर ?'

'अरे, उसी घर पर, जहॉ के मृत व्यक्ति का दाह-सस्कार करके हम सब लौटे है।'

तारक ने पूछा, 'आज रात मे ही ?'

'हॉ, आज रात मे ही। क्या तुम्हे नही मालूम कि आज दिन-भर उन लोगो ने कुछ भी नही खाया ?'

तारक ने कहा, 'तो फिर तुम भी चलो न !'

'मैं कैसे जाऊँ ? कल मेदिनीपुर जाना है, अभी से सारी व्यवस्था नही करनी होगी क्या ? वहाँ कैसा भयानक काड घट रहा है! टेलीफोन के तार

काट दिये गये है; थानो और पोस्ट-ऑफिसो को जलाकर खाक कर दिया गया है। सच कहा जाये तो मेदिनीपुर इस समय स्वाधीन देश हो गया है। वहाँ के प्रेसिडेट हुए है—सतीश सामन्त महाशय।'

यह खबर सुनकर तारक चमक उठा। समस्त भारतवर्ष मे उस समय आग लगी हुई थी। लेकिन मेदिनीपुर का इतिहास तो बिलकुल ही अलग था। बडे-बडे नेता उस समय जेल मे थे। मेदिनीपुर के नेता-लोग उस समय अँगरेज़ो की नजर बचाकर अज्ञातवास मे रह रहे थे और लुके-छिपे ही आन्दोलन चला रहे थे।

हठात अलकेश ने कहा, 'और अब नही। मैं चलता हूँ।'

'क्यो रे ? हठात क्या हुआ ?'

अलकेश ने जवाब दिया, 'पीछे वही साला आ रहा है, रे !'

तारक पीछे मुडकर देखना चाहता था, पर अलकेश ने उसे मना कर दिया। उसने कहा, 'पीछे मुडकर मत देखो। उस साले को शक हो जायेगा।'

तारक की समझ मे तब भी नही आया कि अलकेश किसकी बात कर रहा था।

अलकेश ने खुद ही कहा, 'वही, वह जो कलकत्ता मे पुलिस का नया साहब आया है, वही साला सिमसन...।'

वही सिमसन ! उसी के ऊपर सम्भवतः विप्लवियो पर नज़र रखने का दायित्व था। उस समय दिल्ली-बम्बई की तरह कलकत्ता की पुलिस मे भी खूब झझट चल रहा था। पुलिस के जो भेदिये थे वे एक-एक कर गुप्त खबरे पुलिस को देते थे और उनसे मोटी रकमे पाते थे इनाम मे। उस समय सब पर सन्देह करना ही सब का काम था। बस-ट्राम मे कोई भी किसी के साथ दिल खोलकर बाते नही करता। जब-तब रास्ते के बिजली के बल्ब बुझ जाया करते। उस समय बिलकुल ही घन-घोर अधकार छा जाता। कौन किस समय रास्ते के बिजली के तार या टेलीफोन के तार काटकर चला जाता, किसी को पता भी नही चलता। और पता चलने पर भी कोई किसी को बतलाता नही। आँखो के सामने अगर कोई किसी को तार काटते देखता तो तुरत ही वह वहाँ से खिसक

जाता। अन्यथा पीछे पुलिस के दरबार मे उसे गवाही-साक्षी के झमेले मे पडना होता।

एक गली के भीतर जाकर पुन. एक दूसरी गली मे घुसने पर मानो अलकेश को कुछ राहत मिली।

वह कहने लगा, 'इस बार वह साला हमे और खोज नही पायेगा। बेटा रोज मेरा पीछा करता है। अब एक दिन उसे ठिकाने लगाना ही होगा।'

इसके बाद एक मिठाई की दुकान मे जाकर उसने दो रुपये के रसगुल्ले खरीदकर तारक को दिये। उसने कहा, 'जाओ, उन लोगो को ये रसगुल्ले दे आओ। आज के लिए तो यही सही। उसके बाद तुम जो भला समझो, करना। और तब तक मैं मेदिनीपुर से घूमकर वापस आ जाऊँगा।'

उसके बाद उसने कहा, 'चलो, अब निखिल के घर चले।'

अलकेश उन लडको मे से एक था जो दूसरो का भला-बुरा देखने के लिए ही ससार मे जन्म लेते है। अन्यथा जो लडका पढने-लिखने मे इतना तेज था, जिसका अपना रहन-सहन कुल मिलाकर अच्छा ही था, वह लडका यदि चाहता तो सुख-सुविधा से अपनी जिन्दगी बसर कर सकता था— स्वार्थ-सिद्धि को ही मनुष्य-जीवन का गौरव मान सकता था।

और यही तो करते थे उन दिनो के प्राय सौ फीसदी लोग।

हर समय तारक अलकेश की उदारता देखकर मूक हो जाता।

तारक अलकेश से पूछा करता, 'तुम दूसरो की इतनी फिक्र क्यो किया करते हो? अपनी खुद की फिक्र क्यो नही करते? ऐसा करने मे तुम्हे क्या लाभ होता है?'

बार-बार इस तरह की बात पूछी जाने पर अलकेश अन्तत झल्ला उठता। कहता, 'तुम कोई दूसरी बात शुरू करो न, ये सब बाते मुझे अच्छी नही लगती।'

तारक कहता, 'क्यो, दूसरी बातें क्यो करूँगा ? मुझे इस बात का जवाब तुम क्यो नही दोगे ?'

अलकेश आख़िरकार इस ज़बरदस्ती से बेचैन होकर कहता, 'दुर् ! इस तरह की बेकार की बातो के लिए मेरे पास समय नही है ।'

तारक पूछता, 'पारुल की बाते सोचते समय तो तुम्हे समय का अभाव नही होता ।'

इस बात का उत्तर तारक को अलकेश से कभी भी मिला नही । हमेशा से ही अलकेश ने तारक को जो-कुछ आदेश दिये, तारक उन्ही आदेशो का पालन करता आया है । अलकेश की बातो के सामने खुद उसकी माँ की बाते भी हमेशा उसके लिए तुच्छ होकर रह गयी है ।

माँ कहती, 'तुम उस आवारा लडके से क्यो मिलते-जुलते हो, बोलो तो ? उस लडके ने तुम्हारा दिमाग ख़राब कर दिया है ।'

एक दिन अलकेश उसे बुलाने के लिए घर पर आया था । माँ खुद बाहर जाकर अलकेश के सामने खडी हो गयी थी ।

उसने कहा था, 'तुम क्यो आते हो तारक के पास, बोलो तो ? क्या है तुम्हारा उद्देश्य ? उसका दिमाग चाटकर तुम्हे क्या लाभ होगा, सुनूँ तो ? मेरी देख-भाल कौन करेगा, इसका तो ठिकाना है ही नही और तुम चले हो पराये लोगो का भला-बुरा देखने ! कहाँ, एक बार भी तो नही सोचते कि मै किस तरह गृहस्थी चला रही हूँ—हमे खाने के लिए क्या मिलता है ? मालूम है, कल हमारे घर मे चूल्हा जला ही नही !'

अलकेश ने कहा था, 'कहाँ ताई, तारक ने तो मुझसे कुछ भी नही कहा ।'

माँ ने कहा, 'ये बात क्यो कहेगा वह ? यह बात कहने पर मुझे सुख जो मिल जायेगा ! वह लडका तो नही चाहता कि मुझे सुख मिले । वह लड़का यदि मेरी इतनी चिन्ता ही करता तो फिर रोना ही किस बात का था ?'

अलकेश ने पूछा, 'तो तारक कहाँ है ?'

'क्या तुम सोचते हो कि वह एक क्षण के लिए भी घर मे रहता है ? क्या पता, तुमने उसके कान मे कौन-सा मन्तर फूंका है ? वह जाने कहाँ-

कहाँ देशोद्धार करता फिर रहा होगा ! देशोद्धार करके वह मुझे सोने की सीढी पर चढायेगा...! '

अलकेश ने कहा, 'आप इतनी नाराज़ क्यो है, ताई ? देश का काम करना क्या बुरा है ? देशबन्धु सी० आर० दास, महात्मा गाधी, सुभाप-चन्द्र बोस, जे० एम० सेनगुप्त और लाला लाजपतराय जैसे व्यक्तियो ने देश के लिए कितना त्याग किया है, कहिये तो ! वे देश के लिए कितनी बार जेल गये है और उन्हे कितनी तकलीफे उठानी पडी है, वे आपको मालूम तो होगी !'

'उन लोगो की बात छोड दो । वे है बडे-बडे घरानो के बेटे । उन लोगो के साथ मेरे लडके की क्या तुलना ! गरीब लोगो के लडको के बारे मे कोई सोचता भी है ! किस तरह उनकी घर-गृहस्थी चलती है, क्या इसकी खबर रखने वाला भी कोई है ? उँह, बहुत देखे खबर रखने वाले !'

यह सब कहते-कहते माँ की आँखो से बार-बार आँसू छलक पडते । तब फिर अलकेश वहाँ और रुकता नही । एकबारगी ही वहाँ से निकल पडता ।

रात मे घर आने पर ही माँ पूछती, 'हाँ रे, तुम दिन-भर कहाँ गायब थे ?'

तारक कहता, 'मै कहाँ था, यह जानने की तुम्हे क्या जरूरत है ?'

माँ कहती, 'मुझे भला क्या जरूरत होगी ? वह छोकरा आकर पूछ रहा था, इसीलिए मै कह रही थी ।'

'वह छोकरा, मानी ? किसकी बात कह रही हो ?'

माँ कहती, 'बेटे, मै इतना तो किसी का नाम-धाम नही जानती ।'

'कैसा था चेहरा-मोहरा ?'

'देखने मे गुडो-जैसा !'

तारक चुप हो जाता । कहता, 'गुडा ? गुडा माने ?'

माँ कहती, 'तुम्हारा कोई भी दोस्त क्या देखने मे भले आदमी के लडके-जैसा है, कहो तो ? सभी तो नीच है—गुडे !'

तारक को गुस्सा आ जाता । कहता, 'मेरे दोस्तो को यदि इस तरह गुडा समझती हो तो फिर मैं भी गुडा हूँ । ठीक है, तो फिर मैं भी इस घर

से चला जाता हूँ । तुम अकेली इस घर मे मरो !'

'तुमने मुझे मरने को कहा ? तुम्हारे मुँह से आज यही बात सुनने के लिए ही तो मै अब तक ज़िन्दा थी ।'

तारक और भी उत्तेजित हो उठता ।

कहता, 'क्यो ज़िन्दा हो तुम ? किसके लिए जिन्दा हो ? किसने तुम्हे ज़िन्दा रहने के लिए कहा है ?'

यह कहकर वह वहाँ और रुका नही । सीधे अपने कमरे मे जाकर भीतर से दरवाज़ा बन्द कर लिया । बाहर से शायद माँ ने कई बार दरवाज़ा खटखटाया था । किन्तु तारक अडिग और अचल रहा । माँ के इतना पुकारने पर भी उसने कुछ भी उत्तर नही दिया । सारी रात बिना खाये ही नीद मे डूबा रहा । दिन-भर उसे 'दरिद्र बान्धव भंडार' के काम के लिए दौड-धूप करनी पड़ती । इसीलिए जब वह काफी दिन चढे बिछौने से उठा तब कमरे से बाहर आकर उसने देखा कि वहाँ कोई भी नही था ।

माँ हमेशा उसके सामने आकर जलपान बढा दिया करती । उस दिन ऐसा नही हुआ । हमेशा ही उसके बिछौना छोडने के पहले ही घर-आँगन झाड-पोछकर साफ-सुथरा कर दिया जाता था । लेकिन उस दिन ऐसा कुछ नही हुआ । चारो तरफ एक अजीब चुप्पी छायी हुई थी । घर मे उस दिन उसके सिवाय और कोई भी है, ऐसा नही जान पडता था ।

उसने एक बार अपनी माँ के कमरे की तरफ नज़र डाली । कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द था । तो क्या अभी तक माँ की नीद टूटी नही ?

न सही । इतना देखने-सुनने का समय उसके पास कभी रहता ही नही । सुबह उठते ही बाज़ार जाना पड़ता था प्रतिदिन । वह माँ से कहता, 'माँ, बाज़ार के लिए पैसे दो ।' बाजार से कुछ भी कच्चा-पक्का खरीदकर लाकर घर मे फेकते ही मानो उसका काम खत्म हो जाता । उसके बाद वह घर आये तो ठीक, न आये तो भी ठीक । परिवार के प्रति तारक का कर्त्तव्य वही तक था ।

हठात तारक ने जाने क्या सोचा । दरवाज़े पर उसने बाहर से धक्का दिया । सचमुच दरवाजा भीतर से बन्द था । इतनी देर करके माँ कभी भी नही उठती ।

तारक ने फिर पुकारा, 'माँ, माँ...!'

कोई भी जवाब नही मिला।

तारक ने पुकारा, 'माँ, दरवाज़ा खोलो। ओ माँ...!'

किन्तु वहाँ था ही कौन ? तारक के कठ से निकले हुए शब्द बन्द दरवाज़े से टकराकर ही लौट आये।

घर के बाहर से हठात अलकेश की आवाज़ सुनायी पड़ी, 'तारक...!'

तारक ने बाहर आकर अलकेश को देखते ही कहा, 'भाई, ज़रा भीतर तो आओ एक बार। माँ के कमरे का दरवाज़ा किसी भी तरह खुल नही रहा है।'

'क्यो ? खुल क्यो नही रहा ? क्या हुआ है ?'

तारक ने कहा, 'क्या पता, क्या हुआ है ! कुछ भी समझ नही पा रहा हूँ।'

अलकेश भी दरवाज़े पर धक्का देने लगा। किन्तु तब भी किसी ने उत्तर नही दिया।

'क्या कहा था तुमने ? ताई के साथ क्या तुम्हारी कुछ कहा-सुनी हुई थी ?'

'हाँ।'

'क्या हुआ था ? झगडा ?'

'हाँ।'

'किस बात के लिए झगडा हुआ था ? तुमने झगडा क्यो किया ?'

तारक ने कहा, 'माँ ने तुम्हे गुडा कहा था।'

तारक की बात सुनकर अलकेश ठहाका मारकर हँस पडा। कहने लगा, 'तुम ठहरे बिलकुल बुद्धू। मुझे उसने गुडा कहा और इसीलिए तुमने माँ के साथ झगडा कर लिया !'

तारक ने कहा, 'तुम्हे गुडा कहने पर भला मैं झगडा नही करूँगा क्या ?'

'तो मुझे अगर गुडा कह ही दिया तो ऐसा क्या हो गया ! तुम्हारे लिए मैं बडा हूँ या तुम्हारी माँ ? और फिर गुडा कह देने से ही तो कोई मैं गुडा हो नही जा रहा हूँ। दुर् ! सचमुच तुम पूरे गधे हो ! तुम्हारे

मन मे चाहे जो कुछ भी हो, तुम्हे वह सब कहने की क्या पडी थी ?'

तारक ने कहा, 'लेकिन मेरे दोस्त को गुडा कहने पर क्या मुझे गुस्सा नही आयेगा ?'

अलकेश ने कहा, 'देख रहा हूँ कि अक्ल के मामले मे तुम कच्चे हो !'

यह कहकर वह फिर दरवाज़े पर धक्का देते हुए पुकारने लगा, 'ताई, ओ ताई...दरवाज़ा खोलो !'

उसके बाद उसने तारक से कहा, 'कमरे मे क्या खिडकी-विडकी नही है ?'

'है, बाहर की तरफ।'

अलकेश बाहर की तरफ गया। वह खिडकी भी भीतर से बन्द थी। लेकिन कुछ ज़ोर लगाने पर खिडकी तडाक से खुल गयी। और उसके बाद दोनो ने ही उचककर भीतर की ओर देखा। गले मे कपडे का फन्दा डाले माँ छप्पर के काठ से झूल रही थी।

आज कितने दिनो के बाद उन सारी घटनाओ की नये सिरे से व्याख्या करने का दिन आया है। वह युग भी नही है और उस युग के लोग-बाग भी आज नही है।

फिर भी अनेक दिनो के बाद जब कलकत्ता मे उस युग के पुलिस के आदमी—सिमसन साहब—फिर लौटे हैं तो उन दिनो की उन सारी घटनाओ की नयी व्याख्या करने का प्रयोजन भी आवश्यक हो गया है।

तारक उस दिन फिर उस मकान के सामने जाकर दरवाज़ा खटखटाने लगा था।

वह पुकारने लगा, 'मासी माँ, मासी माँ ..दरवाज़ा खोलिये !'

सुबह जिस घर का गृहस्वामी मर चुका हो, उस घर का उस समय निःशब्द रहना स्वाभाविक ही है। शायद सभी सो गये थे, अथवा असहाय की तरह दरवाज़े-खिडकियाँ बन्द करके असहाय हो चुके थे।

तारक ने फिर पुकारा, 'मासी माँ, एक बार दरवाज़ा खोलिये ! मै

तारक हूँ, आपके लिए कुछ जलपान लाया हूँ।'

आखिर दरवाजा खुला। तारक ने देखा कि उस लडकी ने ही दरवाजा खोला था।

उसने पूछा, 'क्यो, तुम्हारा ही नाम पारुल है न?'

लडकी ने स्वीकृति-सूचक रूप मे सिर हिलाया और कहा, 'हाँ!'

तारक ने फिर पूछा, 'मासी माँ कहाँ है?'

पारुल ने कहा, 'माँ को अभी तक होश नही आया है।'

तारक ने कहा, 'चलो तो, मैं चलकर एक बार मासी माँ को देख लेता हूँ।'

तारक को याद है कि उस दिन मासी माँ को होश मे लाने के लिए उसे किन-किन कठिनाइयो का सामना करना पडा था! पति की मृत्यु ने मासी माँ को विलकुल अवश कर दिया था उस दिन। बहुत पुकारने पर मासी माँ ने कहा था, 'कौन? कौन हो तुम, बाबा?'

रोते-रोते उनका कठ अवरुद्ध हुआ जा रहा था।

'मुझे आप पहचान नही पायेगी—मासी माँ! मैं इस मुहल्ले के 'दरिद्र बान्धव भडार' का लडका हूँ। आप उठकर वैठिये, इतना घबराने से कैसे चलेगा? इस तरह टूट मत जाइये। क्या कोई मनुष्य हमेशा के लिए जीवित रहता है?'

'किन्तु बाबा, हमारा तो कोई नही है। हम लोगो की देख-भाल कौन करेगा? मैं किसके भरोसे बची रहूँगी?'

तारक ने कहा, 'ऐसी बात आप क्यो कह रही है, मासी माँ? आपकी पारुल है, पारुल की शादी कर देने के बाद आपका दामाद होगा। उस समय आपका दामाद ही आपकी देख-भाल करेगा।'

'किन्तु उसके पहले ही अगर मैं मर गयी तो? तो फिर पारुल का क्या होगा, बाबा?'

तारक ने सान्त्वना देते हुए कहा, 'इसीलिए तो हम लोगो का 'दरिद्र बान्धव भडार' है। मुहल्ले के गरीब लोगो की देख-भाल करने के लिए ही तो प्रफुल्ल-दा ने यह 'दरिद्र बान्धव भडार' बनाया है।'

'वे कौन हैं?'

तारक ने कहा, 'आप उन्हे पहचानेगी नही, मासी माँ ! वे एक महा-पुरुष है । वे गरीबो के माँ-बाप है । वे हमे बोल गये है कि गरीब लोगो की सेवा ही है मनुष्य का धर्म । हम लोगो ने उनके कहने के अनुसार ही 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की है । आप फिक्र न करे । आपको जब भी जिस चीज़ की आवश्यकता हो, हमे कहिये । हम सब हमेशा आपकी सेवा के लिए प्रस्तुत रहेंगे । अब थोडा-बहुत खा लीजिये...।'

मासी माँ ने कहा, 'मैं कुछ नही खाऊँगी, बाबा ..!'

तारक ने कहा, 'किन्तु खाये बिना आपका शरीर जो कमज़ोर हो जायेगा । आखिर अपनी लडकी का ख़याल करते हुए आपको कुछ तो खा ही लेना चाहिए ।'

मासी माँ रोने लगी । उन्होने कहा, 'मुझे कुछ खाने के लिए मत कहो । आज मेरे गले कुछ भी नही उतरेगा । बल्कि तुम मेरी उस लडकी को कुछ खिला दो...।'

तारक ने कहा, 'उसके लिए आप चिन्ता न करें । मैं उसके लिए भी मिठाई लाया हूँ ।'

मासी माँ ने कहा, 'तुम मेरी बात छोड दो, बाबा ! और मै बचूँगी ही कितने दिन ? किन्तु उसके सिर पर कोई नही है । तुम सब उसकी कुछ देख-भाल करना, बाबा !'

तारक ने कहा, 'पारुल की ननिहाल मे क्या कोई नही है ? मामा-मामी अथवा ममेरे भाई-बहन अगर कोई हो तो आप बताये, हम उन्हे खबर कर देंगे ।'

मासी माँ ने कहा, 'कोई नही है, बाबा ! इस दुनिया मे कही कोई नही है हमारा । ससुराल या पीहर—कुछ भी नही है मेरे लिए । जब स्वामी ही चले गये तो उनके साथ-साथ हम लोगो का सभी कुछ चला गया ।'

तारक ने कहा, 'ठीक है मासी माँ, जब तक हम लोग हैं—आप किसी तरह की भी चिन्ता न करे । मुझे ही देख लीजिये न, मेरे भी तो कोई नही है, फिर भी तो जीवित हूँ...।'

तब तक मासी माँ को जैसे होश आ गया !

कहने लगी, 'तुम्हारा कोई नही है ?'

तारक ने कहा, 'न मासी माँ, मेरा भी कोई नही है। सिर्फ एक विधवा माँ है, वह भी न होने के बराबर। वह भी मरे तो झझट खत्म हो...।'

'छि, ऐसी बात क्यो कर रहे हो! ऐसी बाते नही कहते। किसी भी आदमी के लिए माँ के समान अपना निजी कौन होता है, बोलो तो? मैं भी तो पारुल से यही कहती थी। कहती थी—तू रो मत। अरे, मैं तो अभी जिन्दा हूँ—अपने जिन्दा रहते तुझे कोई भी तकलीफ नही होने दूँगी मैं।'

उसके बाद उन्होने कहा, 'पारुल को तुम कह-सुनकर कुछ खिला दो। वह दिन-भर से भूखी है। मुझे उसी की चिन्ता है...।'

तारक उठा।

उसने कहा, 'अच्छा, मै उसके पास जा रहा हूँ। उसे कुछ खिलाकर आता हूँ।'

कमरे से निकलकर इधर-उधर घूमकर तारक ने देखा कि पास के कमरे मे एक तख्तपोश पर पारुल गुमसुम बैठी थी। तारक को पास आते देखकर ही वह उठ खडी हुई।

तारक ने कहा, 'खडी क्यो हो रही हो तुम? मासी माँ ने ही मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'

पारुल ने शब्दहीन की तरह आँखे उठाकर एक बार तारक को देखा। उसके बाद उसने नजरे नीचे कर ली।

तारक ने सामने खडे होकर कहा, 'तुम लोगो के लिए अलकेश ने यह मिठाई मेरे हाथ भेजी है। वह खुद ही आता, परन्तु एक विशेष काम के लिए उसे कुछेक दिनो के लिए बाहर जाना पड गया। इसीलिए उसने मुझे भेजा है।'

उसके बाद उसने फिर कहा, 'इसे खा लो।'

'मैं नही खाऊँगी। मुझे भूख नही है।'

'न मत कहो। निराहार रहने पर तुम्हारा ही शरीर खराब होगा। भूख न होने पर भी खा लो। अलकेश ने तुम्हे जबरदस्ती खिला देने के लिए कहा है। तुम अगर खाओगी नही, तो वापस कलकत्ता लौटने पर वह मुझे बहुत खरी-खोटी सुनायेगा। कहेगा—यह छोटा-सा काम भी तुम नही कर सके! उस समय मै उसे क्या जवाब दूंगा, बोलो तो?'

पारुल तब भी चुप थी।

तारक ने फिर कहा, 'आखिर मेरा खयाल करके ही तुम कुछ खा लो। आखिर मुझे अलकेश की बक-झक से बचाने के लिए ही तुम कुछ मुँह मे डाल लो...।'

पारुल ने इस बार जवाब दिया। कहने लगी, 'क्यो मुझे बार-बार खाने के लिए परेशान कर रहे हैं ? आप मेरे है ही कौन कि आपकी बात रखने के लिए मुझे खाना ही पडेगा ? यदि मेरी खाने की इच्छा नही है तो मैं किस तरह खा सकूँगी ? मेरे गले के नीचे आज कुछ भी उतरने वाला नही।'

तारक ने कहा, 'किन्तु क्या तुम सोचती हो कि तुम्हारे न खाने पर ही तुम्हारे पिताजी की आत्मा को शान्ति मिलेगी ? और फिर प्रत्येक व्यक्ति के पिता का एक-न-एक दिन अन्त-काल आयेगा ही। मेरे पिताजी भी नही रहे—तो क्या मैं जीवित नही हूँ ? खूब अच्छी तरह जीवित हूँ। खाता हूँ, पीता हूँ, सो जाता हूँ; मुझे तो उनकी बात याद आने पर भी कुछ भी कष्ट नही होता।'

कहते-कहते तारक कुछ देर के लिए रुका।

उसके बाद वह फिर कहने लगा, 'चलो, यह मान लेता हूँ कि मेरे बचपन मे ही पिताजी चल बसे; किन्तु मेरी अपनी विधवा माँ ? माँ है, तभी तो मै खूब मजे मे हूँ और 'दरिद्र बान्धव भडार' का काम करता फिरता हूँ। मुझे तो इसमे कोई भी तकलीफ नही है। और फिर यदि मनुष्य दुख-तकलीफ को भूल नही पाता तो क्या यह ससार चलता ? समय सब-कुछ भुला देता है। इस समय तो तुम्हे अपने पिताजी के लिए इतना दुख हो रहा है और फिर यह भी देखोगी कि एक दिन तुम स्वय सब-कुछ भूल जाओगी।'

पारुल सारी बाते ध्यान से सुन रही थी।

उसने पूछा, 'अच्छा, तो फिर आपके घर मे इस समय कौन-कौन है ?'

तारक ने कहा, 'एक विधवा माँ को छोडकर और कोई नही।'

'कोई नही—इसका मतलब ?'

'कोई नही—इसका मतलब है कोई नही !'

पारुल बोली, 'लेकिन कोई एक तो होगा ही, नही तो आपके खाने-पीने की व्यवस्था और आपकी देख-भाल कौन करता है ?'

'उस विधवा माँ के सिवा और कोई मेरी देख-भाल करता ही नही। और खाना-पीना ? ज्यादातर मै घर पर खाता ही नही। इधर-उधर कही भी खा लेता हूँ। या फिर निराहार ही रह जाता हूँ। निराहार रहने मे भी मुझे कोई कष्ट नही होता।'

कुछ क्षणो के लिए पारुल आदर-भरी दृष्टि से तारक की ओर देखती रही। उसके बाद वह बोली, 'आपको क्या अकेलापन महसूस नही होता ?'

तारक ने जवाब दिया, 'अकेलापन महसूस ही क्यो होगा ? समय काटने के लिए क्या मुझे काम की कमी है ? हमारे 'दरिद्र बान्धव भडार' के सारे कार्यो का भार तो मेरे ही सिर पर है। उसी काम को पूरा करने लायक समय नही मिल पाता। और फिर अलकेश भी यहाँ नही है...।'

'कौन है यह अलकेश ?'

'अलकेश को नही पहचानती ? अलकेश ने ही तो तुम लोगो के पास रसगुल्ला पहुँचाने के लिए मुझे निर्देश दिया है। अलकेश को तो आज सुबह तुमने देखा है...।'

'मैंने देखा है ? मुझे तो कुछ याद नही आता।'

'हाँ, तुमने देखा है उसे। रग का गोरा एव हृष्ट-पुष्ट। तुम्हे भला क्या मालूम! उसने इस शीत-काल मे अपने बदन से उतारकर कीमती दुशाला बीस रुपयो मे बेच दिया और उन रुपयो से मेसो मोशाय के अन्तिम सस्कार का खर्च जुटाया! उसके जैसा लडका कोई बिरला ही मिले! गरीबो के लिए वह अपने प्राणो की बाजी भी लगा सकता है। और मजे की बात यह कि पुलिस उसी के पीछे-पीछे घूमती है, उसी के ऊपर सन्देह करती है।'

'क्यो, उस पर पुलिस का सन्देह क्यो है ? उसने ऐसा क्या किया है ?'

तारक ने कहा, 'सन्देह करेगी नही क्या ? मेरे ऊपर भी तो उन लोगो को सन्देह है। आजकल जो लोग गरीबो की सेवा करने की कोशिश करते है, उन्ही पर पुलिस सन्देह करती है। उन लोगो के पीछे जासूस लगा दिये जाते है। पुलिस सोचती है, मानो वे लोग ही बन्दूक और रिवाल्वर के धन्धे

मे है। और फिर इन दिनो पुलिस का एक नया साहब आया है; उसका नाम है—सिमसन। वह साला तो पक्का शैतान है। वह तो बस हम लोगो को रँगे-हाथ पकडने की फिक्र मे रहता है।'

'क्यो, आप लोगो को पकडने की फिक्र मे क्यो है वह ?'

तारक ने कहा, 'वह सोचता है कि चारो ओर जो खून-खराबा हो रहा है, वह शायद हमी लोगो के द्वारा हो रहा है। सच तो यह है कि हम सब उस तरह का कोई काम करते ही नही।'

उसके बाद कुछ रुककर उसने कहा, 'छोडो भी इन बेकार की बातों को। आज जाने के पहले अलकेश ने मुझे कहा था कि मैं तुम लोगों के घर पर ये रसगुल्ले पहुँचा आऊँ।'

पारुल बोली, 'मैं तो कह ही चुकी हूँ कि मै यह सब-कुछ भी नही खाऊँगी।'

तारक ने कहा, 'तो फिर न तो तुम खाओगी और न तुम्हारी माँ ही। तो फिर मै इनका क्या करूँगा ? लेकिन अलकेश को लौटने पर जब यह पता चलेगा तो फिर वह मुझ पर बहुत नाराज़ होगा।'

पारुल कहने लगी, 'लगता है कि आप अपने दोस्त से बहुत डरते है ! तो फिर लाइये, आपके रसगुल्ले मैं खा ही लेती हूँ।'

यह कहकर उसने उन रसगुल्लो मे से एक रसगुल्ला निकालकर अपने मुँह मे रख लिया।

फिर वह बोली, 'अब तो आपको अलकेश के नाराज़ होने का भय नही है ?'

तारक के होठो पर तुरत हँसी उभर आयी। हँसते-हँसते वह बोला, 'अलकेश को तुम पहचानती नही। जब उसे पहचान लोगी तो तुम भी उसकी नाराजगी से डरने लगोगी।'

'भला, ऐसी बात है ?'

तारक ने कहा, 'हाँ, जो व्यक्ति दूसरे की भलाई के लिए जाडे की रात मे अपने शरीर से दुशाला उतारकर एक क्षण मे बेच दे सकता है, उसकी नाराज़गी से कौन नही डरेगा, बोलो तो ! और फिर जबकि वह तो तुम लोगो का कोई अपना आदमी भी नही है।'

'लगता है कि आपका यह अलकेश किसी बहुत बड़े आदमी का लडका है !'

तारक ने कहा, 'खाक बडे आदमी का लड़का है ! उसकी और मेरी अवस्था समान ही है। फिर भी जब कि माँ के सिवा घर मे मेरा कोई नही, उसके भाई, माता-पिता सभी मौजूद है ।'

'वे सब क्या उसे रोकते नही ?'

तारक ने कहा, 'बोलने-रोकने से भला वे क्यो बाज आयेगे ? खूब बोलते है। कितनी ही बार उन लोगो ने उसे घर से खदेड दिया है। कितने दिनो तक उसे निराहार रहना पड़ा है।'

हठात पास के कमरे से मासी माँ के रोने की आवाज़ आयी। वह कह रही थी, 'अरी पारुल, कहाँ गयी रे ?'

इस घर से तारक का वही प्रथम सम्पर्क था। मृतक के अन्तिम सस्कार की घडी से शुरू होने वाला सामान्य परिचय ! इस तरह कितने ही घरो के मृतको का सस्कार 'दरिद्र बान्धव भडार' के लडको के द्वारा हुआ था। दाह-सस्कार करने के बाद ही उन लोगो के साथ का सम्पर्क उसी दिन खत्म हो जाया करता था। किन्तु इस गाँगुली-परिवार की तरह इस प्रकार पहले और कभी भी किसी परिवार के साथ इतना निकट आने की नौबत नही आयी, इस प्रकार घनिष्ठ होने का अवसर प्राप्त नही हुआ।

तारक को याद है कि आते समय मासी माँ ने कहा था, 'तुम, बेटा, एक बार कल फिर आना, कब क्या ज़रूरत आ पडे, पता नही।'

तारक ने कहा था, 'आप लोगो के किसी आत्मीय-स्वजन को यदि खबर देनी है तो बतलाइये; मैं खबर दे दूँगा।'

मासी माँ ने उत्तर दिया था, 'नही रे, बेटे ! हमारा कही भी कोई नही। इस लडकी के सिवा जिसे अपना कह सकूँ, ऐसा कोई भी नही इस दुनिया मे।'

तारक ने कहा, 'अच्छा मासी माँ, मैं कल सुबह ही चला आऊँगा। आप सावधानी के साथ रहे। मैं अब चलता हूँ।'

सिर्फ दूसरे दिन की सुबह ही क्यो, तारक प्रत्येक दिन सुबह के समय वहाँ आने लगा, और आते समय ही बाजार से खान-पान का सामान लेकर आता। आलू, परवल, बैंगन—जब जो कुछ मिलता हो। घर के बाहर से ही वह पुकारता, 'मासी माँ, दरवाजा खोलिये !'

उसकी पुकार सुनते ही मांसी माँ तुरत पलटकर पारुल को पुकारती। कहती, 'पारुल, अरी पारुल ..!'

पारुल आकर दरवाजा खोल देती और तुरन्त ही बोलती, 'यह क्या तारक-दा, आज इतनी देर क्यो हो गयी ?'

सब्जी का झोला रखकर तारक कहता, 'बस, कुछ बोलो मत। ये सब तो सारा बोझ एक आदमी के कधे पर डालकर इस तरह हवा हो गये हैं कि मैं तो पिस उठा हूँ। तुम्ही बोलो तो, मैं अकेला किधर-किधर देखूं ?'

उसके बाद मासी माँ के पास जाकर वह कहता, 'यह लीजिये मासी माँ, आपकी अफीम।'

'अफीम लाये हो, बेटा ! बहुत अच्छा किया तुमने। मैं तो सोच रही थी कि शायद अफीम की बात तुम्हे याद नही।'

'याद नही ? क्या कह रही हैं आप ? आपके हुक्म के सामने मैं टस-से-मस भी हो सकूं, इसकी गुजाइश कहाँ ! क्या आप सोचती हैं कि मैं आपके हुक्म की खिलाफत करूँगा और फिर अलकेश मुझे छोड देगा ? मैं बिलकुल अकेला पड गया हूँ, इसके बारे मे सोचता ही कौन है, बोलिये तो !'

मासी माँ पूछ बैठती, 'तो अलकेश कब लौटेगा, बेटा ? उसे गये काफी दिन बीत गये, उसे इतना क्या काम है भला ?'

तारक कहता, 'नही मासी माँ, उसे दोष मत दीजिये। वह हम-जैसे दस आदमियो का काम अकेला कर सकता है। इसीलिए मैं तो अक्सर उससे पूछा करता था—अलकेश, तुम अकेले इतना काम कैसे कर लेते हो ? मेरी बातो का अलकेश क्या उत्तर देता है, यह क्या आप जानती हैं, मासी माँ ! कहा करता था—काम के लिए ही तो जिन्दा हूँ, जिन्दा रहने के लिए काम नही करता।'

'बेटा, भला वह ऐसा क्या काम करता है ? काम करने के लिए वह

कितने रुपये पाता है ?'

तारक कहता, 'रुपये ! रुपयो की बात कह रही है आप ? अरे रुपयों की बात छोड़िये, वह तो एक पैसा भी नही कमाता।'

'ओ माँ ! जब वह रुपये कमाता नही है तो उसकी रोज़ी कैसे चलती है ? और फिर यह जो तुम बाजार से हमारे लिए सामान ला देते हो, उसके लिए रुपये कहाँ से आते है ?'

तारक कहता, 'यह सब अलकेश की कोशिशो से ही होता है। हमारे 'दरिद्र बान्धव भडार' मे जो कुछ भी चावल, दाल, कपडा एव चदा प्राप्त होता है, वह हम सभी की कोशिशो से ही होता है। उन रुपयो की व्यवस्था के लिए ही तो मुझे दिन-भर घर-घर चक्कर लगाना पड़ता है।'

'क्या सभी रुपये देते है ?'

तारक कहता, 'क्या कोई सहज ही रुपये देना चाहता है, मासी माँ ? बहुत-से लोग खरी-खोटी भी सुनाते है। और फिर कोई-कोई हमे चार सौ बीस भी कह डालता है। वे कहते है—गरीबो के नाम पर चन्दा उगाह कर ये सब होटलो मे चॉप और कटलेट खाते है !'

'अच्छा, ऐसा भी कहते हैं लोग ?'

'हाँ मासी माँ, कलकत्ता मे कितनी तरह के लोग है, इसका कोई हिसाब नही। और फिर आप और हम तो अभावो से लदे है, लेकिन उधर आप देख लीजिये कि कितने ही लोग ऐसे भी है जो लड़ाई और तगी के इस ज़माने मे रुपयो का क्या करे—यह भी समझ हीं नही पाते।'

तारक हर रोज इस घर मे आकर कुछ समय के लिए इसी तरह की बातें छेडता और फिर एकाएक उठ खडा होता। कहता, 'मासी माँ, अब मैं चलूं।'

मासी माँ कहती, 'अरी ओ पारुल, देखो, तारक जा रहा है। उसे बता दो कि कल कौन-कौन-सी चीज़ें लानी है ?'

तारक पारुल के आने की प्रतीक्षा नही करता। वह सीधा रसोईघर की तरफ बढ जाता। पारुल तब तक अँगीठी को सुलगा रही होती। उसकी आँखें धुएँ से लाल हुई रहती।

तारक कहता, 'क्या हुआ, मासी माँ पुकार रही हैं और तुम कोई

जवाब ही नही दे रही हो ! इस समय मैं चलता हूँ। कल तुम लोगो के लिए क्या-कुछ लाना होगा ?'

आने वाले दिन किन-किन चीज़ो की ज़रूरत होगी, पारुल तारक को बता देती। तारक भी ध्यान देकर पारुल की बाते सुनता और याद रखता।

तारक कहता, 'बतलाओ, जल्दी बतलाओ। मेरे पास अधिक समय नही। अभी और भी कई घरो मे जाना है। तुम्हारे पास बैठे रहने से ही तो मेरा काम नही चलेगा।'

पारुल उस समय धुएँ के कारण परेशान रहती। कहती, 'देखो तो, कैसा कोयला दिया है ..!'

'क्यो, क्या हुआ ?'

पारुल कहती, 'यह कोयला है कि पत्थर ? मेरी तो आँखें फूट गयी !'

तारक कहता, 'कोयला वाला बेटा भी वैसा ही हो गया है। लडाई के दिनो जिसे जो मौका मिलता है, वह हरेक मौके का लाभ उठा रहा है। बहती गगा मे सभी हाथ धो रहे हैं। रुपये-पैसे के लिए लूट-पाट मची है। मैं अभी ही जाता हूँ और कोयले वाले से कहता हूँ। अब मुझे कल क्या-क्या लाना होगा, यह बतला दो।'

पारुल कहती, 'इसी वक्त मै किस तरह बतलाऊँ ? तुम ज़रा शाम के समय एक मिनट के लिए चले आना। उस समय मै सब-कुछ बता दूँगी।'

'शाम को ? शाम को तो मुझे बिलकुल फुरसत नही है।'

पारुल कहती, 'एक मिनट के लिए भी फुरसत नही निकाल सकते ? इतना क्या काम है तुम्हे ?'

तारक कहता, 'तुम ठहरी औरत की जात, भला तुम क्या समझ पाओगी ? अलकेश अगर हो तो मेरे लिए इतनी परेशानी की बात ही क्या थी ? उसके चले जाने पर ही तो सारी मुश्किले मेरे ऊपर आ पड़ी है।'

'अच्छा, तो अलकेश-दा को ही इतना क्या काम पड गया कि वह कलकत्ता से बाहर जाने के बाद वापस आने का अब नाम ही नही लेते !'

तारक कहता, 'अलकेश को तुम पहचानती नही। उसकी तरह का कर्मठ व्यक्ति मैं हो पाता, तो...।'

पारुल कहती, 'ऐसा लगता है कि तुम अलकेश-दा का बहुत मान और प्यार करते हो।'

तारक कहता, 'उसके माँ-बाप को छोडकर बाकी सभी उसे प्यार करते हैं। उसके ज्यादा करीब आने पर देखना, तुम भी उसे प्यार कर बैठोगी। वह है ही ऐसा लडका...।'

उसके बाद वह कहता, 'अच्छा, मैं अब कल फिर आऊँगा। इस समय चलता हूँ।'

'लेकिन मेरा कोयला ? इन्ही कोयलों पर यदि मैं खाना बनाती रही, तो देखना, मैं ठीक मर ही जाऊँगी...।'

तारक हँसने लगता। कहता, 'यदि मैं जिन्दा रहा तो फिर तुम्हें हरगिज मरने नही दूँगा—देख लेना ! हाँ, अगर इस बीच पुलिस मुझे पकड़कर जेल मे ठूँस दे तब तो बात ही दूसरी है।'

जेल की बात सुनकर पारुल डर जाती। कहती, 'तुम ऐसा काम ही क्यो करोगे कि पुलिस को तुम्हे पकडने के लिए मजबूर होना पडे !'

तारक कहता, 'तुम्हे बतलाने मे अवश्य ही मुझे कोई आपत्ति नही, वैसे किसी को भी बतलाना मना है। अलकेश को अगर पता चल गया कि मैं ये सारी बाते तुम्हे बता चुका हूँ तो वह मुझे गोली से उड़ा देगा ! इस मामले मे उसके मन मे कोई दया माया नही।'

पारुल कहती, 'तो फिर मुझे वह सब नही सुनना। तुम्हारे काम-काज की जानकारी तुम लोगो तक ही रहे, मुझे कुछ भी मत बतलाओ।'

यह कहकर वह पुन. अँगीठी सुलगाने मे व्यस्त हो जाती।

कमरे के भीतर से हठात माँ की आवाज सुनायी पड़ती, 'अरी पारुल, तारक चला गया क्या ?'

पारुल चिल्लाकर जवाब देती, 'हाँ, चला गया।'

'मेरी अफीम लाने के लिए तो बतला दिया है ?'

'नही, नही बतलाया है !'

माँ फिर चीखती, 'बतलाया क्यो नही तुमने ?'

पारुल गुस्से मे जवाब देती, 'मुझे इतना सब-कुछ याद नही रहता।'

माँ बडबड़ाती, 'हाँ, याद क्यो रहेगा ? बैठे-बैठे गप्पें लडाना तो ठीक

याद रहता है ! उस समय तो तुमसे भूल नही होती !'

पारुल से फिर चुप नही रहा जाता। खाना पकाते-पकाते वह अचानक सीधी माँ के पास आकर कहती, 'तुम चुप भी रहो, माँ ! एक तो मै खुद पत्थर-जैसे कोयलो से परेशान हूँ और ऊपर से तुम्हारी ऐसी बक-बक अच्छी नही लगती। तुम्हारा शरीर खराब है, तुम चुपचाप लेटी रहो। जब भात तैयार हो जायेगा, मैं परोस दूँगी। इस समय तुम मुझे और मत जलाओ।'

इन बातो को सुनकर माँ की आवाज़ और तेज़ हो जाती। वह कहती, 'मेरी कोख से जनम लेकर तू मुझे ही इतनी बातें सुनायेगी ? आज बीमार होकर बिछौने पर पडी हूँ, इसीलिए मेरी यह दशा है न ! इतना गुमान भी अच्छा नही, बिटिया ! यह गुमान रहेगा नही। विवाह के बाद जब ससुराल जाओगी तब समझोगी कि माँ जो कुछ कहती थी, भले के लिए ही कहती थी।'

किन्तु जिसके लिए ये बाते कही जाती, वह पारुल तो वहाँ खडी रहती ही नही। खडे-खडे बातें सुनने लायक समय पारुल के पास रहता भी नही किसी दिन। उसे एक ओर खाना बनाना पडता, खाना बनाकर माँ को खाने के लिए देना होता; उसके बाद खुद भी दो-चार कौर निगल-कर रसोई-घर साफ करना होता और तब जूठे बर्तनो को नल के नीचे ले जाकर माँजना ! सचमुच, क्या गृहस्थी के काम कम होते है ? दो ही प्राणी हो, लेकिन उससे क्या ? उन दो प्राणियो के लिए कोयला भी चाहिए, तेल, नमक और मसाले भी चाहिए और फिर घर मे झाडू देने से शुरू करके घर को धोने, पोछने और कपडो को साबुन लगाकर साफ करने तक—सब-कुछ तो करना ज़रूरी है।

जब दोपहर मे गली मे आवाजाही बन्द हो जाती तब एकान्त मे कुछ अपने सम्बन्ध मे भी सोच सके, उसके लिए भी माँ समय नही देती। सिर्फ अपने कमरे से गला फाडकर पुकारती। कहाँ नल का पानी बरबाद हो रहा है और कहाँ कोई सदर दरवाज़ा खटखटा रहा है, माँ पारुल को इसकी याद दिलाती रहती। मानो ससार के सारे उत्तरदायित्वो का बोझ अपने कधो पर लेकर इस दुर्योग को सहने के लिए ही पारुल ने इस पृथ्वी

पर जन्म लिया है।

उस दिन हठात फिर असमय ही सदर दरवाज़े की कुडी बज उठी।

कुडी बजने की आवाज़ सुनते ही माँ चिल्ला उठी, 'अरी पारू, देख तो बेटी, कौन दरवाजा खटखटा रहा है? शायद तारक आया होगा। जा बेटी, दरवाज़ा खोल दे।'

पुकारने पर तुरत ही यदि बेटी का उत्तर मिल जाता तो फिर माँ को दुबारा चीख़ने-चिल्लाने की ज़रूरत नही पडती। किन्तु पुकारने पर सहज ही जवाब देने वाली नही है पारुल। बात अधिक मानने पर शायद ऐसा ही होता है; हरेक बात को मानने का आग्रह भी सम्भवत कम हो जाता है।

पारुल के साथ भी यही बात थी।

साधारणतः यदु भट्टाचार्य लेन के ऐसे मकानो के सदर दरवाज़े को कोई खटखटाता नही। सुबह तारक बाज़ार से ज़रूरी सामग्री ख़रीदकर ले आता और तुरंत ही वापस चला जाया करता। उसके बाद एक बार फिर वह आता सन्ध्या के समय। बीच मे दोपहर के वक्त यदि कभी आता भी तो भूले-भटके ही। बस, कभी-कभी। कोई बहुत ही ज़रूरी चीज़ अगर ख़रीदनी होती, उसी समय तारक आता।

किन्तु उस दिन भोजन करने के बाद चौका-बरतन का काम निबटाकर वह ज़रा लेटी ही थी कि ठीक उसी समय सदर दरवाज़े की कुडी बजने की आवाज सुनायी पडी। माँ की चीख-पुकार के पहले ही पारुल ने दरवाज़े के निकट जाकर पूछा, 'कौन? कौन है आप?'

'एक बार दरवाज़ा खोलिये न!'

बिलकुल अनजान स्वर।

पारुल ने पुनः पूछा, 'कौन हैं आप? किससे मिलना चाहते है?'

बाहर से जवाब मिला, 'मुझे पहचानेगी नही आप। एक बार दरवाजा खोलिये तो। बहुत ही ज़रूरी बात है। मेहरबानी करके ज़रा दरवाज़ा

खोलिये !'

पहले-पहल जाने कैसा सकोच-सा हुआ पारुल को,...और फिर कुछ सन्देह भी।

वह बोली, 'इस घर मे कोई भी मरद-मानुष नही है। आपको क्या काम है, बतलाइये ?'

'बतलाता हूँ। दरवाज़ा खोलने पर सब जान जायेगी आप। एक बार खोलिये न दरवाजा।'

फिर भी पारुल का मन जाने कैसा शंकाकुल हो रहा था। पीछे से माँ की आवाज़ भी आ रही थी, 'अरी पारू, बहरी हो गयी क्या ? कौन दरवाज़ा तोडे डाल रहा है, जरा देख तो सही।'

आखिर दरवाजा खोलने पर पारुल ने देखा कि एक नितान्त अनजान व्यक्ति खडा था।

'कौन हैं आप ? किससे मिलना चाहते है ?'

आगन्तुक सज्जन ने पूछा, 'क्या यहाँ अलकेश चक्रवर्ती हैं ?'

'अलकेश चक्रवर्ती ?'

कुछ सोच-समझकर पारुल ने कहा, 'अलकेश चक्रवर्ती ! न, इस नाम का तो कोई आदमी यहाँ नही रहता !'

'कोई नही ?'

'जी नही।'

'इस घर मे अलकेश चक्रवर्ती नाम का कोई भी आदमी कभी भी आया है ?'

पारुल ने कहा, 'इस घर मे कोई मरद-मानुष रहता ही नही।'

'तो फिर, इस घर मे कौन रहते है ?'

'मैं और मेरी माँ। विधवा माँ। मेरे पिताजी का देहान्त हुए आज छह महीने हो चुके।'

आगन्तुक सज्जन ने फिर प्रश्न किया, 'तो फिर आप लोगो का हाट-बाज़ार का काम या फिर और भी बाहर का दूसरा काम कौन सभालता है ?'

पारुल ने अक्लमन्दी के साथ उत्तर दिया, 'मैं ही करती हूँ।'

आगन्तुक सज्जन ने कहा, 'ओ, तो फिर ठीक है। असमय आकर आपको मैने परेशान किया, इसके लिए माफी चाहता हूँ।'

यह कहकर वह सज्जन चले गये।

माँ उस समय भी अपने कमरे से चीख-पुकार मचा रही थी। चीखती हुई वह अपनी बेटी को बुला रही थी, 'अरी मुँहजली, क्या तेरे कान बहरे हो गये है ? अरी पारू...ओ पारू...!'

पारुल झटपट माँ के पास गयी और बोली, 'क्यो ? क्या हुआ ? इतना चिल्ला क्यो रही हो, ज़रा मुझे बतलाओ तो ! तुम्हे यह क्या होता जा रहा है ?'

माँ बोली, 'बाहर से कोई दरवाज़ा खटखटा रहा था। मैंने सोचा कि तुम शायद सो गयी हो ! अच्छा, कौन आया था री ? क्या तारक ? लगता है, तारक ही आया होगा !'

पारुल उस बात का उत्तर दिये बिना ही चली जा रही थी, किन्तु माँ ने फिर पूछा, 'क्यो री, चली जा रही हो जो ! कौन आया था, यह तो तुमने बतलाया ही नही !'

पारुल ने कहा, 'तुमको इन सब बातो के बारे मे चिन्ता करने की क्या ज़रूरत है, बोलो तो ? कौन आया था, यह जानकर भला तुम्हे क्या लाभ होगा ?'

'ओ माँ ! तू क्या कह रही है ? कौन आया था, यह पूछने मे भी दोष हो गया क्या ? तुझे इतना गुस्सा क्यो आता है, बोल तो ? तुझे क्या हो गया है, ज़रा मैं भी तो सुनूँ ! तुझे किसने क्या कुछ कहा है ?'

किन्तु जिसे इन सब प्रश्नो का उत्तर देना होता, वह तो जाने कहाँ गायब हो चुकी होती ! माँ को इसका आभास भी नही हो पाता।

संसार से प्रवचना पाकर मनुष्य का मन कब किस ओर अपना गन्तव्य-स्थल स्थिर कर मुड जायेगा, यह पहले से ही कोई नही बतला सकता। कब और ईश्वर के किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पारुल ने गाँगुली-बाडी की

कन्या के रूप मे इस संसार मे एक दिन जन्म लिया था, यह कोई नही कह सकता। उस दिन सम्भवत. नवजात कन्या की अभ्यर्थना के लिए मगल-शख ध्वनि की गयी होगी और उसकी मृदु प्रतिध्वनि शायद मुहल्ले के आकाश-वातास मे गूँज उठी होगी। माता-पिता के हृदय मे शायद किसी क्षण आशा का उदय भी हुआ था कि यह कन्या एक दिन इसी धरती के एक कोने मे एक अनन्य स्नेह के बन्धन मे आबद्ध होगी। किन्तु वह सब कुछ भी नही हुआ। जन्म के कुछेक वर्षों के बाद ही उसने देखा कि इस दुनिया मे जीवित रहने से बढकर कोई और यत्रणा है ही नही। उसने यह भी देखा कि जिनके सहारे उनकी जीवन-यात्रा सार्थक होने को है, वे नितान्त विवश और नि.सहाय है। उनमे से एक तो बिना कोई पूर्व-सूचना दिये ही ससार से विदा हो गया। और जो बच रही, उसकी भी चरम दुरवस्था है। दुख, शोक, अनाहार एवं अफीम के नशे से वह अब मानसिक रूप से भी छीज चुकी है।

घर के पीछे की ओर एक खिडकी से दिखायी पडता—सिर्फ एक टुकडा आकाश। उसी एक टुकडा आकाश के अदृश्य देवता को लक्ष्य करके ही पारुल मौन हो अनेकानेक प्रश्न करती रहती। वह पूछती उस अदृश्य देवता से और फिर अपने सृष्टिकर्त्ता से भी। वह पूछा करती, 'भगवन, तुमने यह क्या किया ? इस दुनिया मे मैं कोई अपनी मरज़ी से तो चली नही आयी ! फिर तुमने क्यो मुझसे मुँह मोड रखा है ? और दूसरी लडकियो की भाँति मै भी स्नेह क्यो नही पाती ? जिसके साथ दो बातें कर सकूँ, ऐसा कोई साथी भी मुझे नही मिलता ? हमे क्या तुम्हारे खज़ाने से सिर्फ अनादर, अवहेलना एव अवज्ञा ही मिलने को लिखा गया है ?'

माँ कहती, 'इस तरह बाहर की ओर क्या देखा करती है री ?'

पिताजी अलीपुर कोर्ट मे मुख्तार थे। घर से कोर्ट की दूरी होगी यही कोई मील-भर। खा-पीकर एव काली पोशाक पहनकर और छाता लगाकर कोर्ट जाते हरिचरण गाँगुली। कोर्ट मे उनका नाम था—हरि मुख्तार। वहाँ उन्हे एक मिनट की भी फुरसत नही मिलती। लेकिन व्यस्तता 'कार्य' की अपेक्षा 'अकार्य' की ही अधिक थी। अदालत के एक

कमरे से दूसरे कमरे तक दौडते-दौडते ही उनकी आधी मे अधिक शक्ति खत्म हो जाती। उसके वाद किसी तरह दो या तीन रुपये कमाकर वह घर लौटते एव बिछौने पर बिलकुल चित लेट जाते।

गृहिणी कहती, 'क्यो जी, आज तबीयत कैसी है ?'

हरि मुख्तार गृहिणी के हाथो मे कुछ रुपये रख देते और कहते, 'इन रुपयो को सभालो।'

रुपयो को आँचल मे बाँधकर गृहिणी पूछती, 'पारुल की दवा लाये हो ?'

हरि मुख्तार कहते, 'दवा मिली ही नही। किसी भी दुकान मे वह दवा नही है।'

'क्यो, दवा मिली क्यो नही ? शायद तुमने ज्यादा खोज नही की होगी!'

हरि मुख्तार कहते, 'खोज नही की होगी, ऐसा क्यो कह रही हो ? दवा खोजते-खोजते मैं बिलकुल परेशान हो गया। छाती मे दर्द भी होने लगा है। युद्ध के ऐसे माहौल मे कुछ भी पाना सम्भव नही। जो भी चीज़ खोजोगी, वही नही मिलेगी।'

'तो फिर क्या होगा ? डाक्टर ने कहा है कि वह दवा खाये विना पारू अच्छी नही हो सकेगी।'

'देखा जाये, क्या होता है! कल धर्मतल्ला की तरफ जाकर पता लगाऊँगा।'

हरिचरण मुख्तार महाशय ने यह टूटा-फूटा मकान पाया था उत्तराधिकार के रूप मे और उन्होने गृहिणी पायी थी वैवाहिक बन्धन के फलस्वरूप। और फिर पारुल को पाया था गृहस्वामी एव गृहिणी—दोनो के दुर्भाग्य के रूप मे—हाँ, दुर्भाग्य के रूप मे ही तो।

वचपन मे लडकी स्कूल जाती। वह कोई साधारण स्कूल नही था। कलकत्ता-कारपोरेशन के अधीन नि शुल्क प्राइमरी स्कूल एक वही था। उस स्कूल मे महीने के अन्त मे फीस नही लगती थी। मुहल्ले के और भी बीस-पचास गरीब वच्चो के साथ पारुल भी वहाँ पढने जाती। एक नौकरानी घर-घर घूमकर वच्चो को लाती और उन्हे स्कूल पहुँचा देती।

इसके लिए उसे रुपये मिलते। उस स्कूल की पढाई पूरी होने के बाद ही यह प्रश्न उठा कि अब वह किस स्कूल मे पढेगी ? कलकत्ता मे स्कूलो की कमी नही। उन दिनों भी किसी-किसी स्कूल मे बस से आने-जाने की व्यवस्था थी। बस मे बैठकर कुछेक बडे घर की लडकियाँ पढने के लिए जाया करती थी। तय हुआ कि पारुल भी वही पढेगी।

पारुल की खुशी का क्या कहना ! वाह, वह बस मे बैठकर स्कूल जायेगी ! कैसे अनोखे सौभाग्य की बात थी !

हरि मुख्तार महाशय एक दिन शुभ घड़ी देखकर अपनी लडकी को अच्छी तरह सजा-सँवारकर ले गये और बेलतल्ला के एक बालिका-विद्यालय मे भरती कर आये। बस का किराया था सात रुपये और फीस तीन रुपये। कुल मिलाकर दस रुपयो का मासिक व्यय। फिर स्कूल की ड्रेस का खर्च था और फिर था किताबो का खर्च। यह भी वह किसी तरह से जुटायेगे ही अपनी कन्या की शिक्षा-दीक्षा के लिए। रुपयो की कितनी भी दिक्कत क्यो न हो, कन्या के भविष्य-निर्माण के लिए उन्हे यह खर्च तो करना ही होगा।

किन्तु सच पूछा जाये तो वह खर्च दस रुपये तक ही सीमित नही रहता। आज इस बात का चन्दा चाहिए तो कल उस बात का। और फिर पखे की फीस है; बिल्डिग की फीस है और साथ मे कितनी ही तरह की चीज़ो की सूचियाँ।

हरि मुख्तार महाशय बहुत ही तकलीफ से लडकी के स्कूल की हर तरह की माँग को निभा रहे थे। उन्हे आशा थी कि समुचित शिक्षा-दीक्षा रहने पर विवाह के मामले मे सुयोग्य लडके उनकी कन्या का सहज ही वरण कर लेंगे।

हाय रे मनुष्य की आशा !

उस समय न तो हरि मुख्तार महाशय को पता था और न ही गृहिणी करुणामयी यह जानती थी कि उनकी सारी आशाओ को जलाजलि देकर भाग्य-देवता इस तरह का एक मर्मांतक खेल खेलेंगे !

हरि मुख्तार महाशय जिस तरह प्रतिदिन कोर्ट से थके-माँदे लौटा करते थे, उस दिन भी वैसे ही लौटे थे। आज उनकी हालत कुछ और

ही थी। सारे बदन पर रक्त के छीटे थे और कपड़े फट चुके थे। रास्ते के कुछ भले आदमियो ने पकडकर उन्हे घर तक पहुँचा दिया था।

करुणामयी रसोई-घर से बाहर निकली और जैसे ही उसने गृहस्वामी को ऐसी दशा मे देखा, वह रो पडी। जो उन्हे साथ लाये थे, उन्होने दुर्घटना का विशद वर्णन प्रस्तुत किया। कोर्ट से वह पैदल ही घर लौट रहे थे कि एक मिलिटरी-ट्रक ने उन्हे धक्का दिया और वह गिर पडे थे।

घटना जितने आकस्मिक रूप से घटी थी, विपदा उतने आकस्मिक रूप से टली नही। पहले-पहल ऐसा लगा कि कोई खास बात नही। साधारण मलहम आदि लगा देने पर वह स्वस्थ हो जायेगे। स्वस्थ और नीरोग होकर वह पहले की तरह कोर्ट जा सकेगे।

किन्तु नही, वैसा हुआ नही।

कुछ ही दिनो के बाद यह स्पष्ट हुआ कि दुर्घटना शरीर के भीतर किसी गोपन-गम्भीर स्थान पर एक स्थायी चोट कर गयी थी।

जिसे हृदय-पिड कहते है, उसी स्थान पर अधिक आघात लगा था।

गृहिणी ने माथे का घूँघट नीचा किया और वह एकबारगी ही डाक्टर बाबू के पास पहुँची।

उन्होने पूछा, 'तो फिर क्या होगा, डाक्टर बाबू ? यह अच्छे तो हो जायेगे ?'

डाक्टर बाबू ने शान्त और निर्विकार रूप से फ़ीस के कुछेक रुपयों को अपनी जेब के हवाले करते हुए कहा, 'निश्चित रूप से अच्छे हो जायेंगे। लेकिन चलना-फिरना अब कुछ महीनो के लिए बन्द करना होगा।'

'कितने दिनो तक बिछौने पर रहना होगा ?'

'यही, कोई छह महीने तक।'

यह सुनते ही करुणामयी का हृदय काँप उठा।

'लेकिन वह कोर्ट तो जा सकेगे ?'

डाक्टर ने दृढ़तापूर्वक कहा, 'नही।'

ये बाते हरि मुख्तार महाशय के कानो तक नही गयी। यदि उन तक ये बाते जाती तो पता नही—वह क्या करते, किन्तु करुणामयी मन-ही-

मन आतंकित हो उठी। तो फिर अब घर का गुजारा कैसे होगा ? किस तरह अब वह महीने के अन्त मे अपनी बिटिया की स्कूल-फीस चुकायेगी ?

शुरू-शुरू मे कोई भी कुछ समझ नही पाया। गृहस्वामी की कीमती दवाओ का खर्च भी ठीक पहले की तरह ही चलता रहा। बिटिया रानी भी नियमपूर्वक स्कूल जाती रही। रसोईघर मे खाना-पकाना भी ठीक-ठाक चलता रहा। करुणामयी खुद ही बाजार जाने लगी—साग-सब्जी की खरीदारी के लिए।

बिटिया उस समय छोटी-ही थी। खाने के समय कहती, 'माँ, आज मछली नही बनी...।'

करुणामयी कुछ झूठी बातें कहकर पुत्री को सात्वना देती।

कहती, 'अरी बेटी, आज बाजार मे मछली मिली ही नही। आज दाल के बडे के साथ ही भात खा लो। कल मैं जरूर मछली लाऊँगी।'

उस समय भली-भाँति समझ पाने की उम्र ही नही थी पारुल की। कहाँ से चावल-दाल आता है और कहाँ से तेल, नमक और कोयला, कहाँ से मछली आती है, उन सब के लिए रुपयो की भी जरूरत है या नही; और यदि रुपयो की जरूरत है तो वे रुपये कौन देता है—इनके बारे मे पारुल कुछ भी नही जानती।

पिताजी भीतर के कमरे मे लेटे रहते। उसी अवस्था मे माँ आकर कहती, 'अरी बेटी, सदर दरवाजा जरा बन्द कर ले तो। मैं जरा बाहर जा रही हूँ। तुरंत वापस लौट आऊँगी।'

'इस समय शाम को तुम कहाँ जा रही हो, माँ ?'

माँ कहती, 'जरा बाहर जाऊँगी, बस, मै गयी और आयी।'

पारुल कहती, 'मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी।'

माँ बोलती, 'छिः, तुम चली जाओगी तो तुम्हारे पिताजी की देख-भाल कौन करेगा ! तुम अपने पिताजी के पास जाकर बैठो तो ! मै अभी तुरत लौट आऊँगी।'

तब फिर और आपत्ति नही करती पारुल। करुणामयी गृहस्वामी और अपनी पुत्री को छोडकर बाहर चली जाती। यदु भट्टाचार्य लेन से निकलकर और एक दूसरी गली मे आगे बढ जाती। वह गली आगे जाकर

कालीघाट रोड मे मिल जाती थी। शाम के समय कालीघाट रोड मे प्रायः चहल-पहल रहती। किन्तु उस दिन करुणामयी ने देखा कि रास्ते पर भीड कुछ कम थी।

पहले तो गृहस्वामी खुद ही बाजार जाते थे। घर मे जब कोई लडका नही, कोई नौकर तक नही, तो फिर गृहस्वामी को छोड़कर और कौन बाजार जाये!

किसी दिन बाजार से लौटकर झोले को नीचे रखकर गृहस्वामी कहते, 'यह देखो तो, कौन-सी मछली लाया हूँ!'

करुणामयी आकर देखती—हिलशा मछली।

गृहस्वामी के मुख पर तब मुसकान उभर आती। पिछले दिन कोर्ट मे उन्हे अप्रत्याशित रूप से कुछ रुपये मिल गये थे। यह खरीदारी उसी के फलस्वरूप सम्भव हुई थी।

करुणामयी को अपने स्वामी की यह फिजूलखर्ची बहुत अखरती।

वह कहती, 'आपने इतनी महँगी मछली क्यो खरीदी? थोडी-सी झीगा मछली ले आते—वही काफी होता।'

गृहस्वामी कहते, 'साल मे सिर्फ एक दिन ही तो हिलशा मछली लाया हूँ! कोई रोज तो लाता नही। और फिर पारुल तो कई दिनो से इस मछली के लिए मचल रही थी...।'

करुणामयी कहती, 'इस तरह रुपये लुटाये बिना क्या तुम्हे चैन नही मिलता? क्या जो भी रुपये मिलें, उन्हे दोनो हाथो लुटा दिया जाये? देख रही हूँ कि तुम्हारे हाथ मे रुपये टिक नही सकते।'

गृहस्वामी अपनी सफाई पेश करते, 'अरे, रोज-रोज थोडे ही कोई हिलशा मछली खाते है हम!'

'जो लोग हिलशा मछली नही खाते, वे जिन्दा नही रहते क्या? लगता है कि रुपये तुम्हारी हथेली मे मानो काँटे-से चुभते है...।'

गृहस्वामी पुन. कहते, 'जिस समय रुपये नही रहेगे, उस समय...न हो तो.. भात-दाल खाकर ही गुजारा करेगे।'

करुणामयी कहती, 'तुम्हारे जैसे फिजूलखर्च आदमी के हाथ जब पडी हूँ तो फिर मै यह भी भली-भाँति समझती हूँ कि कैसे-कैसे दुर्भोग भोगने

पड़ेगे। ज़रा मैं भी सुनूं, पारू के विवाह के लिए रुपये कहाँ से आ जायेंगे ?'

गृहस्वामी उत्तर देते, 'जिन्होने जीवन दिया है, वह आहार भी देंगे ही। वह ख़ुद अपना भाग्य भी साथ लायी है। हम और तुम होते ही कौन हैं, बोलो न ! यदि उसके भाग्य मे लिखा होगा तो बिना पैसो के ही उसका विवाह हो जायेगा। कोई भी किसी तरह की बाधा नही दे सकेगा, यह देख लेना।'

पारुल माता-पिता की ये सारी बातें सुनती, और फिर वह कहती, 'माँ, मैं शादी नही करूँगी।'

माँ यह सुनकर हताश हो जाती। कहती, 'क्यो री, ऐसा क्यो कहती है ? जनमी हो लड़की होकर और कह रही हो कि शादी नही करोगी? यह भी कोई बात हुई ? छि . !'

'वाह रे, विवाह हो जाने पर जब मै ससुराल चली जाऊँगी, तो आप दोनो की देख-भाल कौन करेगा ?'

'उसकी चिन्ता तुम्हे नही करनी होगी।'

'अगर मेरा भाई होता तो वह आप लोगो की देख-भाल करता। किन्तु मेरा कोई भाई भी तो नही !'

माँ कहती, 'अरी पगली, क्या सभी को सब-कुछ मिलता है भला ! कितनी ही लडकियाँ होगी जिनके भाई नही हैं। तो क्या इसीलिए वे विवाह नही करेंगी ? खुद मेरा ही कोई भाई नही था, तो क्या इस वजह से मैंने विवाह के समय कोई आपत्ति की थी ?'

हठात मानो वह कन्या कौतूहल से भर उठती। वह पूछती, 'माँ, तुम्हारा भाई क्यो नही है ? तुम्हारा भी यदि भाई होता तो कितने मज़े की बात होती—मेरा एक मामा होता, मैं मज़े मे गर्मियो की छुट्टी मे मामा के घर जाती। मेरे स्कूल मे सभी के मामा है, ननिहाल है, सिर्फ मेरा ही नही।'

माँ इस बात का उत्तर नही देती। गृहस्थी के कामो मे एक कमरे से दूसरे कमरे मे आती-जाती। बेटी भी पीछे-पीछे घूमती। फिर पूछती, 'मेरी ननिहाल क्यो नही है माँ, बोलो तो ? क्यो नही है मेरा मामा

और उसका घर...?'

आखिर माँ को क्रोध आ जाता। कहती, 'तू मेरे पीछे-पीछे क्यो घूम रही है, री ? क्या तुझे लिखना-पढना नही है ? अन्त मे यही होगा कि तू मेरे पैरो से ठोकर खाकर गिर पडेगी..।'

नन्ही-सी बिटिया पारुल ! दिन-भर उछल-कूद मचाती और शाम होते ही नीद मे बेसुध हो जाती। उस समय वह और जाग नही पाती। फिर तो सोये-सोये ही उसके मुँह मे भात के कौर डालने पडते !

और उसके बाद जब करुणामयी उसे बिछौने पर सुला देती, तो फिर वह नीद मे बिलकुल अचेत हो जाती। ..एक ओर सोते हरि मुख्तार महाशय और दूसरी ओर सोती माँ। बीचोबीच सोती पारुल।

गृहिणी कहती, 'तुम्हे पता भी है कि पारुल की इस महीने की फीस नही दी जा सकी है ?'

गृहस्वामी कहते, 'इस महीने रहने दो। अगले महीने एक साथ दो महीनो की फीस दे देगे। इस महीने हाथ बिलकुल खाली है। पिछले महीने का ग्वाले का हिसाब चुकता नही हो पाया है।'

पति-पत्नी के बीच दिन-भर जो भी बात होती वह केवल घर के अभावो और रुपये-पैसे की ज़रूरत से ही जुडी होती। सहज सम्बन्धो की जगह उनके जीवन मे रूखी और नीरस जरूरतो की ही भूमिका मुख्य थी और वे ज़रूरतें हमेशा मुँह बाये सामने खडी रहती। फटे कपड़े को एक ओर सिया नही कि वह दूसरी ओर से फटकर निर्लज्जता को प्रदर्शित कर देता —बस ऐसी ही स्थिति थी। करुणामयी का सारा जीवन ही इस निर्लज्जता को प्राण-पण से ढाँपने के प्रयासो का इतिहास रहा।

उस दिन जब रुग्ण गृहस्वामी को घर मे छोडकर वह अकेली हाथ मे थैली लिये बाज़ार की ओर बढ रही थी, उस समय ये पुरानी बाते ही याद आ रही थी। याद आ रही थी उस दिन की, जिस दिन पारुल ने जन्म लिया था। उस समय भली-भाँति पौ भी नही फटी थी। बुढिया दाई शाम को आ गयी थी, खुद गृहस्वामी उसे बुला लाये थे।

बहुत कह-सुनकर गृहस्वामी ने दस रुपयो मे राज़ी किया था उस बुढिया दाई को। शुरू मे तो वह एकबारगी बीस रुपये माँग बैठी थी।

गृहस्वामी ने बडी आशा सँजो रखी थी कि पुत्र-रत्न होगा।

दस रुपयो का खर्च—सच पूछा जाये तो—कोई अधिक नही था। चीज़ो के दाम जिस तरह बढ रहे थे, दस रुपयो की कीमत ही क्या थी! नही तो कारपोरेशन के खैराती अस्पताल मे जाने पर दस रुपयो से अधिक का ही खर्च बैठता।

दाई शाम को आयी और उसी समय से गृहस्वामी को छटपटाहट होने लगी। और फिर उन्होने दाई को बुलाकर पूछा, 'क्यो, कैसा लग रहा है तुम्हे? क्या होगा? लडका या लडकी?'

दाई ने जवाब दिया था, 'बाबू, लगता तो यही है कि लडका होगा। दर्द जब इतनी देर तक ..।'

गृहस्वामी बारम्बार माँ काली का स्मरण कर रहे थे। माँ काली को छोडकर और फिर भरोसा भी किस पर किया जाता?

किन्तु जब रात के तीन बज गये, उस समय करुणामयी दर्द से कराहने लगी। गृहस्वामी बाहर चबूतरे पर चहलकदमी करते हुए बार-बार माँ काली का स्मरण करने लगे। उसके बाद हठात एक शिशु के रोने की आवाज़ सुनायी पडते ही वह रुक गये। चहलकदमी करते-करते ही वह एकाएक पत्थर की तरह अचल-अटल हो गये।

कुछ ही क्षणो मे दाई बाहर आकर बोली, 'लडकी हुई है बाबू, लडकी ..!'

'क्या कहा? लडकी? लडकी हुई है...?'

दाई ने कहा, 'हाँ।'

कहकर दाई तुरत ही प्रसूति-गृह के भीतर लौट गयी।

यही सही! लडकी है, इसलिए इसे फेक तो नही दिया जा सकता। भाग्य यदि अनुकूल हो तो बहुधा एक लडकी भी दस लडको का काम करती है। वैसा ही यदि दामाद भी मिले तो फिर वह अपने औरस पुत्र की तरह ही सास-ससुर की देख-भाल कर सकता है।

गृहस्वामी जब अस्वस्थ हुए, उस समय करुणामयी को ऐसा लगा कि पारुल अगर लडकी न होकर लड़का होती तो फिर उसे कुछ भी चिन्ता न होती। एक ओर गृहस्वामी की बीमारी, और उस पर आँखो के

सामने सयानी पारुल गले मे फँसे काँटे के समान चुभने लगी।

पारुल ने कहा था, 'माँ, तुम्हे और अब बाजार नही जाना होगा। अब से मैं खुद बाजार जाऊँगी।'

पारुल की बात सुनकर माँ चौक उठती। कहती, 'तू क्या कह रही है, बेटी! तू बाजार जायेगी?'

'हाँ, जाऊँगी। क्यो, बाजार जाने मे क्या हर्ज है?'

'मुहल्ले मे फिर क्या इसके बाद हम लोगो की कोई प्रतिष्ठा रहेगी?'

पारुल कहती, 'मुहल्ले के लोग कोई हमे खिलाने नही आते कि हमे उनकी परवाह करनी पडेगी!'

तो उस समय ऐसी परिस्थिति आ गयी थी कि सडक-बाजार पर निकले बिना चारा न था। इतने दिनो तक वह स्कूल की बस मे बैठकर जाती-आती रही। कहाँ तो बाजार है और कहाँ दवा की दुकान, कुछ भी नही जानती वह। लेकिन स्कूल की फीस न दे पाने के कारण स्कूल से उसका नाम काट दिया गया। वहाँ जाने का अब और उसे कोई अधिकार नही रहा। मुहल्ले की लडकियाँ उस समय भी बस मे बैठकर स्कूल जाती। उनके घरो के सामने प्रतिदिन नियमत बस आकर रुकती। उस समय मुहल्ले की सारी लडकियाँ नियमपूर्वक स्कूल जाती, किन्तु सिर्फ पारुल को उस समय कोई जल्दबाजी नही होती। जल्दी से भात खाकर तथा किताब-काँपी लेकर माँ के सामने हडबडी मचाने की कोई जरूरत नही रह गयी। वह उस समय रसोईघर मे रसोई बनाने मे व्यस्त रहती और माँ व्यस्त रहती पिताजी की सेवा-शुश्रूषा मे।

माँ केवल बीच-बीच मे उसे सात्वना देती। कहती, 'तू कुछ भी फिक्र न कर। तेरे बाबा अच्छे हो जाये जरा, फिर तुझे दोबारा स्कूल जाने का मौका मिलेगा। बाकी फीस चुकता कर देने पर ही रजिस्टर मे फिर से तेरा नाम लिख दिया जायेगा। तू कुछ भी फिक्र मत कर...।'

किन्तु स्कूल के रजिस्टर मे और फिर उसका नाम कभी भी नही लिखा गया। स्कूल की बस सामने की गली मे प्रतिदिन ही आयी और गयी, पर उस बस मे और किसी भी दिन बैठना उसे नसीब नही हुआ। पढाई-लिखाई पर हमेशा के लिए पूर्ण-विराम लग गया!

उसके बाद बहुत दिनो के पश्चात जब एक दिन पिताजी चल बसे तो फिर माँ असहाय होकर टूट-सी गयी। और उसी बहाने उसके जीवन मे प्रवेश किया अलकेश और तारक ने और उनके साथ आये उनके 'दरिद्र बान्धव भडार' के दूसरे सदस्य-गण।

पारुल—एक साधारण-सी लडकी। कलकत्ता की साधारण लडकियों की तरह वह भी एक थी। पारुल की ही तरह और कितनी लडकियाँ इस कलकत्ता महानगरी मे इसी तरह के साधारण परिवारो मे जनमी है और साधारण लडकियो की तरह ही शेष हो गयी है। उसका कोई हिसाब-किताब लिखा हुआ नही है।

किन्तु लिखा हुआ है कलकत्ता की पुलिस की पुरानी रेकॅर्ड-बुक मे। उस रेकॅर्ड-बुक मे साधु-पुरुषो या महापुरुषो का नाम कही भी अकित नही है। नाम है तो—चोर-बदमाशो का, गुडो का और खूनियो का। एक दिन उन नामो को लेकर कितनी खोज-बीन होती थी, कितनी खाना-तलाशी होती थी, कितनी जिरह होती थी, कितनी धर-पकड होती थी और कितनी रिपोर्टें लिखी जाती थी। लेकिन फिर एक दिन काल-चक्र मे उन नामो के ऊपर धूल की परतें जम गयी है और वह रेकॅर्ड-बुक 'रेकॅर्ड-रूम' के लोहे के रैक पर रख दी गयी है। उस समय सरकारी फाइल पर लिख दिया—'फाइल क्लोज्ड।' यानी फाइल बन्द!

आज मिस्टर जॉन सिमसन बहुत दिनो के बाद कलकत्ता आये है। उस समय यदि वह पुन लाल बाज़ार मे अपनी उस पुरानी फाइल को ढूँढ निकालते तो धूल झाडने के बाद वह फाइल पर लिखा हुआ पाते—'फाइल क्लोज्ड।'

सच पूछा जाये तो उस समय वही फाइल सबसे, अधिक सजीव थी। वह फाइल एक बार मिस्टर डगलस की मेज़ पर जाती और फिर एक बार जाती मिस्टर सिमसन के चेम्बर मे। विप्लवी लडके और उनके नेता जो कुछ भी करते, उसका सब लेखा-जोखा रहता उस फाइल मे। कभी लिखा

होता प्रफुल्ल चौधरी के बारे मे। कब वे ढाका गये और कब मैमनसिंह अथवा कब वे कलकत्ता लौटे और कब उन्हे मेदिनीपुर मे देखा गया—इस सबकी रिपोर्ट इस फाइल मे स्थान पाती। और फिर मिस्टर सिमसन उस पर अपना नोट लिख देते।

एक जासूस ने आकर खबर दी, 'सर, आज मैने जयप्रकाश नारायण को हावडा स्टेशन पर दिल्ली-मेल मे बैठते हुए देखा।'

'टिकट कहाँ की थी ?'

'यह तो पता नही, सर! हावडा स्टेशन पर ड्यूटी थी मेरी। मैने देखा कि जयप्रकाशजी गाडी छूटने के एक सेकड पहले हठात दौडते-दौडते आये एव भीड को चीरते हुए गाडी पर सवार हो गये। उसके बाद उन्हे मैं देख नही पाया।'

'ठीक है।'

मिस्टर सिमसन ने चाबी लगाकर आलमारी खोली और वहाँ से फाइल निकालकर उस पर एक आवश्यक नोट लिख डाला। उसके बाद उन्होने जाकर वह फाइल मिस्टर डगलस को दिखायी। मिस्टर डगलस ने भी कलम चलाकर जाने क्या हुक्म लिख दिया फाइल पर! उस हुक्म के मुताबिक दिल्ली-मेल के रास्ते पर पडने वाले पटना, इलाहाबाद से लेकर दिल्ली तक—सभी बडे-बडे स्टेशनो पर पुलिस के उच्च अधिकारियो को खुफिया आदेश भेज दिये गये।

सिर्फ जयप्रकाश नारायण नही! उस फाइल मे एम० के० गाधी है और सुभाषचन्द्र बोस भी। मुहम्मद अली जिन्ना है, नाजिमुद्दीन है, जवाहरलाल नेहरू है और है श्यामाप्रसाद मुखर्जी। कौन नही है उसमे ? सभी तो है ब्रिटिश-साम्राज्य के दुश्मन, अँगरेजो के दुश्मन!

और एक आदमी आकर खबर देता, 'सर, कडेया के एक घर पर प्रफुल्ल चौधरी आये हुए है। मैं देखकर आया हूँ।'

'प्रफुल्ल चौधरी, वही गुडो का लीडर ? कब आया वह कलकत्ता मे ?'

'कल, सर!'

'तुम ठीक तो कह रहे हो ?'

'हाँ, सर! 'दरिद्र बान्धव भडार' के लडको का पीछा कर रहा था।

देख रहा था कि आखिर वे किधर जाते है ? बालीगज की तरफ से उत्तर की ओर सब जा रहे थे। मैने भी उनका पीछा करना जारी रखा। मैंने देखा कि कडेया के पास एक घर के भीतर जाकर वे गायब हो गये।'

'उसके बाद ?'

'तब मुझे सन्देह हुआ और देखने पर मैने वहाँ प्रफुल्ल चौधरी को पाया।'

'प्रफुल्ल चौधरी को तुमने पहचाना किस तरह ?'

'सर, आपने हम लोगो को जो फोटो दिखायी थी, उसके साथ उनकी शक्ल-सूरत मिलती थी। इसी कारण मैने उन्हे पहचान लिया।'

'उसके बाद ?'

'उसके बाद, सर, सीधा वही से दौडा हुआ आपके पास आया हूँ।'

इन सब घटनाओ की रिपोर्ट मिलते ही तुरन्त फाइल मे उसे लिपि-बद्ध कर दिया जाता। दफतर के बडे दारोगा और छोटे दारोगा—सभी सक्रिय हो उठते। तभी आलमारी से वह पोथा निकाला जाता। खबर देने वाले की रिपोर्ट को उसमे दर्ज किया जाता। मिस्टर सिमसन गाडी मे बैठकर सादी पोशाक मे चले गये कडेया के उस मकान के सामने।

जाकर पूछा, 'क्या इस घर मे प्रफुल्ल चौधरी है ?'

'प्रफुल्ल चौधरी नाम के तो कोई भी सज्जन यहाँ नही है।'

'जरूर है। हम सब एक बार घर की तलाशी लेगे।'

'लीजिये। ले लीजिये तलाशी !'

'भारत रक्षा अधिनियम' का जाल बिछाकर तब सारे घर की तलाशी होती, सारे मुहल्ले की तलाशी होती, सारे देश की तलाशी होती। कोई भी कही अपने-आपको छिपाकर नही रख सकेगा। जो देश का कल्याण चाहते है, उन्हे वे गिरफ्तार करेगे, फाँसी देंगे और उन्हे देश-निकाला दे डालेंगे। उन्होने हमारे गाधी को गिरफ्तार किया है, नेहरू को गिरफ्तार किया है, अबुलकलाम आजाद को गिरफ्तार किया है, और गिरफ्तार किया है सरदार वल्लभभाई पटेल को। युद्ध के समय जिन्होने उनसे दुश्मनी की थी, उनके साथ वह भी वैसा ही करेंगे और उन्हे जेलो मे ठूंस देगे। कौन है ? कहाँ है ? सामने निकलकर आओ, हमारे हाथो गिरफ्तारी कराओ।

यदि माफी की भीख माँगो तो हम तुम्हे माफ कर सकते है, नही तो खोज-कर पकडे जाने पर तुम्हे हम फाँसी के फन्दे से लटका देगे...।

रात मे जब ब्लैक-आउट हो जाता, तब खिड़की-दरवाज़े बन्द करने के बाद पारुल मानो कान लगाकर प्रत्येक क्षण पदचाप सुना करती। किसी-न-किसी दिन बिना कुछ कहे-सुने अलकेश आ धमकता।

'अलकेश-दा, तुम ? कहाँ से आ रहे हो तुम ?'

तुरन्त ही घर की बत्ती बुझा दी अलकेश ने।

अलकेश ने फुसफुसाते हुए पूछा, 'तुम सब कैसे हो ?'

'इतने दिन तक कहाँ थे तुम ? हम लोग सभी बहुत चिन्तित थे।'

अलकेश ने पूछा, 'तारक ? तारक क्या हाल है ? तारक आया करता है क्या ?'

पारुल ने जवाब दिया, 'हाँ। तारक-दा यदि नही आते तो हम सब कभी के मर गये होते।'

'मासी माँ ? मासी माँ कैसी हैं ?'

पारुल बोली, 'हम सबकी बात रहने दो। अपना हाल सुनाओ। तुम तो चले गये और तुम्हारी कोई खबर तक मै नही पा सकी। पहले सुना था कि तुम मेदिनीपुर गये हो। उसके बाद एक दिन आते ही जाने फिर कहाँ गायब हो गये !'

'तुमने मेरे सम्बन्ध मे किसी को कुछ बतलाया तो नही ?'

'नही। जानते हो, तुम्हे खोजने के लिए हमारे घर पर पुलिस आयी थी।'

'पुलिस ! तुमने उनसे क्या कहा ?'

'मैंने बतलाया कि हमारे घर पर कोई भी पुरुष-मानुष नही रहता। उस पर उन्होने पूछा कि घर के बाहर का काम का कौन सभालता है ? मैंने कहा—मैं सभालती हूँ और 'दरिद्र बान्धव भडार' के सदस्य मेरी सहायता करते हैं। उसके बाद वे चले गये।'

अलकेश बोला, 'तुमने ठीक ही कहा।'

उसके बाद कुछ रुककर उसने कहा, 'क्या खाने को कुछ मिलेगा घर मे ? दो दिन हो गये, कुछ भी खाया नही मैंने।'

'क्या खाओगे, बतलाओ ?'

'जो भी कुछ हो, मुझे दो । मूढी अगर हो तो वह भी दे सकती हो।'

पारुल ने कहा, 'बासी रोटी है, और गुड भी है ।'

'ठीक है, वही दो ।'

सुबह के जलपान के लिए कुछ अधिक रोटियाँ रसोईघर मे रखी हुई थी। पारुल ने वही रोटियाँ ला दी। साथ मे थोडा-सा गुड भी था । एक ही बार मे सब-कुछ खा-पीकर अलकेश ने मुँह से सन्तोष का साँस लिया। उसके बाद तुरत ही उसने एक गिलास और पानी भी पी डाला।

कहने लगा, 'जानती हो, वे सब मुझे चूहे की तरह खदेडते फिर रहे हैं। न तो खाने का ठिकाना है, न ही सोने का। आज काफी दिनो के बाद मुझे भरपेट भोजन मिला, यह मैं जीवन-भर भूलूँगा नही।'

पारुल बोली, 'हाय माँ ! मैंने तो तुम्हे सिर्फ कुछेक बासी रोटियाँ दी और दिया थोडा-सा गुड। क्या इस तरह कभी किसी को भोजन कराया जाता है ? थोडी देर पहले भी यदि खबर मिली होती तो मैं तुम्हारे लिए भोजन तैयार रखती। तारक-दा की मार्फत यदि तुम थोडी देर पहले खबर भिजवा देते तो...।'

अलकेश बिछौने पर लेट गया।

पारुल बोली, 'यह तकिया सिरहाने रख लो अलकेश दा, तुम्हे आराम मिलेगा।'

अलकेश ने अपने सिर के नीचे तकिया लगा लिया। उसने कहा, 'आराम ! आराम की बात कह रही हो ? सारे देश मे तो आग लगी हुई है और मै करूँगा आराम ? लेकिन क्या तुम यह समझती हो कि मैं आराम करना नही चाहता ? देखो, सभी लोग जैसा करते है, मेरे भाई-बन्धु आज जो भी कुछ कर रहे है...मैं भी वही कर सकता था। मैं भी शादी-ब्याह करके बेटे-बेटियो का बाप बन सकता था और सुख से अपना घर-ससार चला सकता था। किन्तु मैंने वैसा क्यो नही किया, कहो तो ? क्यो मैने तुम्हारे जैसे परिवारो की रक्षा करने के उद्देश्य से 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की ? लेकिन यदि उसकी स्थापना हुई तो अब वह टूट क्यो

गया है ?'

पारुल हैरान हो गयी। उसने पूछा, 'टूट गया ?'

'हॉ, टूट ही तो गया है। वह एक तरह से टूट जाने के समान ही है।'

पारुल बोली, 'तो फिर तारक-दा किस तरह हम लोगो की मदद करते है ? हमारा राशन ला देते है, हमारे लिए तेल-नमक-मसाला-सब्ज़ी और कोयला से शुरू करके कपडे-लत्ते, साया और कमीज़ तक सब-कुछ तो ला देते है।'

'किस तरह वह इन कामो को कर पाता है, यदि तुम जान पाती तो तुम ज्यादा हैरान हो जाती।'

पारुल ने पूछा, 'कही वह अपनी जेब से तो नही देता ?'

अलकेश ने कहा, 'उसकी खुद की जेब मे एक पैसा भी नही। वह किसी दूसरे को भला क्या देगा ?'

'तो फिर किस तरह देता है वह ?'

अलकेश ने कहा, 'क्यो, तुमसे उसने कुछ बतलाया नही ?'

'कहॉ, नही तो ! कुछ भी तो नही बतलाया मुझे। मै तो यही जानती हूँ कि तुम्हारे 'दरिद्र बान्धव भंडार' के रुपयो से हमारा खर्च चलता है। उससे अधिक न तो मैं कुछ जानती हूँ और न ही तारक-दा ने उससे अधिक कुछ मुझे बतलाया है !'

'तो फिर सुनोगी ?'

पारुल ने कहा, 'हाँ।'

अलकेश ने कहा, 'हमारी पार्टी के लिए बहुत-से रुपये तरह-तरह के स्रोतो से आते है। वही उस दिन जो फरीदपुर के पोस्ट-ऑफिस मे डकैती हो गयी, वे रुपये किस काम मे लगे ? तुम तो जानती ही हो कि हमारा खर्च कितना है ! कुछ यहाँ चाहिए, तो कुछ वहाँ। रेलगाड़ी की लूट से जो रुपये आते है, उसका भी साथ-साथ ही हिस्सा बँट जाता है। उन रुपयो से दरअसल गोली-बारूद और पिस्तौल खरीदे जाने की बात थी। लेकिन गोली-बारूद और पिस्तौल खरीदने मे ही सारे रुपये खर्च नही हुए। हम लोगो के बीच जिनके घर की हालत ठीक नही होती, उनकी ज़रूरते भी इन्ही रुपयो से पूरी की जाती है।'

पारुल बातें सुनते-सुनते मानो आसमान से गिर पडी।

अलकेश ने कहा, 'तारक अपने परिवार का बहाना बनाकर तुम लोगों के लिए रुपये खर्च करता है और फिर देखा जाये तो उसके पास पहनने के लिए सिर्फ एक ही कुरता है, जूतो की भी सिर्फ एक जोडी है। कितनी ही बार उसे भूखा रह जाना पडता है।'

'लेकिन उसका परिवार?'

'परिवार वगैरह कुछ है ही नही उसका। एक विधवा माँ थी। उसने भी बेटे की करतूतों से तग आकर एक दिन फाँसी लगाकर छुट्टी पायी।'

'तो फिर तारक-दा के घर पर कौन है?'

'होगा और कौन? कोई नही है। झूठ-मूठ मकान का किराया देना पड़ता था, इसलिए तारक ने मकान भी छोड दिया। अब रात मे सिर छिपाने के लिए जब-जैसा सम्भव हो पाता है, कोई जगह ढूँढ लेता है। किसी दिन सियालदह स्टेशन का प्लेटफार्म तो किसी दिन किसी भी मकान के सामने की ड्योढी! अथवा कभी-कभी तो बमो की मार से बचने के लिए रास्ते के किनारे बनायी गयी खाइयो के भीतर भी वह सो जाता है।'

पारुल ने कहा, 'लेकिन ये बाते तो कभी तारक-दा ने मुझे बतलायी ही नही।'

अलकेश ने कहा, 'तारक हमेशा से है ही ऐसा। बिलकुल पागल...।'

पारुल ने कहा, 'तारक-दा भी लेकिन तुम्हारा नाम खूब रटता है। तारक-दा भी कहता है कि अलकेश बिलकुल पागल है। सच कहती हूँ, उसे तुमसे बेहद प्यार है।'

अलकेश ने कहा, 'तारक के सामने मैं कुछ भी नही हूँ। मुझ मे उसकी तरह देश-भक्ति कहाँ?...'हॉलवेल मॉनूमेट' के बारे मे तो तुम जानती ही होगी। अंगरेजो ने एक झूठी कहानी गढ ली थी कि नवाब सिराजुद्दौला के आदमियो ने एक छोटी-सी कोठरी मे करीब डेढ-सौ अगरेजो को रात-भर बन्द रखा था और उसके परिणामस्वरूप उनमे से अधिकाश मर गये थे। इस कथित अत्याचार की स्मृति ताजा रखने के लिए ही 'हॉलवेल मॉनूमेट' बनवाया गया था। सुभाषचन्द्र बोस ने इस 'मॉनूमेट' को तोड डालने का जब आन्दोलन किया तो तारक उसी दल मे था। पुलिस

ने उसे खत्म कर डालने के लिए खूब लाठियाँ बरसायी उस पर; फिर भी जब तक वह बेहोश नही हो गया, उसने अपने हाथ से हथौड़ी छोडी नही। डर नाम की भी कोई चीज होती है, यह उसने कभी समझा ही नही।'

हठात अलकेश उठकर बैठ गया।

उसने कहा, 'बाहर जैसे कोई आवाज़ हुई है न !'

'आवाज ? किसकी आवाज़ ? कहाँ, मुझे तो कुछ भी सुनायी नही पडता।'

अलकेश ने कहा, 'तुम बत्ती बुझा दो। मुझे सन्देह हो रहा है।'

पारुल ने फूँक मारकर बत्ती बुझा दी। क्षण-भर मे ही सारा कमरा अन्धकार मे डूब गया।

पारुल बोली, 'तुम्हे मैं तो बिलकुल देख ही नही पा रही हूँ, अलकेश-दा !'

अलकेश ने कहा, 'मुझे देखकर ही भला तुम्हे कौन-सा लाभ होगा ? मैं तो अभी ही चला जाऊँगा।'

'क्यो, अभी-अभी आये हो कि जाने की बात करने लगे ? थोडा सो लेते तुम।'

अलकेश ने कहा, 'एक ही बिछौना है। अगर मैं सो जाऊँगा तो फिर तुम कहाँ सोओगी ?'

पारुल ने कहा, 'मैं एक रात न भी सोऊँ तो क्या बिगड़ जायेगा ?'

'तुम यदि नही सोओगी तो तुम्हारी तबीयत खराब हो जायेगी। कल जब दिन-भर जम्हाई लेती रहोगी, तो सिर्फ मुझे ही दोष दोगी। और कल सुबह जब तारक बाजार से सौदा लेकर आयेगा, तब अगर उसने पूछ लिया कि इतनी जम्हाइयाँ क्यो ले रही हो, तब क्या जवाब दोगी ?'

पारुल ने कहा, 'जो भी जवाब क्यो न दूँ, कम-से-कम तुम्हे थोड़ा-सा भी दोष नही दूँगी, अलकेश-दा ! तुमने हम लोगो का जो उपकार किया है, क्या उसे मैं अपने जीवन मे कभी भी भूल सकती हूँ ? जिस दिन मेरे पिताजी ने आखिरी साँस ली, उस दिन अगर तुम न होते तो क्या होता, बोलो तो ? तुमने अपने बदन का दुशाला बेचकर पिताजी के अन्तिम

सस्कार का खर्च जुटाया था, यह भी मुझे पता है।'

अँधेरे मे ही अलकेश उठ बैठा।

उसने पूछा, 'किसने तुमसे यह सब कहा है ?'

पारुल चुप ही रही। उसने इस बात का कोई जवाब नही दिया।

अलकेश ने फिर कहा, 'क्यो, कोई जवाब नही दे रही हो ? ये सारी बाते तुम कैसे जान सकी हो ? किसने तुम्हे बतलाया ?'

पारुल तब भी चुप थी।

'अरे, कहाँ हो तुम ? मेरी बात सुनायी नही पड रही है क्या तुम्हे ? कहाँ हो तुम ?'

यह कहकर बिछौने से उठ खड़ा हुआ अलकेश। धुँधले अँधेरे मे अलकेश का स्वर बडा कर्कश मालूम पड़ा।

पास के कमरे से हठात माँ बोल उठी, 'अरी पारू, कौन आया है री ? तुम्हारे कमरे से किसकी आवाज आ रही है ? अरी पारू... !'

पारुल दरवाज़ा खोलकर माँ के कमरे की ओर बढ रही थी। अलकेश ने कहा, 'तुम जा क्यो रही हो ? रुको...सुनो !'

पारुल ने दबी ज़बान से कहा, 'माँ जाग गयी है, तुम्हे सुनायी नहीं पड़ रहा क्या ?'

'सुनायी पड़ भी रहा हो तो इससे क्या ? मैंने क्या कोई ज्यादती की है ?'

'लेकिन क्या सिर्फ घर के भीतर माँ ही सुन रही है ! बाहर रास्ते मे यदि कोई हो तो उसे भी सुनायी पड रहा होगा ! तुम लुक-छिपकर हमारे घर मे आये हो, इस तरह की बात यदि फैले तो क्या यह अच्छा होगा ?'

अलकेश ने कहा, 'अच्छा या खराब क्या होता है, यह मुझे नही मालूम। देखो, चूहे की भाँति छिप-छिपकर इस तरह रहना अब और मेरे लिए सम्भव नही। कितने दिन तक मै इस तरह रह सकूँगा ? बिना खाये, बिना सोये आखिर मनुष्य कितने दिन तक इस तरह रह सकता है ?'

हठात बाहर से न जाने कैसे टॉर्च की रोशनी आँगन मे पडी और दोनो ही चौंक उठे। साथ-ही-साथ, दरवाजा जोरो से खटखटाया जाने

लगा।

पारुल ने अँधेरे के बीच करवट बदलकर गौर से देखा कि अलकेश गायब हो चुका था। माँ के कमरे से आवाज़ आयी, 'कौन है री, पारू? कौन है? कौन इस तरह दरवाज़ा पीट रहा है? अरी पारू...!'

पारुल ने फिर रोशनी की। उसके बाद उसने इधर-उधर चारो ओर गौर से देखा।

सदर दरवाजे पर दस्तक देते हुए उस समय भी बाहर से कोई पुकार-कर कह रहा था, 'दरवाजा खोलिये, दरवाज़ा खोलिये...!'

पारुल ने दरवाजा खोलते ही देखा—बाहर एक साहब खडा था और साथ था पुलिस का एक सिपाही।

'इस मकान मे कुछ समय पहले ही कौन आया था?'

पारुल ने कहा, 'कोई भी तो नही आया।'

'ज़रूर आया था—उसका नाम है प्रफुल्ल चौधरी। क्या प्रफुल्ल चौधरी यहाँ नही आया था?'

साहब की ओर देखते हुए पारुल ने साहसपूर्वक कहा, 'नही, मैं कह रही हूँ न कि कोई नही आया।'

साहब इस बार सामने की ओर कुछ आगे चले आये।

उन्होने कहा, 'हम घर की तलाशी लेगे।'

'ठीक है, लीजिये!'

साहब के साथ उनके साथ वाला पुलिस का काला कर्मचारी भी भीतर घुसा। टार्च की रोशनी फेक-फेककर वे घर का कोना-कोना तलाशने लगे। उसके बाद वे माँ के कमरे की, पारुल के कमरे की, बिछौने की, बक्सो की, रसोईघर की, शौच-गृह की—सब की बारीकी से तलाशी लेते हुए खोज करने लगे।

माँ पुकारने लगी, 'ओ पारू, पारू रे, पारू...!'

तुरन्त ही पारुल उठ बैठी। आँखें मलते हुए उसने चारो ओर देखा। अरे, कहाँ गयी पुलिस? और वह साहब! सुबह हो चुकी थी और खिड़की की राह से आ रही धूप तख्तपोश के एक कोने पर पड रही थी।

माँ के कमरे मे जाकर उसने देखा कि माँ बिछौने पर बैठी हुई थी।

और बिटिया रानी को पुकारते-पुकारते उसका गला सूख गया था। बेटी को देखकर माँ ने कहा, 'हाँ री, कहाँ गयी थी तू ? तुझे पुकारते-पुकारते मेरा गला सूख गया।'

पारुल ने कहा, 'मैं सो गयी थी, माँ !'

माँ कहने लगी, 'मै ठहरी बूढी औरत, मेरी आँखो मे मुई नीद कहाँ ? मैं सारी रात जाग-जागकर केवल तुम्हारे बारे मे ही सोचती रहती हूँ और भगवान से निवेदन करती रहती हूँ...।'

'मेरे बारे मे सोचने की कोई ज़रूरत नही तुम्हें। तुम खुद अपनी ही सोचो तो मेरी जान बचे।'

माँ ने कहा, 'क्या कह रही है तू ? तेरे बारे मे मैं नही सोचूंगी तो भला और किसके बारे मे सोचूंगी ? ज़रा बतलाना तो कि तुझे छोडकर ऐसा कौन है, जिसकी मुझे चिन्ता हो ! मेरे मरने के बाद तेरी क्या दशा होगी, क्या उसके सम्बन्ध मे मुझे चिन्ता-फिक्र नही होगी ?'

'नही-नही, दुहाई है, माँ ! तुम्हे अब और मेरी फिक्र करने की कोई ज़रूरत नही !'

माँ ने कहा, 'तो अगर मैं तेरी फिक्र नही करूँगी तो दूसरा कौन करेगा तेरी फिक्र ? क्या तेरे पिताजी जीवित है ? अथवा क्या तुम्हारे कोई काका या मामा है ?'

पारुल ने कहा, 'तो जिनके काका-मामा नही, वे क्या जीवित नही रहते ? क्या वे मर जाते है ?'

'यह बात तू मत कर। माँ होकर अगर मै तेरे बारे मे नही सोचूंगी तो और किसके बारे मे सोचूंगी ?'

उसके बाद अपने मन-ही-मन मे वह कहने लगी, 'सभी मेरे भाग्य का दोप है, सिर्फ मेरे भाग्य का ! अगर तेरे हाथ भी पीले कर पाती तो फिर मुझे क्या चिन्ता थी ? फिर मैं कुछ शान्ति से मर जाती !'

माँ के पास जाने पर इस तरह की ऊल-जलूल बाते ही सुननी पडती। पारुल बिना कुछ जवाब दिये बाहर चली आयी। आश्चर्य की बात है, आखिर ऐसा सपना उसे क्यो आया ! उसके सामने सारे काम बाकी पडे थे। फिर भी जाने कैसा एक आलस्य बरबस मानो उसे पूरी तरह अपनी

पकड़ मे लेने के लिए बढ रहा था।

इस समय तक तो रोज़ ही तारक-दा बाजार से सौदा लेकर आ जाया करता है। आज इतनी देर हो गयी, फिर भी अभी तक क्यो नही आया वह ?

हठात दरवाजे की कुडी बजने की आवाज़ सुनते ही पारुल ने आगे बढकर दरवाज़ा खोल दिया।

बाज़ार का झोला हाथ मे लिये-लिये ही तारक ने पारुल को देखते ही पूछा, 'कैसी सूरत बना रखी है तुमने ? बीमार तो नही हो ?'

पारुल ने कहा, 'काश, मैं बीमार होती !'

तारक ने पूछा, 'वाह, यह कैसी पहेली बुझा रही हो ?'

पारुल ने कहा, 'कुछ भी अच्छा नही लग रहा है।'

'तब तो निश्चित रूप से तुम्हारे मन मे कोई रोग लग गया है।... उसके लिए भी डाक्टर है।'

पारुल ने कहा, 'एक तो ऐसे ही तुम लोगो के सहारे पर जीवित हूँ, उस पर तुम लोगो के कधे पर और कोई नया बोझ नही लादना चाहती...।'

तारक ठहरा काम-काजी आदमी। कहने लगा, 'छोडो भी। इन फिजूल बातो को सुनने के लिए मेरे पास समय नही है। बाज़ार से जो सामान लाया हूँ, देख लो। मैं अब चलूँगा। हाँ, यदि और कुछ तेल या नमक लाना हो तो अभी ही बतला दो। मैं तुरत ला देता हूँ।'

पारुल ने तारक के हाथ से बाजार का झोला ले लिया और कहा, 'अच्छा तारक-दा, एक बात पूछूँ तुमसे ?'

'क्या पूछना है, पूछो। मैं बडी जल्दी मे हूँ। जो कुछ पूछना है, बस तुरत पूछ डालो।'

पारुल बोली, 'अच्छा, तुम जो हमारे लिए इतना कुछ करते हो, उसमे तुम्हारा क्या स्वार्थ है—बतलाओ तो ? तुम क्या चाहते हो ?'

तारक उसकी बात सुनकर कुछ रुका। फिर उसने पूछा, 'मै क्या चाहता हूँ—इसका मतलब ?'

पारुल ने बात को स्पष्ट करते हुए फिर कहा, 'तुम हमारे लिए इतना

सब-कुछ करते हो। क्यो ?'

तारक ने पूछा, 'आज इतने दिनो के बाद यह सवाल क्यो उठ रहा है, बोलो तो ?'

पारुल ने कहा, 'न, यह ऋण तो मै जीवन मे कभी भी चुका नही पाऊँगी. .।'

'तो क्या मैं यह सब किसी स्वार्थसिद्धि की आशा से करता हूँ, यह कहना चाहती हो ?'

पारुल बोल उठी, 'नही-नही, तुम सच-सच बतलाओ कि तुम हम लोगो के लिए इतना सब-कुछ क्यो करते हो ? तुम्हारा क्या उद्देश्य है ?'

तारक ने कहा, 'यह तो देख रहा हूँ कि बडे झमेले मे फँस गया। इधर मेरे कितने काम पडे हुए हैं और तुम जितनी भी फिजूल बाते हो सकती है, उनकी बाल की खाल निकालने मे सिर खपा रही हो। हठात तुम्हारे दिमाग मे यह पागलपन कैसे घुस आया ?'

पारुल ने कहा, 'फिर तुम मेरी बात हवा मे उडा रहे हो। सचमुच बतलाओ तो, तुम कहाँ रहते हो ..तुम्हारा पता-ठिकाना क्या है...तुम्हारी अपनी आजीविका कैसे चलती है ? ये सारी बाते जानने की इच्छा पहले मैंने कभी नही की, लेकिन आज अगर तुमने इन बातो का उत्तर नही दिया तो फिर मैं तुम्हे जाने ही नही दूंगी।'

'ठीक है। कल से मैं इस घर मे आऊँगा ही नही । तब तो तुम्हे जवाब मिल जायेगा न ?'

पारुल कहने लगी, 'ओह, देख रही हूँ कि तुम्हे खूब गुमान हो गया है। क्या तुम सोचते हो कि इस घर मे आये बिना रह पाओगे ?'

'तो फिर क्या तुम यह सोचती हो कि मेरे यहाँ आने मे गरज सिर्फ मेरी ही है ?'

'और नही तो क्या ?'

तारक का मुख-मडल गम्भीर हो गया। वह कहने लगा, 'यह बात तुम्हारे सिवाय और किसी ने यदि कही होती तो मैं क्या करता, वह तुम खुद अपनी आँखो से देख लेती। लेकिन दुख है कि तुम्हारे मामले मे मैं कुछ भी नही कर पा रहा हूँ।'

पारुल ने कहा, 'मुझे भी दुःख है कि तुम्हारे मुँह से सच्ची बात नही सुन सकी। मैं नही जानती थी कि तुम इतने भीरु हो—डरपोक हो। मैं नही जानती थी कि सच्ची बात कहने मे तुम्हे इतना डर लगेगा!'

तारक ने कहा, 'तुम नही जानती कि मैं अलकेश को कितना चाहता हूँ!'

'तो क्या मैं यह समझूँ कि अलकेश-दा से बहुत स्नेह रखने के कारण ही तुम यहाँ आते हो?'

'इसके सिवाय और क्या बात हो सकती है? तुम लोगों के समान इस मुहल्ले मे और भी बहुत-से असहाय परिवार है। उनकी मदद के लिए भी तो जाता हूँ। लेकिन तुम्हारे घर पर आने का जितना आग्रह मुझ मे रहता है, क्या उतना आग्रह उन परिवारो मे जाने के लिए रहता है? क्या वहाँ भी मैं इसी तरह बार-बार जाता हूँ?'

पारुल ने कहा; 'नही जाते, इसका कारण यह भी हो सकता है कि वहाँ मेरी तरह की कोई असहाय लडकी नही... !'

तारक ने जवाब दिया, 'यह तुम्हारा खयाल-भर है; सत्य नही।'

पारुल ने कहा, 'यदि यह मेरा खयाल ही है तो फिर तुम सच कहो कि मेरा यह खयाल गलत है...।'

'इसके लिए तो तुम्हे उन सभी घरो मे ले जाना होगा; तुम्हे वहाँ ले जाकर यह प्रमाणित करना होगा कि तुम्हारा खयाल गलत है। किन्तु क्या यह सम्भव है? अथवा तुम्ही क्या इसके लिए तैयार हो सकोगी? किन्तु एक बात तो मैं किसी भी तरह समझ नही पा रहा हूँ कि इतने दिन हो गये मुझे यहाँ आते—कभी भी ऐसे सवाल तुम्हारे मुँह से सुने नही; आज इसका कारण आखिर क्या है?'

पारुल ने कहा, 'कारण यह है कि आज दोपहर मे एक अपरिचित व्यक्ति ने आकर हठात पूछा—इस मकान मे अलकेश चक्रवर्ती नाम का कोई आदमी रहता है क्या?'

'ऐसी बात है? कौन था वह व्यक्ति?'

'यह तो मैं नही जानती।'

'तुमने क्या उत्तर दिया?'

पारुल ने कहा, 'जाने मुझे कैसा सन्देह-सा हुआ। मैंने कहा—नही, इस नाम का कोई आदमी इस घर मे नही रहता। हमारे घर मे सिर्फ मै हूँ और है मेरी विधवा माँ। उसके बाद उसने पूछा—तो फिर आप लोगो का बाहर का काम कौन सभालता है ? जवाब मे मैंने कहा—खुद मैं सभालती हूँ और संभालते है हमारे मुहल्ले के 'दरिद्र बान्धव भडार' के तारक-दा।'

'यह सुनकर उस व्यक्ति ने क्या कहा ?'

'कुछ भी नही कहा। फिर वह व्यक्ति लौट गया।'

उसके बाद कुछ रुककर उसने पुन. कहा, 'उसके बाद ही जाने कैसा डर लगने लगा मुझे। मैं सच कह रही हूँ, तारक-दा, मुझे ऐसा लगने लगा कि तुम हम लोगो के लिए इतना करते हो और शायद हम लोगो के कारण तुम्हे काफी तकलीफ उठानी पडे। हो सकता है कि हम लोगो के कारण ही पुलिस एक दिन तुम्हे पकडकर जेल मे डाल दे।'

तारक ने कहा, 'यदि वैसा हुआ भी तो मैं उसके पहले ही तुम्हारे लिए कोई इन्तजाम करके ही जाऊँगा, देख लेना।'

'अलकेश-दा से तुम्हे इतना स्नेह है ?'

तारक ने कहा, 'अलकेश के प्रति मेरे स्नेह के कारण ही मेरी माँ ने गले मे फन्दा लगाकर आत्महत्या कर ली थी, क्या तुम्हे यह पता है ?'

'इसका मतलब ?'

'मतलब यह है कि अलकेश को माँ ने गालियाँ दी थी—गुडा-बदमाश कहा था। उसके प्रतिवाद मे मैंने भी माँ को जी-भरकर खरी-खोटी सुनायी थी। और फिर उस एक विधवा माँ को छोडकर दुनिया मे अपना कहने के लिए मेरा और कोई भी नही था। अलकेश का अपमान मैंने हमेशा अपना अपमान समझा है।'

पारुल ने कहा, 'किन्तु ऐसा बन्धन तो प्राय देखा नही जाता।'

'अलकेश को तुम नही जानती, इसीलिए तुम ऐसा कह रही हो, पारुल ! अलकेश है ही एक ऐसा लडका कि उससे स्नेह किये बिना रहा नही जा सकता। दूसरो की भलाई के लिए, ऐसा कुछ भी नही जो वह न कर सके। जाने के पहले मुझसे बार-बार उसने कहा था—तुम पारुल के परिवार की देख-भाल भली-भाँति करते रहना।'

'मेरे पिता के अन्तिम सस्कार के समय तो अलकेश-दा ने अपने बदन का दुशाला भी बेच दिया था, यह तुम्हारे ही मुँह से सुन चुकी हूँ ।'

तारक ने कहा, 'क्या सिर्फ यही ? अलकेश अगर नही होता तो अकाल के समय कालीघाट के कितने परिवार भूखे-पेट मर-मिट गये होते, इसका कोई हिसाब नही । और फिर वह अपने खुद के घर मे टिक नही पाता । कलकत्ता आते ही पहले वह प्रत्येक घर-घर मे घूमेगा । किसे क्या अभाव है, किसे क्या तकलीफ है—सब-कुछ अपने कानो से सुनने के बाद ही उसे चैन मिलता है ।'

'और खुद अपने घर मे ?'

'घर के साथ उसका कोई भी सम्पर्क नही रहा है ।'

पारुल ने कहा, 'घर से सम्पर्क नही है तो अलकेश-दा रहते कहाँ है ? खाते कहाँ है ?'

'जहाँ मैं रहता हूँ, वही वह भी रहता है । मैं जो कुछ खाता हूँ, वह भी वही खाता है ।'

'तुम कहाँ रहते हो ?'

तारक चुप रहा । उसने कहा, 'मेरी बात रहने दो ।'

पारुल ने कहा, 'तुम्हारी बात क्यो रहने दूँ ? अपनी बात कहने मे तुम्हे इतना संकोच क्यो होता है ? हमेशा तुम अपनी बात कहने मे इस तरह टाल-मटोल क्यो करते हो ?'

तारक ने कहा, 'अलकेश की बात हो रही थी, हठात उसके बीच मेरी बात तुमने क्यो उठायी ? मैं क्या कोई आदमी हूँ ? देखो न, अलकेश मुझे 'दरिद्र बान्धव भडार' का काम सौपकर गया और मैं एक ऐसा निकम्मा आदमी हूँ कि उस काम को ठीक से चला नही पा रहा हूँ । कालीघाट के एक घर मे अभी तुरत एक टायफायड के रोगी के लिए डाक्टर को बुला लाना होगा । कल सारी रात मैं रोगी के पास रहा...वहाँ से सीधा तुम लोगो के लिए बाजार से सौदा लेकर आ रहा हूँ ।'

हठात भीतर से माँ का स्वर सुनायी पडा, 'अरी पारू, क्या बाजार से सामान आ गया ?'

तारक बोल उठा, 'इस समय मासी माँ के साथ और बाते करने का

समय मेरे पास नही है। तुम उन्हे बतला देना कि मै आया था। तुम्हारे साथ बाते करते-करते कितना वक्त गुजर जाता है, पता भी नही चलता। मै अब चलता हूँ। तुम दरवाजा बन्द कर लो।'

यह कहकर एक लम्बा साँस लेता हुआ वह सदर दरवाजा पार कर सडक पर हो लिया।

इतिहास का यह एक मर्मान्तिक सन्धि-युग था। दिल्ली के सिंहासन पर उस समय ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि लॉर्ड वेवल आसीन थे। सारे देश को कठोरता के साथ नियन्त्रित करने के लिए ही उन्हे भेजा गया था एव उन्ही के प्रतिनिधि के रूप मे यहाँ राज-भवन मे विराजमान थे बरोज साहब। 'मत्री' के नाम पर अगरेजो के हाथ की कठपुतलियो के रूप मे राज्य का शासन चलाने वालो के साथ कलकत्ता के पारुल, अलकेश, तारक, निखिल एवं कालीपद आदि का किसी प्रकार का सम्बन्ध नही था। वे सब साधारण मनुष्यो के दान और खैरात के सहारे घुटने टेककर ही जिन्दा थे .. अपना जीवन-पाप भोगने के लिए। वे जिन्दा जरूर थे, पर वे मानो जिन्दा थे और भी अधिक मर्मान्तिक मृत्यु को सहने के लिए।...जिन्होने एक दिन 'अगरेजो ! भारत छोड़ो' का नारा बुलन्द करते हुए रेल की पटरियो को उखाड फेका था, जिन्होने टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काटकर समस्त काम-काज को ठप्प कर देना चाहा था, जिन्होने अगरेजो का सामना होते ही गोली से उडा देना चाहा था, उन्हे अब सही सबक सिखाया जायेगा !

प्रफुल्ल-दा कहते, 'देखे, अब वे किस तरह हमारे ऊपर नियत्रण करते है। हम सभी जब एकमत है, तो फिर हम सबसे पार पाना इतना आसान नही। हम भी यह दिखा देगे कि हमारे किये उन्हे नाको चने चबाने पड़ सकते है।'

अलकेश कहता, 'तो फिर कहिये, अब हमे क्या करना है ? हम सब अब कौन-सा कदम उठायेगे ?'

प्रफुल्ल-दा का उत्तर होता, 'तुम सब इस समय यहाँ से, कलकत्ता से चले जाओ। मै भी शीघ्र ही चला जाऊँगा।'

'कहाँ जायेंगे ?'

'अभी तक मैंने तय नही किया। मुझे ऐसा लगता है कि अब हमे दूसरे मोर्चे पर लडना होगा। बर्मा जब से अगरेजो के हाथ से निकल गया है, तब से उन्होने अपनी युद्ध-नीति बदल दी है।'

'बदली हुई युद्ध-नीति के अनुसार वे क्या करेगे ?'

प्रफुल्ल-दा कहते, 'वे महसूस कर रहे है कि गाधी के स्वतंत्रता-आन्दोलन को तोडने के लिए देश को दो भागो मे बाँट देने की कोशिश करनी होगी। इसे छोड़कर उनके लिए और कोई उपाय नही। हिन्दू और मुसलमानो को अलग-अलग कर सकने मे ही उनकी कार्य-सिद्धि निहित है।'

अलकेश ने कहा, 'तब तो हम लोगो पर भारी विपत्ति आयेगी !'

'विपत्ति की बात सोचने से तो चलेगा नही ! हमे अपना मनोबल व सामर्थ्य और भी बढानी होगी।'

कैसे भयकर दिन थे वे ! सच कहा जाये तो इतिहास का एक दुर्दान्त संक्रान्ति-काल था वह। एक समय तारक, अलकेश, निखिल और कालीपद ने कितनी उम्मीदो के साथ 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की थी। उम्मीद यह थी कि इस जीव-सेवा और समाज-सेवा के माध्यम से ही जन-साधारण मे एकता आयेगी और उस एक हो जाने की शक्ति के द्वारा ही अगरेजो के खिलाफ लडाई लड़ी जायेगी। इसी कारण उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर एक समय हाशिम, सआदतुल्ला एव और भी दूसरे लडको ने काम किया था। एक साथ वे सब एक ही क्लास मे पढे है। सिर्फ शुक्रवार के दिन वे सब सस्कृत पढने के बजाय मौलवी साहब की क्लास मे जाकर अरबी पढते थे...उनमे अगर कुछ फर्क था तो बस इतना ही ! 'दरिद्र बान्धव भंडार' के लिए हाशिम आदि भी कन्धे पर थैला रखे घर-घर घूम चुके हैं। किन्तु उसके बाद न जाने क्या हुआ कि अब वे सब पहले की भाँति नियम-पूर्वक आ नही रहे थे !

अलकेश खुद एक दिन हाशिम के घर गया। साथ मे तारक भी था।

दरवाजा खटखटाते ही हाशिम हाजिर हुआ। अलकेश ने पूछा, 'क्यो भई, आज हम लोगो की ऑफिस मे मीटिंग थी और तुम क्यो नही आये ?'

हाशिम ने जवाब दिया, 'भाई, मुझे एक जरूरी काम पड गया था।'

अलकेश ने कहा, 'लगता है कि तुम्हारी नजरो मे हमारा काम जरूरी नही रहा है !'

हाशिम ने कहा, 'इस बार जो हुआ सो हुआ। देख लेना, इसके बाद से मैं ठीक नियमपूर्वक आया करूँगा।'

इसी तरह बार-बार उन सबको पकड-पकडकर ऑफिस मे लाया जाता। उस समय तक पूरी बात समझ मे आयी नही थी। जो लडके दल मे रहना नही चाहते, उन्हे जोर-जबरदस्ती दल मे रोके रखना अन्याय है। आखिर यह किसी का पारिवारिक काम तो है नही—सभी का काम है। सभी की निःस्वार्थ भावना मे ही इस सेवा-कार्य की सफलता निहित है। उस पर अलकेश का खुद का काम भी आ पडता। उसे आज राजशाही जाना पडता तो कल ढाका, और फिर परसो जाना पडता मेदिनीपुर।

मुलाकात कभी होती भी तो सिर्फ चन्द मिनटो के लिए। और फिर वह भी आधी रात को—सबकी नजर बचाकर। तारक के अड्डो का पता था उसे। तारक कभी मिर्जापुर के एक मकान की ड्योढी मे मिलता, तो कभी सियालदह स्टेशन के प्लेटफार्म के एक कोने मे। या फिर कभी कालीघाट के काली-मन्दिर के सामने दुधवावाला धर्मशाला के बरामदे मे मिलता तारक।

'अरे तारक, तारक !'

हठात नीद टूटते ही तारक सामने देखता अलकेश को। कहता, 'तुम ? तुम कलकत्ता कब आये ?'

'आज ही।'

'कैसे हो ?'

अलकेश ने कहा, 'समाचार ठीक नही है।'

'क्यो, क्या हुआ ?'

'कुछ भी नही। छोडो उन बातो को अभी। 'दरिद्र बान्धव भडार' का क्या हाल है ?'

तारक ने कहा, 'रुपयो की वडी तगी है रे, भाई !

'कितने रुपये चाहिए तुम्हे ?'

तारक ने कहा, 'जितने रुपये तुम दे सको ! मोदीखाने की दुकान का मालिक अब उधार मे और अधिक सामान देने को तैयार नही । उसके प्राय. डेढ़ सौ रुपये बाकी पड़े है।'

अलकेश ने कमर से रुपये निकाले। अँधेरा होने के कारण यह स्पष्ट देखा नही जा सका कि कितने रुपये थे अलकेश के पास। उस अँधेरे मे ही अलकेश ने गिन-गिनकर कुछ नोट तारक को सौप दिये।

'ये रहे डेढ सौ रुपये। और ये तीन सौ रुपये तुम अपने पास रख लो।'

कहते हुए कुल साढे चार सौ रुपये अलकेश ने तारक के हाथो मे रख दिये। तारक ने कहा, 'इतने रुपयो का अभी मैं क्या करूँगा ? तुम अपने पास ही इन्हे रहने दो। जरूरत पडने पर मैं फिर ले लूंगा।'

'मुझसे तुम्हारी कव मुलाकात होगी, इसका कुछ ठीक है रे ? लो, रुपये अभी ही रख लो।...पोटोपाडा गली की वह राधा की माँ कैसी है रे ?'

तारक ने कहा, 'बीच मे तो बुढिया की हालत अब-तब की-सी हो गयी थी...लेकिन अब डाक्टर की दवा खाने के बाद कुछ सुधार है।'

'और बादामतल्ला का वह आलूवाला ?'

तारक ने कहा, 'वह अब रहा नही।'

'रहा नही माने ?'

'अरे, मैने तो उसे बार-बार मना किया था कि अभी बीमारी से उठे हो, अभी बाहर मत निकलो। किन्तु बेटा मेरी बात सुनता कैसे ? इतनी वडी बीमारी के मुँह से मैने उसे बचाया, लेकिन उसकी आदत बदलने वाली कहाँ थी ? वह बाहर सडक पर निकला और साथ-साथ ही आ गया एक मिलिटरी-ट्रक के नीचे...।'

'छोड़ो भी। पिड छूटा। तुम ज्यादा क्या कर सकते थे ? जिसकी किस्मत मे मरना ही लिखा है, उसे कौन बचा सकता है ?'

उसके बाद कुछ सोचकर उसने पूछा, 'और, उन सबो की क्या खबर है रे ?'

'किनकी ? किनकी ख़बर पूछ रहे हो ?'

अलकेश ने कहा, 'वही, यदु भट्टाचार्य लेन मे पारुल के परिवार की। पारुल की माँ अभी भी ज़िन्दा है या टन् बोल गयी ?'

तारक ने कहा, 'एक तरह से ज़िन्दा ही है । मैं मासी माँ को अफीम सप्लाई किये जा रहा हूँ । किन्तु बीच मे एक बार नल के पास जाते हुए वह गिर पडी थी । अब तो वह लेटी हुई ही रहती है...लेकिन जब तक जगी रहती है, तब तक उसकी अपनी बेटी के साथ खटर-पटर चलती रहती है ।'

'और पारुल ?'

'पारुल तुम्हारे बारे मे पूछ रही थी ।'

'मेरे बारे मे ? क्यो ?'

'तुम्हारे बारे मे मुझसे बहुत-सी बाते सुनती है तो, शायद इसीलिए। उसके पास जब तक मै रहता हूँ, वह सिर्फ तुम्हारे सम्बन्ध मे ही बातें करती रहती है ।'

उसके बाद हठात उसे और एक बात याद आ गयी। कहने लगा, 'जानते हो, एक कांड हो गया । एक दिन अकस्मात उनके घर पर एक जासूस आया था । पूछ रहा था कि क्या उनके घर पर अलकेश चक्रवर्ती नाम का कोई आदमी आया करता है ?'

'यह क्या ? मुझे खोजने कोई पारुल लोगो के घर तक जा पहुँचा ?'

'यही तो सुना था । क्या उन लोगों के घर चलोगे ?'

'इस समय ? इतनी रात मे ?'

तारक ने कहा, 'इससे क्या हुआ ? तुम्हारे जाने पर, देखना, पारुल बहुत खुश होगी ! हर समय तो वह मुझसे तुम्हारे बारे मे खोद-खोदकर पूछती रहती है ।'

उसकी बात सुनकर अलकेश ने कहा, 'यह लडकी तो अच्छी नही। उसे अधिक सिर चढाने की तुम्हे ज़रूरत नही । लडकियो के साथ अधिक मिल-जोल भी ठीक नही। इससे काम का हर्ज होता है। तुम अपने मतलब से मतलब रखा करो, बस। तुम्हे वहाँ जाने की जब ज़रूरत हो, तभी जाया करो। जितनी बात ज़रूरी है, उतनी ही बात किया करो, उससे एक अक्षर

भी अधिक नही...।'

तारक को मानो कुछ चोट लगी।

कहने लगा, 'मैं तो कोई ज्यादा जाता नही हूँ। सिर्फ सवेरे बाजार से सौदा लेकर वहाँ पहुँच जाता हूँ और फिर उलटे पाँवो लौट आता हूँ। अधिक बातें करने के लिए मेरे पास इतना समय ही नही है!'

अलकेश ने कहा, 'बस यही ठीक है। इस समय हम लोग अगर समय बरबाद करेगे तो कैसे चलेगा? हम लोगो की हालत बहुत खराब है रे! पता नही, 'दरिद्र बान्धव भडार' को कब तक खीचे चलूँगा! यही देखो न, रुपयो की बेहद कमी चल रही है। मेरे पास जो कुछ रुपये देख रहे हो, वे सब लूट के रुपये है।'

'कहाँ पर लूट की गयी है रे?'

'फरीदपुर ट्रेन डकैती के रुपये है ये। पुलिस और हमारे बीच खूब गोलियो का आदान-प्रदान हुआ। मैंने खुद पुलिस के तीन आदमियो का खून किया है। कुछ रुपये मुझे जल्दी मे देकर प्रफुल्ल-दा ने मुझसे कहा—बस, भाग निकलो यहाँ से। तभी मै सीधा यहाँ चला आया हूँ। ये रुपये अगर नही मिलते, तो हमे कितनी मुश्किलो का सामना करना पडता, तब मैं तुम्हें भी रुपये नही दे पाता!'

उसके बाद उसने पूछा, 'क्या तुम कुछ चन्दा-वन्दा वसूल नही कर पा रहे हो?'

तारक ने कहा, 'पहले की तरह अब चन्दा नही वसूल हो पाता है। कलकत्ता के लोग अब पहले जैसे नही रहे। अब तो किसी के घर जाने पर कोई-कोई ही सीधे मुँह बात करता है।'

'क्यो? शायद तुम उन लोगो को हम लोगो का लक्ष्य और उद्देश्य भली-भाँति समझा नही पाते हो!'

'नही, यह बात नही है। एक तो चीजो के दाम बढ रहे हैं और दूसरी ओर सारा कलकत्ता भिखारियो से भर गया है। पहले जिस होटल मे तीन आने मे भरपेट मछली-भात मिल जाता था, अब उसी होटल मे उसके लिए बारह आने देने पडते हैं। इसीलिए तो कभी-कभी सिर्फ एक वक्त खाता हूँ और दूसरे वक्त मूढी खाकर ही रह जाता हूँ। उस पर मजा यह है कि

कितने दिनो तक बाजार मे मूढी भी नही मिल पा रही थी। कैसे बुरे दिन आ गये हैं, भाई!'

अलकेश ने कहा, 'और भी बुरे दिन आने वाले हैं। हाँ, मैं ठीक कह रहा हूँ। हाशिम की कुछ खबर है तुम्हें ?'

'खबर क्यो नही होगी ? इस समय तो उन्ही लोगो की चाँदी है। इस समय नौकरी पाने के लिए मुसलमान होना ही काफी है। वह आजकल राइटर्स बिल्डिग मे क्लर्की कर रहा है।'

क्लर्की कर रहा है, यह बात सुनकर अलकेश को बहुत पीडा हुई। क्या ये दिन आराम करने के दिन है ? ये सब कोई भी तकलीफ उठाना नही चाहते। जिस स्वाधीनता के लिए महात्मा गाधी और सुभाषचन्द्र बोस से लेकर अलकेश आदि तक सभी जो सघर्ष कर रहे है क्या वह अपने आराम के लिए ? स्वाधीनता मिलने के बाद तो वह सुख सभी के लिए सुलभ होगा। प्रफुल्ल-दा कहते है कि वह स्वाधीनता सबके लिए होगी—हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख-इसाई, जैन, बौद्ध—सबके लिए। ताज्जुब की बात है! यदि इस समय सब लोग सिर्फ अपनी ही फिक्र मे पडेंगे तो देश का क्या होगा! खेत और खलिहान मे काम करने वाले किसानो और मजदूरो का क्या होगा ? उनकी खोज-खबर कौन लेगा ?

हठात चलते-चलते तारक ने पूछा, 'इस समय तुम कहाँ जाओगे ?'

अलकेश ने कहा, 'मुझे इस समय कलकत्ता मे ही रहना होगा। प्रफुल्ल-दा का यही हुक्म है। दो-एक दिन यहाँ बिताऊँगा और फिर उसके बाद चला जाऊँगा—ढाका।'

तारक ने कहा, 'तो फिर अच्छा ही हुआ। तुम्हारे मौजूद रहने पर मैं फिर भी कुछ निश्चिन्त हो पाता हूँ। अब अकेले पार नही लगता, भाई! तुम हो तो 'दरिद्र बान्धव भडार' मे फिर कुछ जान आ सकेगी।'

अलकेश ने कहा, 'किन्तु लगता है कि कलकत्ता मे रहना मेरे भाग्य मे नही।'

'क्यो ?'

'पुलिस जिस तरह मेरे पीछे पडी है, उसमे तो ऐसा नही लगता कि मैं अधिक दिनो तक यहाँ रह पाऊँगा! दो दिन यहाँ रुकने के बाद मुझे

फिर ढाका जाना होगा। प्रफुल्ल-दा वहीं रहेंगे । 'ढाका मे हम लोगो को बहुत-से काम है।'

हठात पीछे से गाडी की आवाज़ सुनायी पडी। पीछे मुडकर देखने पर पता चला—पुलिस की पैट्रोल-वैन थी। पैट्रोल-वैन पास आकर रुक गयी और तुरन्त ही दो कास्टेबल उससे कूदकर उतर पड़े। पलक मारते ही उन्होने तारक को पकड़ लिया।

तारक चमक उठा। उन दोनो कांस्टेबलो ने तारक से पूछा, 'तुम कौन हो ?'

तारक ने इधर-उधर ताका। किन्तु अलकेश कही भी नज़र नही आया। पल-भर मे ही वह कब, कहाँ गायब हो गया, तारक यह भाँप भी नही पाया।

उन कास्टेबलो ने अलकेश को भागते देख लिया था, इसलिए सन्देह के बावजूद उन्होने तारक को ही ज़ोरो से पकड रखा था। वे बोले, 'चलो, थाने मे चलना होगा।'

तारक ने अपना हाथ छुडाने की चेष्टा करते हुए कहा, 'मैने क्या किया है कि मैं थाने मे जाऊँगा ?'

दोनो कांस्टेबलो ने दो-एक गन्दी गालियाँ देते हुए उसे ज़बरदस्ती पुलिस-वैन के भीतर डाल दिया और गाडी का दरवाज़ा बन्द कर दिया। और उसके बाद वैन सीधी आगे की ओर बढने लगी।

मनुष्य का स्वभाव ही यह है कि जब वह किसी व्यक्ति से सहज प्रेम पाता है, तब वह उसके समक्ष अन्त.करण की गहराई से आत्म-समर्पण कर देता है। फिर तो अर्थ, ख्याति, सम्मान और मान-प्रतिष्ठा—कभी उसके समक्ष तुच्छ हो जाते हैं। अर्थ से मनुष्य का पेट भरता है; ख्याति, सम्मान और मान-प्रतिष्ठा मे वह गौरव अर्जित करता है, किन्तु प्रेम के सामने वह अन्धा हो जाता है। इसका कारण यह है कि प्रेम मनुष्य को घनी आत्मीयता का आस्वाद चखाता है। प्रेम मे मनुष्य को परिपूर्णता के आनन्द की अनन्य

अनुभूति होती है।

अन्यथा जिस दिन हरिचरण मुख्तार की मृत्यु हुई थी, उस दिन तो वह अपनी स्त्री और कन्या को अनाथ ही बना गये थे। उन्होंने समझ लिया था कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी स्त्री और कन्या को दर-दर ठोकरे खानी होगी। मकान अवश्य ही उनके अपने नाम पर था, किन्तु इस सम्बन्ध मे उन्हे कोई सन्देह नही था कि वे कलकत्ता के जिस समाज की सीमाएँ हृदय-हीन ईट-पत्थरो से घिरी है, उस समाज का कोई भी सदस्य उनकी तरफ कभी भूलकर ताकेगा भी नही। वह जानते थे कि इतिहास के वह एक ऐसे चौराहे पर उन्हे छोडे जा रहे थे, जहाँ मनुष्य को अपना स्वार्थ छोडकर दूसरो के स्वार्थ की ओर देखने की फुरसत तक नही। उस समय एक ओर जहाँ अगरेज़ सरकार अपने अस्तित्व की रक्षा की फिक्र मे दुबली हो रही थी—भारत छोडकर 'अब गये', 'तब गये' की-सी अवस्था हो रही थी—दूसरी ओर, उस समय भारतवासी भी बडी दुविधा मे पडे थे।

उस समय पुलिस के जोर-जुल्म के बल पर राज्य चला पाना एक आधारहीन कल्पना थी, और इस सम्बन्ध मे भी उन्हे शक न था कि अगर भारत छोडकर अगरेज़-सरकार को जाना ही पडे तो उसके बाद भारतवासियो की जैसी भी हालत हो—वे मरे या जिये—इससे उनका कुछ भी बने-बिगडेगा नही। जिस तरह मकान बेचकर चले जाते समय मकान-मालिक प्राय: मकान के खिडकी-दरवाज़ो एवं अन्य साज-सरजामो को खोलकर ले जाने मे हिचकता नही, भारत के तत्कालीन मालिको का भी ठीक वैसा ही मनोभाव था। वे सब उस समय भारत के खिडकी-दरवाज़े और साज-सरजामो को खोलकर उन्हे जहाज़ पर लादने मे व्यस्त थे।

ठीक इसी समय सामने से आये मुहल्ले के 'दरिद्र बान्धव भडार' के गरीब लडके।

यही देख-सुनकर जान पडता है कि घुणाक्षर-न्याय के बीच भी सभवत कही-न-कही किसी कोने मे एक अदृश्य नियति छिपी रहती है। उसका नाम ही है सौभाग्य। उस अदृश्य नियति के ऊपर ही भरोसा कर सम्भवत: यह पृथ्वी, समाज, मनुष्य और इतिहास आगे बढ रहे है। विधवा करुणामयी एव पारुलबाला के लिए इसी अदृश्य नियति के साधक बने—

अलकेश और उसका दोस्त तारक।

पारुल के जीवन मे उस दिन अलकेश और तारक का उदय उसी अप्रत्याशित सौभाग्य के रूप मे हुआ था।

अलकेश ने उस दिन स्वय ही पारुल के सामने एक प्रस्ताव रखा था, 'तुम यदि फिर से पढाई शुरू करना चाहती हो तो बोलो; मैं तुम्हे फिर स्कूल मे भरती करा दूँगा।'

पारुल ने सिर झुकाकर कहा था, 'नही, अब यह सम्भव नहीं।'

अलकेश ने कहा, 'क्यों? सम्भव क्यो नही है? क्या तुम मासी माँ के विषय मे सोच रही हो?'

पारुल ने कहा था, 'माँ के विषय मे तो सोचना होगा ही। मेरे सिवाय और कौन है उसका?'

अलकेश ने उत्तर दिया, 'किसने कहा कि तुम लोगो का कोई नहीं है?'

पारुल ने कहा था, 'यदि भगवान नाम की कोई चीज़ कही है, तो बस उसी का भरोसा है हमे।'

अलकेश ने कहा था, 'किन्तु भगवान को तो आँखो से देखा नही जा सकता। यही मान लो न कि शायद भगवान ने ही हम लोगो को तुम्हारे पास भेज दिया है!'

पारुल बोल उठी थी, 'यदि यही बात मान ले तो भगवान मेरे पिताजी को भी तो ज़िन्दा रख सकता था। तो फिर आप लोगो को हमारी खातिर इतना कष्ट नही उठाना पडता!'

'कष्ट? कष्ट की बात कह रही हो? तो सुनो, दूसरो के लिए तकलीफ़े उठाना ही तो हमारे 'दरिद्र बान्धव भंडार' का उद्देश्य है। हम सब कष्ट झेलकर यदि किसी के होठो पर मुसकराहट की हलकी-सी रेखा भी ला पायें तो वही यथेष्ट है। उससे अधिक और कुछ हम नही चाहते।'

तारक भी पास खडा बातें सुन रहा था। उसने कहा था, 'शायद तुम अपनी माँ की चिन्ता कर रही हो। किन्तु मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारी माँ की भी हम सब देख-भाल करेंगे। तुम्हारे स्कूल की फीस और तुम लोगो के खाने-पहनने का सारा भार आज से हमारे सिर पर!'

काफी देर तक सोचकर पारुल ने पूछा था, 'लेकिन आप सब हम लोगो के भार को क्यो ले रहे है अपने सिर पर ? हम लोग आपके क्या लगते है ?'

अलकेश ने जवाब दिया था, 'तुम सब हमारे कोई नही। भार सिर्फ इसलिए ले रहे है कि मनुष्य की सेवा करना ही हमे अभीष्ट है ?'

यह सुनकर पारुल को तत्काल कोई जवाब नही सूझा। जान-न-पहचान, फिर भी कुछेक लडके आकर जिस तरह उन्हे उस दिन की विपदा से उबार गये—वह मानो पारुल के लिए कल्पनातीत था। पिता के शव के दाह-सस्कार से लेकर श्राद्ध-शान्ति के सस्कार तक उनके किसी काम मे कोई खामी नही थी।

माँ ने कहा था, 'बेटी, यह भी भगवान की लीला है। अपना काम उन्होने खुद करा लिया !'

पारुल के कुछ भी उत्तर न देने पर माँ ने कहा था, 'ये लडके बडे भले है, हैं न ? मुहल्ले मे तो इतने लोग है—लेकिन क्या किसी ने एक बार भी आकर हमारी खबर ली ? क्या किसी ने पूछा कि तुम लोगो ने कुछ खाया-पीया है, अथवा तुम सब जिन्दा भी हो या मर-खप गये ?'

लडकी ने माँ की इन बातो का कोई उत्तर न देकर सिर्फ यही कहा था, 'काफी रात हो गयी। तुम खाना खा लो, माँ !'

माँ ने कहा था, 'मैं और कुछ भी नही खाऊँगी।'

लड़की ने कहा था, 'क्या तुम बिना खाये मुझे और अधिक पीडा पहुँचाना चाहती हो ?'

'हाय रे, तुम मुझे गलत क्यो समझ रही हो ? मैंने क्या ऐसा कहा ! तुम क्या खाओगी ? खाने के लिए है ही क्या, जो तुम मुझे खाने के लिए कह रही हो ?'

पारुल ने कहा था, 'वे ही दो रुपयो के रसगुल्ले दे गये है।'

'ओ माँ ! यह क्या सुन रही हूँ ?'

उस दिन लडकी की बात सुनकर माँ करुणामयी के आश्चर्य का ठिकाना नही रहा था। तो फिर सिर पर भगवान जरूर है ! करुणामयी ने बार-बार उस देवता का स्मरण कर उसे कोटि-कोटि प्रणाम निवेदित

किया था।

उसके वाद क्या से क्या हो गया, यह करुणामयी समझ ही नही सकी। इतनी वडी विपत्ति से किस तरह उद्धार हो गया, यह अव मानो उसे याद भी नही रहा।

आखिरकार एक दिन उन्होने अपनी लड़की से कहा था, 'वह जो अलकेश और तारक तुम से पढाई जारी रखने की वात कह रहे थे, सो तो ठीक ही लग रही है। रुपये तो वे सव देंगे ही। हमारे रुपये तो खर्च होगे नही। वे सव कह देगे कि इसके पिता का स्वर्गवास हो चुका है, अतः फीस नही दे सकती। इसमे भी क्या तुम्हे आपत्ति है ?'

पारुल ने कहा था, 'तुम रुको तो, माँ ! उनके पास से आखिर हम रुपये लेगे क्यो ? हमारा उनसे रिश्ता-नाता क्या है ?'

माँ ने कहा था, 'आहा, दूसरो की विपत्ति मे क्या लोग सहायता नही करते ? वे सब तो स्नेहवश ही रुपये दे रहे है ! वे तो मेरी अपनी कोख से जनमे अपने बेटो की तरह ही...।'

पारुल ने कहा था, 'हो सकता है कि लज्जा नाम की कोई चीज़ तुम्हारे पास न हो। लेकिन मैं इतनी निर्लज्ज नही हूँ, यह समझ लो।'

'ओह, तो उनके पैसो से खरीदा अनाज खाने मे तुम्हे लाज नही लगती ! जो कुछ भी शर्म-लाज हो रही है, बस पढाई के लिए रुपये लेने मे ही ?'

पारुल ने जवाव दिया था, 'तो फिर मुझे आज मर जाना होगा, माँ ! क्या तुम चाहती हो कि मैं आत्मघात कर लूँ ?'

यह सुनकर माँ और फिर वहाँ रुक नही सकी। उसने चीखकर पूछा था, 'अरी मुँहजली, तुम्हारा इतना दर्प ? किसके बल पर तुम्हे इतना अहकार हो रहा है, ज़रा सुनूँ तो ! जिसके रुपयो पर ऐसा सिर उठा सकती थी, वह आदमी तो अब रहा नही। अव ऐसा रहा ही कौन है, जिसे तुम अपना कह सको ?'

पारुल भी अपने-आपको सयत नही रख पायी थी। उसने कहा था 'माँ, चीखो मत। तुम्हारे पैरो पर पडती हूँ। चीखो मत ! चीख-पुकार सुनकर मुहल्ले के दस आदमी जब जमा हो जायेगे, उस समय न तो तुम

मुँह दिखाने लायक रहोगी और न मैं ही।'

माँ ने कहा था, 'पारू, मुहल्ले के लोगो की बात मत कर। मुहल्ले के लोगों के बारे मे क्या कुछ जानना बाकी है ? याद रखना कि मुहल्ले के लोगो के पास भी कुछ अकल-शकल है; वे सब घास नही खाते !'

पारुल ने जवाब मे कहा था, 'तो क्या मुहल्ले के लोगों को बुलाकर उनके सामने नगा होकर नाचा जाये ?'

प्रत्युत्तर मे माँ कुछ कहने जा ही रही थी कि उसके पहले ही मानो वज्रपात हो गया। वज्रपात होने पर भी मानो कोई इस तरह चमक नही उठता।

हठात सामने अलकेश को देखते ही दोनो को जैसे काठ मार गया।

'यह क्या, मासी माँ ! इतनी देर तक यह क्या चिल्ल-पो मची हुई थी ?'

माँ ने अलकेश को देखकर घूँघट ठीक किया और कहा, 'कुछ भी नही, रे बाबा ! बिटिया रानी की बाते सुन-सुनकर मेरा बदन जल उठता है। वही उसे समझा रही थी कि तू अलकेश को इतना पराया क्यो समझती है ?'

अलकेश ने पारुल की ओर नजर डाली। उसने कहा, 'यह क्या ! तुम हम लोगो को पराया समझती हो क्या, पारुल ?'

पारुल की तरफ से माँ ही कहने लगी, 'वह जो तुम हम लोगो के लिए चावल-दाल और नमक-तेल खरीदकर दे रहे हो न, उससे इस मुँहजली के अह पर चोट पहुँचती है।'

पारुल मानो माँ की बातो के प्रतिवाद मे चीत्कार कर उठी, 'माँ...!'

किन्तु बीच ही मे बात काटकर अलकेश बोल उठा, 'छि, माँ के साथ झगडते हुए तुम्हें शर्म नही आती ! लिख-पढकर क्या तुमने यही बुद्धि पायी है ?'

उसके बाद पारुल एक काम कर बैठी। माँ की तरफ एक बार हठात कटाक्ष कर वह चबूतरे से उठकर एकबारगी अपने कमरे मे चली गयी। अलकेश की दृष्टि से अपने को छुपाकर मानो उसने चैन की साँस ली।

मासी माँ ने कहा, 'देख लिया न, बाबा ! तुमने देखा तो, वह मेरी

और कैसी खा जाने वाली नजरो से देख रही थी। इस लड़की के साथ कैसे निभाऊँ ? कितने पाप करने पर ऐसी लडकी से पाला पड़ता है, यह या तो मैं जानती हूँ या फिर ऊपरवाला ही जानता है। जानते हो बाबा, इस लडकी के मारे तो मैं जलकर खाक हो गयी हूँ।'

अलकेश को ऐसे समय मे क्या कहना-करना चाहिए, यह उसकी समझ मे नही आ रहा था।

मासी माँ फिर बोलने लगी, 'उसके बजाय तो भई तुम एक काम करो, कही से उसके लिए एक वर ढूँढ दो। मैं उसकी शादी करके निश्चिन्त हो सकूँ। ससुराल जाने पर जब झाडू खायेगी और ठुकरायी जायेगी तब पता चलेगा कि माँ क्या चीज होती है !'

अलकेश ने कहा, 'मासी माँ, आप बिल्कुल भी चिन्ता मत कीजिये। आप कमरे मे जाकर विश्राम करे। मैं पारुल के पास जाता हूँ। देखूँ, उसे समझा-बुझा पाता हूँ या नही !'

यह कहकर अलकेश पारुल के कमरे मे गया। उसने कमरे मे जाते ही देखा—मुँह ढककर पारुल तख्तपोश पर औंधी लेटी हुई थी।

वह कहने लगा, 'क्या हुआ ? फिर मुँह फुलाकर पड़ गयी ! खुद अपना दोष तो देखोगी नही। और फिर गुस्सा भी है पूरे सोलहो आने। वाह भई, वाह !'

उसके बाद अलकेश पारुल के और भी करीब आ गया। पास आकर उसने पारुल की चोटी को पकडकर हिला दिया।

कहने लगा, 'आखिर इतना गुस्सा किस बात का ? किस पर है यह नाराजगी ?'

पारुल ने एक हाथ से अपनी चोटी छुडाते हुए कहा, 'तुम अभी तुरन्त चले जाओ यहाँ से, किसने तुम्हे यहाँ आने के लिए कहा है ? मै कहती हूँ, तुम चले जाओ।'

अलकेश ने कहा, 'अच्छा, ठीक है। मासी माँ ने अभी ही तुम्हारे लिए एक वर ढूँढने के लिए कहा है, यह तुमने भी तो सुन लिया है ? ससुराल मे जाने पर जब लात और झाडू खाओगी, तब नतीजा मालूम होगा।'

विरक्त होकर पारुल उठ बैठी। कहने लगी, 'अच्छा अलकेश-दा, तुम

इस घर से जाते हो या मजबूर होकर मुझे ही जाना होगा ?'

अलकेश ने हँसते-हँसते कहा, 'इस कमरे से चले जाने पर ही क्या तुम सोचती हो, पार पाओगी ! लेकिन मै तुम्हे आसानी से छोडने वाला नही। एक लडका ढूँढकर ही दम लूँगा, और वह तुम्हे खीचते-खीचते अपने घर ले जायेगा।'

पारुल ने कहा, 'वह जब ले जायेगा, तब देखा जायेगा। इस समय तो तुम मेरे सामने से हटो !'

इसी समय कमरे मे मासी माँ आ धमकी। कहने लगी, 'तू क्या कह रही है, री पारू ? अलकेश ने तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है और तुम हो कि उसी अलकेश के साथ इसी तरह का बरताव कर रही हो ! अरी मुँहजली, अगर अलकेश नहीं होता तो क्या तू बचती ?'

पारुल बोल उठी, 'किसने कहा था कि यह मुझे बचाये ! मुझसे इस समय और कुछ भी कहना-सुनना सहन नही हो पा रहा है, तुम सब जाओ तो मेरे सामने से। तुम लोग अभी चले जाओ !'

मासी माँ ने कहा, 'आओ बेटा, तुम चले आओ। मुँहजली का दिमाग ही फिर गया है। आखिर तुम पराये लडके हो, क्या जाने कब वह वचन-कुवचन कर डाले ! उस समय मुझे भी बुरा लगेगा। यह लडकी सब-कुछ कर सकती है ..।'

अलकेश ने कहा, 'मुझे वचन-कुवचन कहने पर मेरा कुछ भी बिगडने वाला नही। वह आपके साथ गाली-गलौज नही करे, बस यही काफी होगा।'

मासी माँ ने कहा, 'क्या तुम सोचते हो कि वह मेरे साथ गाली-गलौज नही करती ? अरे वह तो दिन-रात उठते-बैठते हर समय मुझे खरी-खोटी सुनाती रहती है।'

अलकेश ने कहा, 'क्या सचमुच ? तब तो उसके लिए एक बूढा दूल्हा ढूँढना होगा !'

मासी माँ ने कहा, 'नही बाबा, मजाक की बात नही है। तुम उसकी शादी का इन्तज़ाम कर दो। मै आखिर मरने के पहले उसका ब्याह देख लूँगी, तो निश्चिन्त रह सकूँगी।'

अलकेश ने जाने के पहले कहा, 'ठीक है, मासी माँ। आप कुछ भी चिन्ता न कीजिये। मैं सारी व्यवस्था कर देता हूँ।'

ये सब बहुत पुरानी बातें है। उस समय बस हरि मुख्तार महाशय का स्वर्गवास हुआ ही था। ताजा-ताजा शोक झेल चुकने के बाद उन सबकी मानसिक अवस्था कुछ स्वाभाविक होने लगी थी। अलकेश और तारक उस समय बीच-बीच मे चाहे जो भी करते, बाहर से वे थे 'दरिद्र बान्धव भडार' के स्वयसेवक मात्र।

किसी-किसी दिन अलकेश जा नही पाता, कह-सुनकर वह तारक को ही भेज देता।

सचमुच उस समय अलकेश के जिम्मे बहुतेरे काम थे।

तारक को बुलाकर अलकेश कहता, 'तारक, कल मै मासी माँ के घर पर नही जा सकूँगा। तुम्ही चले जाना।'

तारक अकेला आदमी! वह कहता, 'तो फिर बादामतल्ला कौन जायेगा ?'

'एक दिन थोडी-सी तकलीफ उठा लो न, भाई! कालीघाट से बादामतल्ला है भी कितनी दूर ?'

'तो फिर पोटोपाडा की उस बुढिया का क्या होगा—वही राधा की माँ! उसे जो फिर डाक्टर के पास ले जाना है।'

अलकेश बिगड उठता। कहता, 'इतना-सा काम करने मे ही अगर तुम्हे तकलीफ होती है, तो फिर आगे जाकर बडे-बडे काम कैसे करोगे ? प्रफुल्ल-दा कहते है—अगर तुम लोगो को आराम ही करना है, तो फिर इधर आओ ही मत। उन्होने यह भी कहा है—जो रुपये-पैसो और आराम-तलबी को देश से बढकर मानते है, वे देश की स्वाधीनता भी खो देते है और अन्त मे अपने रुपये-पैसे भी। एक बार देश को स्वाधीन तो होने दो, फिर जितना मन चाहे, तुम आराम करना। कोई तुम्हे मना नही करेगा।'

अलकेश की बात सुनकर तारक को दुख होता। इतना काम करने के

के बाद भी वह अलकेश को क्यो सन्तुष्ट नही कर पाता ? लेकिन अलकेश की इन वातो का कोई प्रतिवाद भी नही करता वह। तारक जानता था कि अलकेश उससे कही वहुत वडा और अच्छा आदमी है। अलकेश के कारण तारक अपनी माँ को खो बैठा, किन्तु अलकेश ने तो अपने काम के लिए हँसते-हँसते अपने माता-पिता, भाई-बहन—सभी का त्याग किया है ! इतना वडा त्याग क्या तारक खुद कर पाता ?

आश्चर्य ! इतने अन्तराल के बाद उन दिनो की बात सोचते-सोचते तारक को जाने कैसा आश्चर्य होता है। उन दिनो का कलकत्ता आज रहा ही कहाँ है ? और अब वह बंगाल भी नही है। जिस देश की कल्पना करके अलकेश, तारक, निखिल और कालीपद आदि ने उस समय 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की थी, आज उस 'दरिद्र वान्धव भडार' की याद आने पर हँसी ही आती है। कैसा लडकपन था उनका भी ! हाँ, बेशक लडकपन ! आजकल के इस उम्र के लडको को-देखकर तारक के मन मे भी यही आता—इनकी भी तो वही उम्र है जो उस ज़माने मे तारक और उसके साथियो की थी। इस उम्र मे वे सब जो कुछ सोचते थे, क्या ये भी वैसा मोच पाते है ? सिनेमा-हाउसो के सामने जब घटे-दर-घटे लाइन मे खडे लडको को तारक देखता है तब तारक को अलकेश की बाते याद आने लगती है। अलकेश कहा करता था—जो धन-दौलत और आराम को देश से भी बढकर मानते है, वे देश को तो खोते ही है, आराम भी हासिल नही कर पाते और उनके भाग्य मे नाना प्रकार का दुख-भोग लिखा होता है, समझे ?

वही जॉन सिमसन इतने दिनो के बाद फिर यहाँ आये है ! अलकेश यह घटना देख नही पाया। अलकेश को यह समझ नही आया कि जिनके डर से उसे लुक-छिपकर रहना पडा था, जिनका खून करने के लिए उन लोगो ने न जाने कितने-कितने काड किये थे, वे सभी देश को छोडकर अपने देश लौट चुके है। और अलकेश यह भी नही देख पाया कि जिस

भारत की स्वाधीनता के लिए खुदीराम से शुरू करके जे० एम० सेनगुप्त, सुभाषचन्द्र वोस और महात्मा गाधी पर्यन्त—सभी ने प्राण दिये थे, वही भारत आज दो भागो मे वँट चुका है !

तारक हाजरा रोड के मोड के पास वस से उतरा ।

सारा फुटपाथ लोगो की भीड से भरा था । भीड के बीच से फुटपाथ पर चलना भी दु साध्य सावित हो रहा था ।

सामने से किसी आदमी ने हठात उसकी ओर अपना हाथ वढा दिया ।

'कुछ पैसे दे दो बावूजी, कितने दिनो से कुछ खाया ही नही ।'

'जाओ, जाओ, रास्ता पकडो !'

इतनी रात मे भी भिखारी ! तारक उससे बचकर किनारे से निकल गया । जाकर वह ट्राम के रास्ते पर खड़ा हुआ । उन लोगो के बचपन के समय मे इतने भिखारी तो नही थे !

तारक रास्ता पार कर दूसरी ओर के फुटपाथ पर चला गया । वहाँ से उसने मुडकर देखा—वह भिखारी उस समय भी सभी के सामने हाथ वढाकर ठीक उसी तरह पैसे माँग रहा था । ठीक उसी तरह शायद बोल रहा था, 'कुछ पैसे दे दो वावूजी, कितने दिनो से कुछ खाया ही नही ।' उस आदमी की वात यद्यपि इस पार सुनायी नही पड़ रही थी, तथापि उसकी भगिमा ठीक वैसी ही थी । रास्ते के और लोग भी उसी तरह उसके प्रति विरक्ति-भाव प्रदर्शित कर रहे थे ।

तारक सोचने लगा—यह क्या हुआ ! वह खुद अपने व्यवहार से आश्चर्यान्वित रह गया । आखिर...आखिर वे सव-के-सब ही तो दरिद्र है ! उन लोगो के लिए ही तो अलकेश ने 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की थी । सभी लोगो से मुट्ठी-भर भीख लेकर उन लोगो की सेवा करना ही तो था उस समय उनका धर्म ! तो फिर उसे देखकर वह इस तरह विरक्त क्यो हो उठा था ? क्यो वह बोल उठा था—'जा, जा, रास्ता छोड... अपना रास्ता पकड !'

हठात इस ओर के फुटपाथ पर भी एक आदमी ने उसकी ओर हाथ वढाकर कहा, 'कुछ पैसे दो, वावूजी, कितने दिनो से कुछ भी खाने को नही मिला ।'

भावना का क्रम अचानक टूटा । तारक ने गौर से भिखारी के मुँह की ओर देखा। उसने कहा, 'जा, जा, रास्ता छोड...रास्ता छोड!'

कहकर उससे पिंड छुडाकर तारक ने फिर घर की ओर पाँव बढाये। आश्चर्य, भिखारियो के चगुल से किसी भी तरह छुटकारा नही! न, न, इन सब बातो को सोचने की कोई ज़रूरत नही। खुद उसके बारे मे कौन सोचता है, इसका भी भरोसा नही और वह सोचने जायेगा दूसरो के बारे मे! कितने दिनो से तारक कुछ अपने पैरो पर खडा होने की चेष्टा कर रहा है और वह भी सम्भव नही हो पा रहा। बहुत दिनो से वह बहुतेरे लोगो के पास घूमता रहा है। बहुतेरे लोगो के घर पर जाकर उसने धरना दिया है; बहुत-सी जगह दरख्वास्त दी है, फिर भी तारक की समस्या का कोई समाधान नही हुआ। बहुत-से लोगो ने सहानुभूति भी दिखायी है। उन लोगो ने कहा है—'तुम्ही बतलाओ, क्या किया जाये! दिन-काल बहुत खराब जा रहे हैं।'

तारक ने कहा, 'हम लोगो ने भी तो कभी स्वदेशी आन्दोलन मे भाग लिया था, साहब!'

'स्वदेशी आन्दोलन मे भाग लिया था?'

तारक ने उत्तर दिया, 'हाँ साहब, मुहल्ले-मुहल्ले मे गरीब आदमियों के घर पर चावल, दाल, तेल, नमक बाँटते घूमे है हम, मृतको का दाह-सस्कार किया है हमने। हम सब बम वाली पार्टी मे भी थे उस ज़माने मे। मेदिनीपुर मे बाढ आने पर उस समय हम लोग ही जाते थे राहत-कार्य के लिए। आज जब देश स्वाधीन हो गया है तो क्या हम लोग ही बिना खाये-पीये मरेंगे, साहब?'

आख़िरकार उस सज्जन ने कहा, 'बात तुम ठीक ही कह रहे हो। तुम लोगो को नौकरी ज़रूर मिलनी चाहिए। किन्तु क्या किया जाये, हमे ऊपर से आर्डर मिला है कि 'एम्प्लॉयमेट एक्सचेज' से जिनका नाम आयेगा, पहले उन्हे ही नौकरी दी जायेगी।'

उसके बाद कुछ देर रुककर पुन. उन्होने कहा, 'तुम एक काम करो। पहले अपना नाम 'एम्प्लाँयमेट एक्सचेज' मे दर्ज करवा लो। उसके बाद मैं देखता हूँ कि क्या किया जा सकता है।'

उस दफतर मे नाम दर्ज कराना भी उसने नही छोड़ा। यह बतलाने पर भी कोई लाभ नही हुआ।

उसके बाद वह जा पहुँचा प्रफुल्ल-दा के पास। वही प्रफुल्ल चौधरी ! वही अग्नि-युग का इस्पात की तरह तपा हुआ आदमी। बयालीस के आन्दोलन मे जिसे पुलिस पागल होकर खोजती फिरी थी—ढाका, फ़रीद-पुर, मैमनसिंह, कलकत्ता और मेदिनीपुर—सभी छान डाले गये थे। पुलिस के रजिस्टर मे जिसकी गिरफ्तारी की कीमत थी दस हज़ार रुपये। वही प्रफुल्ल-दा ! उसी प्रफुल्ल-दा के पास जा पहुँचा तारक।

किन्तु प्रफुल्ल-दा अब वह पहले वाले प्रफुल्ल-दा नही है। मत्री है, मत्री।

मत्री के साथ मुलाकात करने के लिए बहुत-सी रस्म-अदायगी करनी पड़ती है। पेट की पुकार पर तारक ने उन्हे भी पूरा किया।

ढेर सारे दर्शनार्थियो के साथ उसने भी भीतर एक स्लिप भेजकर लगभग तीन घटे तक बाहर के कमरे मे इन्तज़ार किया था। उसके बाद जब भीतर से उसे बुलाया गया तब वह गया प्रफुल्ल-दा से मिलने।

वही प्रफुल्ल-दा, जिन्होने फरीदपुर मे ट्रेन-डकैती कर हज़ारो-हज़ार रुपये लूटे थे और उन्हे देश के कामो मे लगाया था ! तारक ने देखा कि प्रफुल्ल-दा का चेहरा और भी साफ हो गया था, और साथ ही भरा-भरा भी। टेलीफोन पर वे किसी के साथ बात करने मे व्यस्त थे। बात-चीत भी ऐसी कि खत्म होने का नाम ही नही ले रही थी। आखिरकार बात खत्म होने पर उन्होने टेलीफोन रख दिया और उसकी ओर देखकर पूछा, 'कहिये, आपको क्या काम है ?'

तारक ने कहा 'मुझे पहचान नही रहे है, प्रफुल्ल-दा ! मैं हूँ तारक...।'

'तारक ? कौन तारक ? तारक भट्टाचार्य या तारक सरकार...?'

तारक ने कहा, 'नही, मैं तारक सेन हूँ।'

फिर भी पहचान नही पाये प्रफुल्ल-दा। हज़ारो कामो मे लगे रहने वाले प्रफुल्ल-दा !

तारक ने इस बार और भी खोलकर समझाते हुए कहा, 'आपको उस अलकेश चक्रवर्ती की याद है ? आपने कहा था कि हम लोगो मे से जो रुपये-

पैसो और आराम को ही देश से बढकर मानता है, वह देश को भी खोता है, आराम भी हासिल नही कर पाता एव अन्ततः उसके भाग्य मे नाना प्रकार का दुख-भोग लिखा रहता है। और आपने एक 'दरिद्र बान्धव भडार' की स्थापना की योजना बनायी थी। कालीघाट के हम सभी लडको ने मिलकर वह सब किया था। हम सब घर-घर से चावल माँगकर गरीबो का भरण-पोषण करते थे तथा जिनका कोई भी नही होता, उनके घर का मुर्दा तक फूंक आया करते...!'

प्रफुल्ल-दा ने तारक की बात सुनकर मानो उसे पहचानने का थोडा-सा प्रयास किया।

उन्होने पूछा, 'अच्छा, वह अलकेश कहाँ गया ? मुझे याद आता है कि वह लडका तो बडा सिंसीयर था।'

तारक ने कहा, 'अलकेश तो अब नही रहा।'

'नही रहा ? नही रहा माने ?'

तारक ने कहा, 'वह तो ब्रिटिश शासन के दौरान ही मारा गया।'

'मारा गया ? कहाँ, मैने तो कुछ सुना नही। कैसे मारा गया वह ?'

तारक ने कहा, 'प्रफुल्ल-दा, उस समय तो आप जेल मे थे। आप जानते भी कैसे ? उसे तो पुलिस ने गोली से उड़ा दिया था।'

'यह क्या ? गोली से उडा दिया था ? कब ?'

'वह बहुत ही दर्द-भरी मृत्यु थी ! उस समय समाचार-पत्रो मे तो सारी खबरे छपती नही थी। खबरें छपने के पहले सरकार के द्वारा सेंसर की जाती थी। ये सारी बातें तो आप जानते ही है।'

'किन्तु पुलिस उसे पकड कैसे पायी ?'

तारक ने कहा, 'यदु भट्टाचार्य लेन मे एक घर था। वहाँ हम सब 'दरिद्र बान्धव भडार' के लडके चावल-दाल देकर उनकी सहायता करने के लिए जाया करते थे। वहाँ अलकेश कई दिनो से छिपा हुआ था। पुलिस को खबर मिलते ही वह वहाँ जा पहुँची। उसके बाद जैसे ही अलकेश भागने का प्रयास कर रहा था, तभी पुलिस ने उसे गोली मार दी।'

यह सुनकर प्रफुल्ल-दा के चेहरे पर सम्भवत थोडा-सा भावान्तर हुआ। किन्तु वह था मात्र एक मुहूर्त के लिए ! उसके बाद ही उनके मुख-

मडल पर व्यस्तता की छवि उभर पडी। आखिर मिनिस्टर ठहरे—अनेकानेक लोगो के भाग्य-विधाता। अलकेश जैसे सामान्य समाज-सेवक की बात याद रखकर समय नष्ट करने वाले व्यक्ति नही है वे !

प्रफुल्ल-दा की ओर चुपचाप देखते हुए खडे रहने मे तारक को जाने कैसा-कैसा लग रहा था।

हठात प्रफुल्ल-दा ने कहा, 'तो तुम क्या कहने आये थे, बतलाओ। मैं आज कुछ व्यस्त हूँ।'

तारक ने कहा, 'प्रफुल्ल-दा, आप तो जानते ही है कि हम सबने देश के लिए क्या-क्या किया है। फिर भी...।'

प्रफुल्ल-दा ने बात काटकर पूछा, 'जेल-वेल गये हो कभी तुम ?'

'हाँ प्रफुल्ल-दा, मैं और अलकेश एक दिन काफी रात गये रास्ते से गुज़र रहे थे। हठात उन लोगो ने मुझे पकडकर डी० आई० ग्रार० के अन्तर्गत जेल मे ठूँस दिया। उसके बाद प्रायः तीन महीनो तक मैं वहाँ अटका रहा।'

'केवल तीन महीने, बस ! छह महीने जेल मे रहने पर शायद मैं कुछ कर भी पाता। अच्छा, और किसी दिन एक बार फिर मुझसे मिलना।'

यह कहकर उन्होने दूसरे आदमी को बुलवाया।

उसके बाद तारक और वहाँ रुका नही। उसके बाद कभी वह वहाँ गया भी नही। पता नही क्यो, उसके मन मे आक्रोश का सागर उमड पडा था। जिनके लिए अथवा जिनकी बात सुनकर एक दिन हज़ारो-हज़ार लोगो ने गोलियाँ खाकर प्राण निछावर किये थे, वही सत्ता के इस तथाकथित शीर्ष स्थान पर पहुँचते ही इतने बदल जायेगे, यह उसकी कल्पना से भी दूर था। शायद ऐसा ही होता है ! और फिर सिर्फ प्रफुल्ल-दा को ही दोष देने से क्या लाभ है ? समय के साथ-साथ सभी बदल जाते है। उस युग के कलकत्ता के साथ क्या आज के कलकत्ता का ही कोई सादृश्य है ? उस युग का सब-कुछ ही तो इस युग मे झूठा सिद्ध हो गया है।

उसके बाद उच्छवृत्ति का अवलम्बन लिया था तारक ने— यानी आर्डर-सप्लाई। युद्ध के समय जो लोग इसी कलकत्ता मे मिलिटरी के लिए ठेकेदारी करते थे, आज वे समाज के कन्धो पर चढ बैठे है। धर्म-सभा हो,

साहित्य-सभा हो या फिर चाहे राजनैतिक सभा ही क्यो न हो—उन्ही लोगो की बुलाहट होती है। उस समय उनके जेल मे कभी खटने की क्वालिफिकेशन की दरकार नही होती, और न ही खद्दर पहनने की आवश्यकता होती !

यही सब सोचकर तारक ने साहब को एक चिट्ठी लिखी थी।

सिमसन साहब एक दिन हठात पुलिस की नौकरी से इस्तीफा देकर भारत छोड़कर चले गये थे। जाते वक्त उन्होने तारक को अपना पता-ठिकाना भी दे दिया था।

साहब बोल गये थे कि कभी भी जरूरत हो तो मुझे इस पते पर पत्र लिखना।

साहब के नौकरी छोडकर चले जाने के कुछ दिनो बाद ही अगरेज भी चले गये। तब प्रफुल्ल-दा जैसे लोगो ने ही, जिन्होने देश के लिए सर्वस्व त्याग किया था, साहबो की खाली कुरसियो पर दखल कर लिया था। उसके बाद जीवन-सग्राम मे कोल्हू के बैल की तरह घूमते-घूमते तारक की सभी इन्द्रियाँ मानो सज्ञाशून्य हो गयी थी। किस तरह ये कुछ वर्ष कट गये थे, पता ही नही चला। बचपन की बाते उसे याद थी, इसीलिए तो तारक ने सोचा था कि देश के स्वाधीन होने के बाद उसके सारे दुख दूर हो जायेंगे! किन्तु कहाँ, दुख कहाँ दूर हुए ?

ठीक उसी समय उसे सिमसन साहब की याद आयी। साहब तो उसे अपना पता-ठिकाना देकर गये थे। साहब को लिखने पर सम्भवतः साहब कुछ उपाय करें। तो फिर साहब के हाथो लिखा ठिकाना खोज-खाज कर तारक ने उन्हे एक पत्र लिख डाला था। वैसे उसे कोई विशेष आशा न थी कि कोई उत्तर मिलेगा।

किन्तु यही तो साहब लोगो का गुण है! वादाखिलाफी नही करते। कुछ दिन बीतते-न बीतते साहब का जवाब मिला। चिट्ठी पढते वक्त तारक का कलेजा धक-धक काँपने लगा था।

साहब ने लिखा था, 'माइ डियर तारक, तुम्हारा पत्र पाकर बहुत खुशी हुई। तुमने अपनी दुरवस्था की दुखद कहानी लिखी है, परन्तु इतने दूर-देश से मैं क्या कर सकता हूँ ? अगरेज़ो के चले आने के बाद तो अब

भारत के लिए मैं हूँ विदेशी। तुम लोगो की सरकार मेरी वात सुनेगी ही क्योकर ? अव मै होता ही कौन हूँ ? फिर भी यदि सम्भव हुआ तो एक वार इडिया आऊँगा। उस समय कलकत्ता भी आऊँगा। उस पारुल की क्या खवर है ? शी इज़ ए ग्रेट लेडी ! उसे देखने के लिए मैं एक वार कलकत्ता निश्चित रूप से आऊँगा। इति...।'

उस समय भी तारक सोच नही पाया था कि आखिरकार साहव कलकत्ता आ पहुँचेगे ही। वादे तो वहुत-से लोग करते है, किन्तु निभाते कितने लोग है ? वहाने वनाकर कर्त्तव्य से किनारा कर जाना ही तो सामान्य नियम हो गया है।

उसके वाद एक चिट्ठी और। साहव ने लिखा था—मै चौवीस तारीख को आ रहा हूँ। रात मे ग्रैड होटल मे आओ, तुमसे मिलकर मुझे खुशी होगी।

इतने दिनो के वाद उन्ही सिमसन साहव के साथ मुलाकात करके ही तारक घर लौट रहा है।

इतने दिनो के वाद फिर इडिया। एक युग वीत गया—एक युग क्यो, डेढ युग भी कहा जा सकता है।

पहले की वात होती तो उनके साथ रिवॉल्वर या पिस्तौल—कुछ-न-कुछ जरूर होता। उस जमाने के सिमसन और आज के सिमसन मे काफी फर्क है। आज वे महज़ एक टूरिस्ट है। किन्तु उस ज़माने मे वह थे इंडिया-गवर्नमेट के ऑफिसर।

मिस्टर डगलस प्राय ही अपने सहायक को चेताते रहते। कहते, 'किसी भी इडियन का विश्वास मत करना, सिमसन ! यदि वे मिनिस्टर भी हो, तो भी विश्वास मत करना। सारे-के-सारे इडियन हमारे दुश्मन हैं। यह जानते तो हो ? और हमारी जो नौकरी है, उसका मूल मत्र ही है—भारतीयो मे अविश्वास।'

उसी अविश्वास के साथ ही शुरू हुआ था सिमसन की नौकरी का

जीवन।

फरीदपुर ट्रेन-डकैती का मामला भी एक दिन मिस्टर सिमसन के हाथो मे आया।

आसामी थे टेर्ररिस्ट—आतकवादी। युद्ध के मौके का लाभ उठाकर एक पार्टी लूट-पाट की नीति अख्तियार कर सरकार को नुकसान पहुँचाना चाहती थी। वे चाहते थे कि अगरेज़ भयभीत होकर इस देश से राज-पाट समेटकर अपने देश लौट जाये।

तभी दिल्ली-ऑफिस से हुक्म मिला कि इस आतकवाद और अराजकता का निष्ठुरतापूर्वक दमन करना होगा। कलकत्ता मे दायित्व था मिस्टर डगलस के ऊपर।

मिस्टर डगलस ने अपने सहायक मिस्टर सिमसन को बुलवाया। होम-सेक्रेटरी की चिट्ठी देते हुए उन्होने कहा, 'यह चिट्ठी पढो तुम।'

सिमसन ने चिट्ठी पढी। कुछ ही देर के बाद डगलस ने पूछा, 'तुम्हारा क्या मत है, सिमसन ?'

सिमसन ने कहा, 'जब हुक्म मिला है तो हमे मानना ही होगा।'

'तुम यह कर सकोगे ? क्या तुम बगाल के पोलिटिकल गुडो का सफाया कर सकोगे ?'

'आइ शैल ट्राइ माइ बेस्ट।'

डगलस ने और कुछ भी नही कहा। चिट्ठी के ऊपर नोट लिखते-लिखते उन्होने कहा, 'लेट मी सी। देखा जाये...।'

उसके बाद ही हुआ वही फरीदपुर ट्रेन-डकैती वाला काड !

पुलिस-विभाग मे मानो हडकम्प मच गया। गुप्तचरो से सारा बगाल रौदा जाने लगा—सडक-सडक, गली-गली। जैसे भी हो, उस गैंग्सटर प्रफुल्ल चौधरी को पकडना ही होगा। और उसके खास शागिर्द अलकेश चक्रवर्ती को भी गिरफ्तार करना होगा।

इसीलिए एक दिन तडके चार बजे ही अलकेश चक्रवर्ती के मकान के सदर दरवाजे पर खट्-खट होने लगी।

'कौन ?'

'एक बार दरवाजा खोलिये तो...।'

'आप कौन है, पहले यह बताइये। उसके बाद ही दरवाज़ा खोलेगे।'

'हम सब पुलिस के आदमी है। थाने से आये है...।'

तो फिर दरवाज़ा खुल गया। और भीतर से एक वृद्ध सज्जन बाहर निकल आये। उनके साथ थे उनके दो लडके।

पुलिस ने पूछा, 'क्या यह अलकेश चक्रवर्ती का घर है?'

'हाँ, लेकिन क्यो? ज़रा बतलाइये तो।'

पुलिस ने जवाब दिया, 'हम अभी मकान की तलाशी लेंगे। उसके खिलाफ गिरफ़्तारी का वारट है। उसने फरीदपुर ट्रेन-डकैती काड मे पुलिस के दो आदमियो का खून किया है।'

वह वृद्ध सज्जन मानो क्रोध से उबल उठे। उन्होने कहा, 'आप उसे पकडकर इसी वक्त फाँसी पर झुला दीजिये, साहब! वह हरामज़ादा लडका मेरा कोई नही है। मैने एक कुपुत्र को जन्म दिया था। उसे मैंने घर से निकाल दिया हैं। वह अब हमारा लडका नही, वह कुपुत्र निकल गया। उसके कारण ही मैं अपनी नौकरी से भी हाथ धो बैठा हूँ, जानते है?'

कहते-कहते वह वृद्ध सज्जन हाँफने लगे। कहने लगे, 'जानते हैं साहब, मैं गवर्नमेट की सर्विस मे था—उसी हरामज़ादे के कारण मुझे अपनी नौकरी गँवानी पडी।'

दोनो लडको ने अपने पिता को शान्त करना चाहा। कहने लगे, 'आप चुप रहिये, पिताजी! खामख्वाह गुस्सा करने से क्या होगा?'

उसके बाद उन्होने पुलिस के आदमियो से कहा, 'आप लोग यदि घर की तलाशी लेना चाहते है तो आइये, लीजिये। हम सारी व्यवस्था कर देते है।'

पुलिस के दल ने तलाशी के दौरान घर की सभी चीज़ो को बुरी तरह तितर-वितर कर डाला। रसोईघर तथा पाख़ाने से शुरू कर छत, छत के ऊपर की अटारी—सभी जगह उन्होने तलाशी ली। बक्सा, उपलो की बोरी, काठ, कोयला—सभी की तलाशी ली उन्होने। लेकिन कही कोई आपत्तिजनक वस्तु हाथ नही लगी।

पुलिस के चले जाने के साथ-साथ ही वृद्ध गृहस्वामी की छाती मे दर्द उठा। वे संज्ञाशून्य और चेतनाहीन हो गये। साथ-ही-साथ उनकी बोली

भी बन्द हो गयी। वे उसी अवस्था मे पडे फटी आँखों से ताकते रहे। देखते ही-देखते चक्रवर्ती-बाडी के आर्त्त क्रन्दन से मुहल्ले का सारा वातावरण क्षुब्ध हो उठा।

'दरिद्र बान्धव भडार' के ऑफिस मे अब और पहले-जैसी भीड नही जमती। ऑफिस के भीतर जाने का किसी को साहस भी नही होता। क्या जाने कब पुलिस की नज़र पड जाये! यदि उसी साहब बेटे के कानो मे खबर पड़ जाये तो?

किन्तु जहाँ-तहाँ लुक-छिपकर सभी जुटा करते। उन लोगो की अनेकानेक योजनाएँ तैयार होती। काफी दिनो से प्रफुल्ल-दा की कोई खबर नही मिल रही थी। निखिल आया करता और कालीपद भी। अलकेश भी मौजूद रहता। सबका वही तो नेता है।

अलकेश कहता, 'इतने दिनो के बाद यह बात समझ मे आयी कि अंगरेजो का दोष नही है, समझे? सारा दोष हम लोगो का ही है।'

निखिल यह समझ नही पाता। वह बुद्धू की तरह पूछ बैठता, 'क्यो?'

अलकेश कहता, 'पूछ रहे हो—क्यो?—तो फिर उसी से पूछो, उस तारक से। वह तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देगा।'

तारक हमेशा अलकेश से डरा करता। और फिर तारक की तरह अलकेश को और कोई चाहता भी नही था।

यह बात सुन कर वह चौक उठा।

उसने कहा, 'मैं उत्तर दूँगा?'

अलकेश ने कहा, 'हाँ, तुम।'

तारक ने पूछा, 'क्यो? मैंने क्या किया है?'

सचमुच, सभी तो अवाक रह गये थे अलकेश की बात सुनकर। जिस तारक ने अपनी माँ तक को चरम आघात पहुँचा सडक का आश्रय लिया है, 'दरिद्र बान्धव भडार' के कामो को अपना निज का काम समझकर जो अब तक काम करता आया है, जिसके कारण इस समय की पुलिस की ऐसी

खीच-तान के वीच भी 'दरिद्र वान्धव मडार' किसी तरह टिका हुआ है जिसके कारण कई दुखी परिवार आज भी दो वक्त मुट्ठी-भर भात खा पा रहे है और ज़िन्दा है—उस तारक के विरुद्ध ऐसा अभियोग !

अलकेश ने कहा, 'यह वात वतलाने के लिए ही मैंने आज की यह मीटिंग वुलायी है। भाई, आज हम चारो ओर दुश्मनो से घिरे हैं। पहले दुश्मन सिर्फ एक ही था—अगरेज़ सरकार। और आज हम खुद अपने-आप के दुश्मन हो रहे है। इस वक्त हमारे दुश्मन है करोडो की तादाद में। आज के इस युद्ध के समय जव कि सवसे वडी आवश्यकता एकता की है, हमारे ही वीच एकमत नही है। हम लोगो मे सबसे वड़ी कमी है चरित्र-वल की।'

निखिल बीच ही मे बोल उठा, 'परन्तु तारक तो इस मामले मे आदर्श व्यक्ति है। इस मामले मे तो उसके चरित्र मे कोई दोष नही है।'

तारक वडा ही विक्षिप्त हो उठा। इस समय अलकेश उसके माथे बदनामी मढेगा, इसकी उसे कल्पना भी न थी।

तारक ने कहा, 'किन्तु अलकेश, मेरी समझ मे तो यह नही आता कि मेरे चरित्र मे तुमने क्या दोष पाया है? तुमने मुझे जो कुछ करने के लिए कहा, वही तो मै आज तक बिना किसी आपत्ति के करता आया हूँ। तुम्हारी बातो के खिलाफ तो मैंने कभी कुछ किया नही। तुमने मुझे जो कुछ करने के लिए कहा; क्या मैंने कभी उसके विपरीत कार्य किया है? फिर आज तुमने यह कहा कैसे? मैंने जो कुछ भी चन्दा इकट्ठा किया है अथवा तुमने जो मुझे रुपये-पैसे बीच-बीच मे दिये है, मैं उनमे से प्रत्येक पाई-पाई का हिसाव दे सकता हूँ। यह देखो, मैं आज वह हिसाब-किताब का खाता लेता भी आया हूँ। लो, देख लो।'

यह कहकर उसने जेब से एक खाता निकालकर अलकेश के सामने रख दिया।

अलकेश ने तिरस्कार-पूर्वक उसे उठाकर दूर फेक दिया।

अलकेश के इस विचित्र व्यवहार को देखकर सभी हैरान थे। इस तरह तो कभी भी अलकेश आपे से बाहर नही होता था। काफी देर तक किसी के मुँह से कोई भी शब्द नही निकला। सभी मानो अपने ऊपर

वज्रपात की आशका मे मानो गूँगे रहकर प्रतीक्षा करने लगे।

अलकेश ने कुछ देर रुककर फिर कहना शुरू किया, 'आज तुम लोग सभी देख लो, तारक मुझे हिसाब दिखाने चला है! क्या मैंने कभी तुम से हिसाव माँगा है कि तुम हिसाब दिखाने चले हो? और फिर क्या यह मेहनत से कमाया हुआ रुपया है? कुछ प्रफुल्ल-दा ने मुझे दिया है और कुछ मैंने इधर-उधर लूट-पाट कर इकट्ठा किया है। उन रुपयो का हिसाब जिस तरह कभी प्रफुल्ल-दा मुझसे नही माँगेगे, उसी तरह मैं भी तुमसे उनका हिसाब नही लूँगा।'

तारक ने कहा, 'तो फिर मैने क्या दोष किया है, यह बतला दो न।'

'दोष अगर नही किया होता तो क्या मै यूँ ही झूठ-मूठ को आज की मीटिंग बुलाता? तुम सभी लोग जानते हो कि मेरे खिलाफ गिरफ्तारी का वारट जारी है। आज पुलिस हमारे घर की तलाशी लेकर गयी है। साथ ही मेरे पिताजी भी उसी भय और उत्तेजना मे चल बसे। किन्तु उसकी भी मुझे ज्यादा शिकायत नही है। आज मैं यह जानता हूँ कि यदि पुलिस को पता चल जाये कि मैं यहाँ पर मौजूद हूँ तो अभी तुरन्त ही वह मुझे गिरफ्तार कर लेगी, और फिर मुझे फाँसी के तख्ते पर चढा दिया जायेगा। फिर भी मैं यहाँ इसलिए आया हूँ कि पार्टी का अनुशासन बना रहे। हम लोगो के प्रफुल्ल-दा ने कहा है कि चरित्र-बल ही सबसे बडा बल है। वह चरित्र-बल अगर हम मे से किसी के स्वभाव मे न हो तो उसे हमे दल से बाहर निकालना होगा।'

तारक ने कहा, 'मुझ मे चरित्र-बल नही है, इस बात का क्या प्रमाण है?'

अलकेश ने कहा, 'निश्चय ही इसका प्रमाण दूँगा। अपने हाथ मे प्रमाण रखे बिना ही क्या मैने तुम्हारे खिलाफ यह अभियोग लगाया है? किन्तु उसके पहले सोच रहा हूँ कि कालीपद अभी तक क्यो नही आया? निखिल, क्या तुमने आज कालीपद से यहाँ आने के लिए कहा था?'

निखिल ने कहा, 'हाँ, मैं तो आज सुबह ही जाकर उसे बतला आया था।'

'तो फिर वह अब तक आया क्यो नही?'

निखिल ने कहा, 'हो सकता है कि वह किसी भी घड़ी आ धमके।'

अलकेश ने कहा, 'अभी तक जब वह नही आया तो फिर अब वह नही आयेगा। साथ ही मैं भी प्रतीक्षा कर सकने की स्थिनि मे नही हूँ। किसी भी पल पुलिस को मेरे यहाँ होने की खबर मिल सकती है।'

यह कहकर अलकेश कुछ देर के लिए रुका। उसने फिर कहना आरम्भ किया, 'अब मैं तुम दोनो को ही यह दिखाऊँगा कि चरित्र-बल के अभाव से आदमी किस हद तक गिर सकता है। यह देखो...!'

यह कहकर अलकेश ने जेब से एक फोटोग्राफ़ निकालकर उन दोनो को दिखाया।

फोटोग्राफ निखिल ने भी देखा और तारक ने भी।

निखिल बोल उठा, 'यह तो वही हरि मुख्तार की लड़की पारुल है, रे! उसके साथ तारक की फोटो?'

अलकेश ने कहा, 'यही है इस बात का प्रमाण कि तारक चरित्रहीन है...उसमे चरित्र-बल नही है।'

तारक ने कहा, 'अलकेश, तुमने आज मुझ पर यह दोष भी लगाया?'

अलकेश ने कहा, 'सिर्फ, दोष ही नही लगा रहा हूँ। यह प्रमाण देने के बाद भी क्या तुम अपने-आपको निर्दोष कह सकोगे? तुम्हे 'दरिद्र बान्धव भडार' की तरफ से भेजा गया था उनकी देख-भाल करने के लिए; उनके लिए चावल-दाल, तेल-तूल की व्यवस्था करने के लिए और आपद-विपद के समय उनकी सहायता करने के लिए। किन्तु क्या यही है उसका नमूना? तुम्हे क्या घर की कुवाँरी कन्या के साथ आँख और दिल मिलाने के लिए भेजा गया था?'

तारक ने कहा, 'तो क्या एक साथ फोटो खिचाने का अर्थ प्यार ही होता है, यह कहना चाहते हो?'

'और नही तो क्या? बुढिया माँ की आँखो की ओट मे उसकी लडकी के साथ फोटो खिचाने को प्यार करना नही कहा जायेगा तो फिर और क्या कहा जायेगा? 'दरिद्र बान्धव भडार' के रुपये क्या प्रेम करने के खर्चे के लिए है? यह फोटो उतरवाने मे क्या रुपये खर्चे नही हुए है?'

तारक ने कहा, 'नही, रुपये ज़रूर खर्च हुए है। किन्तु किस अवस्था

मे फोटो खिचायी गयी थी, वह तो मुझसे सुनोगे ! सारी बातें सुने बिना मेरे ऊपर अभियोग क्यो मढ रहे हो ?'

अलकेश ने कहा, 'ठीक है। तो फिर तुम बतलाओ, क्या है तुम्हारा कहना ? ज़रा मैं भी तो सुनूं।'

तारक ने कहा, 'विश्वास करो, फोटो मैंने अपनी मर्जी से नही खिचायी। पारुल ने ही ज़ोर देकर फोटो खिचवायी थी।'

'तो फिर इतने लोगो के रहते हठात तुम्हारे साथ ही फोटो खिचाने की उसकी इच्छा क्यो हुई ? क्या तुम उसे पसन्द आ गये ?'

'यह मैं नही जानता। पारुल ने कहा था कि हम जैसे कामो मे हैं, उसमे आदमी कब रहे, कब न रहे; इसीलिए फोटो खिचा रखने की उसकी बड़ी इच्छा थी।'

अलकेश ने कहा, 'वह तो ठहरी अनाडी लडकी, घर के भीतर रहने वाली...बाहर की दुनिया की खबरो से अनभिज्ञ। तो फिर उसने कहा और तुम यह सुनकर राज़ी-खुशी फोटो खिचाने चले गये ?'

तारक ने कहा, 'यदि यही कहते हो तो फिर मुझे क्षमा करो। मुझसे अन्याय हुआ है...।'

अलकेश ने कहा, 'प्रफुल्ल-दा ने कहा कि हमारा जो धर्म है उसमे क्षमा नाम की कोई चीज नहीं। यदि वही होता तो फिर न जाने कब की हमारी पार्टी टुकडे-टुकडे हो जाती। हम सब मरना जानते है, मारना जानते हैं, सज़ा भुगतना जानते है और सजा देना जानते है। लेकिन हम सब क्षमा करना नही जानते। मै भी कभी कोई अन्याय करूँ, कोई दोष करूँ, तो फिर मुझे भी तुम सब माफ मत करना, सज़ा देना। मै नत-मस्तक होकर वह सजा स्वीकार करूँगा।''

तारक ने कहा, 'तुम्हारे साथ मेरा इतने दिनो का बन्धुत्व है। तो फिर उसका कोई भी मूल्य नही है ?'

अलकेश ने जवाब दिया, 'आज की दुनिया मे भावुकता की कोई कीमत नही, यह समझ लो ! आज की दुनिया मे सबसे अधिक कीमती चीज़ जो है उसका नाम है— प्रयोजन। तुम्हारे पास जब चरित्र-बल ही नही रहा तो फिर हमारे लिए तुम्हारा भी कोई भी प्रयोजन नही रहा। हमारी

पार्टी मे तुम्हारी आश्यकता खत्म हो चुकी है।'

तब तक निखिल समझ ही नही पा रहा था कि वह क्या कहे !

इस बार उसने कहा, 'अच्छा अलकेश, इस बार के लिए अगर हो सके तो तुम उसे छोड दो। एक आखिरी मौका देकर देखो न ! और फिर...।'

अलकेश ने कहा, 'और फिर ? और फिर क्या, बोलो ! रुक क्यो गये ?'

निखिल ने कहा, 'तो फिर तारक अब जायेगा कहाँ ? क्या करेगा ? वह तो हमारी पार्टी के सिवाय और कुछ जानता ही नही ! वह तो एकबारगी ही डूब जायेगा।'

अलकेश ने कहा, 'तारक का क्या होगा, यह तारक समझे। उन बातो मे माथा खपाने की हमे ज़रूरत नही। प्रफुल्ल-दा का कहना है— सबसे पहले देश है, उसके बाद हम सब।'

तारक की आँखो से आँसू बह निकले। याद है तारक को कि उस दिन आँसुओ को वह किसी तरह से भी रोक नही पाया था। एक दिन जिस आदर्श के लिए वह सारी तकलीफे मुँह को सीकर सहता आया है, जिस आदर्श के लिए उसने अपनी माँ तक को आत्महत्या करने के लिए मानो बाध्य किया, वह सब-कुछ क्या एक मामूली घटना के कारण रातो-रात मिथ्या हो जायेगा ?

अलकेश के साथ उसके प्रथम परिचय के दिनो की बाते उसे याद आने लगी। कितनी ही बार दोनो ने एक साथ कालीघाट की गगा के किनारे पर बैठकर तरह-तरह का बहस-मुबाहसा किया है। उस समय से ही उसके लिए अलकेश की सिर्फ पूजा करना ही बाकी रहा था। गुप्त रूप से दोनो ने कितनी ही योजनाएँ बनायी थी—ये सभी कुछ तारक को याद आ रहा था। अनेक बार उसने घर मे माँ से झगडकर अलकेश के घर पर ही रातें बितायी है। वे सब बातें क्या तारक कभी भूल सकेगा ?

और एक दिन की बात उसे याद आयी। अलकेश के पिताजी की नौकरी छूट गयी थी, अलकेश के कारण। अलकेश की माँ और उसके भाइयो ने उसे घर से निकाल दिया था।

तारक ने पूछा था, 'अब तुम कहाँ रहोगे, भाई ? तुम्हारे घर मे तो वे

सव अव तुम्हे जाने नही देगे।'

अलकेश ने हँसते-हँसते कहा था, 'हमारे लिए तो यह अच्छा ही हुआ है, रे।'

'क्यो ? क्या भलाई हुई है इसमे तुम्हारी ?'

अलकेश ने जवाव दिया था, 'अव से और फिर कभी माँ की नाराज़गी नही झेलनी होगी। मैं तो घर का कोई भी काम नही करता था। पिताजी ने कितनी वार मुझे वाज़ार से सौदा ले आने के लिए कहा है। मैंने वह सव-कुछ कभी नही किया। अव सारी झझटो से जान छूटी। अव मै विलकुल आजाद हूँ।'

'तो फिर तुम्हारा गुज़ारा कैसे होगा ?'

अलकेश ने कहा था, 'मेरे गुजारे की कौन-सी मुश्किल है ? प्रफुल्ल-दा तो है ही। फिर क्या चिन्ता है ?'

'प्रफुल्ल-दा का गुज़ारा किस तरह होता है ?'

अलकेश ने कहा था, 'प्रफुल्ल-दा को क्या रुपयो की कमी है, रे ? प्रफुल्ल-दा अगर चाहे, तो एक मिनट मे एक लाख रुपया इकट्ठा कर सकते है। भारत के वहुत-से बडे-वडे आदमी प्रफुल्ल-दा को रुपये देते है, क्या यह तुम जानते हो ?'

'वे प्रफुल्ल-दा को रुपये क्यो देते है ?'

अलकेश ने कहा था, 'रुपये देने पर तो उन्ही का भला होगा। देश जव स्वाधीन होगा, तव उन्हे भी सुविधाएँ मिलेगी। अगरेजो का वोरिया-विस्तर समेटने के दिन नजदीक आ गये है, यह वे भी जान चुके है।'

सच ही तो ! अलकेश के साथ यह घनिष्ठता क्या आज की है ? घर से निकाले जाने पर तारक ने अलकेश को अपने घर पर रखना चाहा था। टूटा-फूटा किराये का मकान। वारह रुपये महीने का किराया। जितने दिनो तक पिता के बीमा के रुपये थे, उतने दिनो तक किसी तरह गुजारा हुआ था। उसके बाद माँ के गहने बेचकर भी कुछ दिनो तक गुज़ारा हुआ था। फिर उसके वाद ? उसके वाद माँ केवल यही कहती, 'अव कोई नौकरी-वौकरी ढूंढ, रे बेटा ! अब तो मैं और चला नही पा रही हूँ।'

घर लौटते ही माँ पूछा करती, 'क्यो रे, नौकरी कही बैठी ?'

तारक कहता, 'नही, माँ !"

माँ को क्रोध आ जाता। कहती, 'नौकरी का कोई तरीका निकलेगा नही तो चलेगा कैसे ! दिन-रात उस आवारा लडके की सगत मे रहोगे, तो नौकरी खोजने का समय मिलेगा भी कैसे ? उसके साथ भला इतनी दोस्ती क्यो है तुम्हारी ? क्या वही तुम्हे खिलाता-पिलाता है ?'

उस अलकेश के साथ मेल-जोल रखने के कारण कितने ही लोगो ने कितनी ही बाते कही हैं उससे। किन्तु उस समय तारक ने किसी की भी बात नही मानी।

निखिल की आवाज़ ने मानो उसे पुन. इस कठोर जगत मे ला पटका।

निखिल ने कहा, 'तो फिर उसके काम ?'

अलकेश ने कहा, 'उसके काम अब तुम करोगे।'

'मैं कर सकूँगा क्या ?'

'क्यो नही कर सकोगे ? ऐसा कौन-सा हाथी-सा बडा है यह काम ? सुबह उनके लिए बाज़ार से सौदा लाने के बाद तुम चले जाओगे पोटा-पाडा। वहाँ छह अभावग्रस्त परिवार है। उन्हे सप्ताह मे एक दिन चावल दे आओगे। उसके अलावा इतवार के दिन बीस-पच्चीस घरो से, जिनका ठिकाना मैं बता दूँगा, तुम चावल इकट्ठा करके ले आओगे और ऑफिस मे जमा करवा दोगे। वह सभी कुछ मैं तुम्हें बता दूँगा। और रुपयो की जो भी ज़रूरत होगी, मैं पूरा करूँगा।'

उसके बाद उसने तारक की ओर देखा। उसने कहा, 'तारक, तुम्हारे पास जो भी रुपये-पैसे हैं, उसके बारे मे निखिल को समझा दो।'

तारक का मुँह देखकर निखिल को जैसे मोह-सा हुआ। सचमुच तारक को काफी आघात पहुँचा था। तारक सचमुच ही रो रहा था।

उसने जेब मे रुपये-पैसे बाहर निकाले।

निखिल ने कहा, 'वह...वह भी हमारे ही साथ अगर काम करे तो...।'

अलकेश हुकार कर उठा। कहने लगा, 'जो कुछ कह रहा हूँ, वही करो। तारक, तुम्हारे पास जो भी रुपये-पैसे बचे हैं, उन्हे निखिल को दे दो। बस, अब तुम्हारी छुट्टी। खबरदार, जो फिर कभी इधर पैर रखा

तो...!'

तारक की जेब से सिर्फ सडसठ रुपये बारह आने निकले ।

अलकेश ने पूछा, 'कितने है ?'

निखिल ने उत्तर दिया, 'सडसठ रुपये बारह आने ।'

'ठीक से गिन लिया तो है तुमने ?'

निखिल ने कहा, 'हाँ ।'

अलकेश ने कहा, 'तो फिर तारक, अब तुम जा सकते हो। तुम कुछ बुरा मत मानना, तारक! तुम्हारे साथ मेरा इतने दिनो का सम्पर्क है। मुझे तुम भली-भाँति जानते हो। तुम्हे मैं कितना चाहता हूँ, सम्भवत: इस बात से भी तुम अनजान नही। किन्तु भाई, जहाँ कर्तव्य का सवाल है— वहाँ दया-माया और प्यार का सवाल उठाना उचित नही। तुम रो रहे हो, यह मै देख रहा हूँ। लेकिन मेरी रुलाई तो तुम सुन नही रहे हो, कभी सुन भी नही पाओगे। छोडो भी, इतनी बातो की क्या जरूरत है ? अपने माँ-बाप और भाई-बहन को भी एक दिन मैं इसी तरह अपने मन से दूर कर चुका हूँ। आज तुम्हें अपने मन से निकाल बाहर करने मे चाहे जितना भी कष्ट क्यो न हो, मैंने मन से दूर कर दिया। अब तुम्हारे बारे मे और कभी सोचूंगा भी नही।'

इसके बाद और फिर तारक वहाँ बैठा रह नही पाया। वह खडा हो गया। इतने दिनो का आश्रय-स्थल! दिन-प्रतिदिन की गहन घनिष्ठता से इसके साथ उसकी धडकनें जुड गयी थी। उसी आश्रय-स्थल को हमेशा-हमेशा के लिए उसे छोड जाना होगा, यह कल्पना करके ही मानो उसकी छाती व्यथा से फट रही थी।

फिर भी आखिरी प्रयास के रूप मे उसने कहा, 'तो क्या सचमुच ही मैं चला जाऊँ ?'

अलकेश कुछ देर तक उसकी ओर अपलक देखता रहा। उसके बाद उसने कहा, 'हाँ, चले जाओ, और फिर कभी मत आना।'

तारक ने धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर पाँव बढाने की चेष्टा की। किन्तु हठात उसे ऐसा लगा मानो किसी ने उसके दोनो पैरो को मोटी साँकलो से बाँध दिया हो। उसकी चल सकने की क्षमता का ही मानो लोप हो गया

हो। तारक ने अपनी ताकत लगाकर मोह-माया की उन साँकलों को तोड़-कर दरवाजे की ओर बढने का उपक्रम किया।

ठीक उसी समय एक काड हो गया।

अचानक हाँफते-हाँफते कालीपद ने प्रवेश किया। उसके चेहरे पर आतक की स्पष्ट छाप थी।

कहने लगा, 'अरे, उधर सर्वनाश हो गया।'

निखिल चमक उठा। उसने पूछा, 'क्या हुआ ?'

अलकेश के चेहरे पर किन्तु वही अविचल भाव था। मानो उसने सर्वनाश की बात सुनकर भी निर्विकार रह सकने की साधना मे सिद्धि प्राप्त की थी।

निखिल ने कहा, 'इतना हाँफ क्यो रहे हो ? क्या हुआ है, झट-पट बतलाओ तो।'

कालीपद ने कहा, 'मै यदु भट्टाचार्य लेन से आ रहा था। वहाँ भीड़ देखकर मैंने एक आदमी से पूछ-ताछ की। सुना कि उस लडकी की माँ मर गयी है।'

तारक को याद है कि उस दिन वही सबसे अधिक चमक उठा था। वह चीत्कार करते हुए पूछने लगा था—'किस लडकी की माँ ? क्या पारुल की ? पारुल की माँ ? मासी माँ ?'

कालीपद ने कहा, 'हाँ, शायद वही।'

तारक और वहाँ रुका नही। एकबारगी दौड़कर बाहर जाने को था वह।

पीछे से गम्भीर स्वर मे गरजते हुए अलकेश ने कहा, 'तारक, रुको-!'

तारक ने पीछे मुड़कर देखा। अलकेश उसी की ओर देखता हुआ खड़ा था। उसकी दोनो आँखो से मानो आग बरस रही थी।

'तुम्हें वहाँ नही जाना होगा।'

तारक ने कहा, 'लेकिन इस विपत्ति मे पारुल को कौन सभालेगा ? उसका तो और कोई है भी नही।'

'यह सब सोचने की तुम्हे जरूरत नही। आज से मैं उनकी देख-भाल करूँगा और साथ ही निखिल भी। खबरदार, जो तुमने उस घर मे और

कभी पैर रखा तो, यह तुम्हे चेता रहा हूँ ।'

इसके बाद तारक समझ ही नही पाया कि वह क्या करे ! वह जडवत वही खड़ा रहा । उसके दिमाग मे उस समय भी अलकेश की बाते मानो मँडरा रही थी—यह सब सोचने की तुम्हे जरूरत नही । आज से मै उनकी देख-भाल करूँगा और साथ ही निखिल भी । खबरदार, जो तुमने घर मे और कभी भी पैर रखा तो, यह तुम्हे चेता रहा हूँ ।

उसके बाद और क्या हुआ, किसने क्या कहा, कब वे सब चले गये—यह सब उसे बिलकुल भी याद नही । उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मानो स्मृति-विस्मृति के अतल गह्वर मे आपादमस्तक धँसता चला जा रहा है और धीरे-धीरे चारो ओर से घिरता हुआ हताशा का अधकार उसे निगलता जा रहा है ।

रात-भर मिस्टर सिमसन को अच्छी तरह नीद नही आयी । और फिर नीद न आयी हो, उसका कोई प्रमाण भी नही था उनके पास ।...वह शायद 1945 ई० की बात होगी । इडिया मे उन्हे शान्ति मिल सकेगी, शायद इसी आशा मे वह नौकरी करने यहाँ चले आये थे । उसके पहले उन्होने देखा था कि मनुष्य के जीवन की कोई कीमत नही । पृथ्वी नाम के इस ग्रह के ऊपर मनुष्य नाम के जो जीव निवास करते है उनके लिए मनुष्यता, प्रेम और सत्य की कोई कीमत नही है । कीमत है रुपयो की और क्षमता की । रुपयो के आ जाने पर या क्षमता प्राप्त हो जाने पर सभी आपके चरणो पर माथा झुकायेंगे; और रुपये या क्षमता को प्राप्त करने के लिए ही सभी आपकी छाती मे छुरा भोकने से भी बाज़ नही आयेंगे !

वे सब बातें बहुत दिनो से साहब को याद नही थी । अब इतने दिनो के बाद इडिया आने पर वे बातें फिर से याद आ गयी ।

ऑक्सफॉर्ड मे उनके प्रोफेसर ने कहा था, 'गो टु इडिया । इडिया जाओ । इंडिया है वेदान्त और त्याग का देश । वहाँ मनुष्य पचास वर्ष की उम्र के बाद वानप्रस्थी हो जाते है । उस देश मे जाने पर तुम्हें शान्ति

मिलेगी।'

शान्ति की आशा ने जो व्यक्ति सात समुद्र और तेरह नदियाँ पार कर यहाँ आया था, सम्भवतः उसका न आना ही ठीक होता आखिरकार। क्या जाने किस अध्यापक ने उससे ये वचन कहे थे! शायद मैक्समूलर की पुस्तक पढकर इडिया के सम्बन्ध मे उसे यह जानकारी मिली थी। अन्यथा मिस्टर जॉन सिमसन दुनिया मे इतने देश होते हुए कम-से-कम इडिया तो नही आते!

उस पर पुलिस की नौकरी! एक तो करेला, दूजे नीम चढा। जब से उन्होने ट्रेनिग लेना शुरू किया था, तभी से उन्हे ऐसा लग रहा था, मानो यह इडिया है ही नही। यह अफ्रीका है या कोई और दूसरा जनपद है। उन्होने सुना था कि अफ्रीका मे 'कैनिबाल' (मनुष्यभक्षी) नाम की एक जाति है। वे देखने मे मनुष्य-जैसे होने पर भी मनुष्य का मास खाते हैं।

वह जब तक इंडिया मे थे, तब तक उन्होने मन-ही-मन बहुत ही कष्ट पाया। ब्रिटिश-जाति जैसी सभ्य जाति के सस्पर्श मे आकर भी ये लोग थोड़े भी सभ्य नही बन सके!

एक दिन उन्होने डगलस से पूछा था, 'अच्छा डगलस, हमारे ऑक्सफॅर्ड के एक प्रोफेसर ने तो कहा था कि भारत है धर्म का देश...।'

डगलस ने कहा था, 'ऑल रबिश! यह तो हम लोग हैं, नही तो रूस कब का इडिया को गुलाम बना लेता। इडिया चिरकाल से एक पराधीन देश रहा है। ब्रिटिश के पहले ये मुगलो के अधीन थे और उसके पहले पठानो के। और उसके पहले था इडिया हज़ारो छोटे-छोटे देशो मे बँटा हुआ। किसी का किसी के साथ मेल नही था। हमेशा आपस मे वे लडते-भिड़ते ही रहते थे। हम लोगो ने ही पहले-पहल इस देश को एक किया है।'

एक दिन एक वकील, जिनके पास एम० ए० और बी० एल० की डिग्रियाँ थी, लाल बाज़ार आये थे। बात-ही-बात मे इडिया का प्रसग छिड गया। मिस्टर सिमसन ने कहा, 'अच्छा मिस्टर दासगुप्त, आप बुरा मत मानियेगा। एक बात बताइये। बगाली इतने अनग्रेटफुल—इतने अकृतज्ञ क्यो होते है? मेरे पास से कितने ही लोग किसी काम के लिए रुपये ले

जाते है, लेकिन वे काम पूरा करके लौटाते नही। ऐसा क्यो ?'

मिस्टर दासगुप्त ने कहा था, 'क्यों ? बतलाऊँ ? इसका कारण यह है कि हम लोग नमक-हराम है।'

'किन्तु अगरेजो को गोलियो से मारने मे बगालियो का क्या लाभ होना है ? क्या इसलिए कि हम राजा की जाति के है ? किन्तु क्या डेविड हेयर ने आप लोगो का कोई उपकार नही किया ? सर विलियम जोन्स ने क्या आप लोगो की कोई भलाई नही की ?'

मिस्टर दासगुप्त सम्भवत. किसी मतलब से साहब के पास गये थे; शायद इसीलिए सच्ची बात उनके मुँह से निकल नही पा रही थी। इसी-लिए उन्होने सिर्फ इतना ही कहा था, 'मैंने कहा न सर, हम लोगो के खून मे ही है नमक-हरामी। मेरी ही बात लीजिये न ! मैं एम० ए०, बी० एल० पास हूँ। मैंने भी बहुत-से लोगो का उपकार किया है। फिर भी मेरे लिए एक नौकरी नही जुटती। इसीलिए तो एक अदालत से दूसरी अदा-लत तक मैं झख मारता फिरता हूँ।'

इसीलिए तारक जिस दिन पहली बार उनसे मदद माँगने गया था, उस दिन उन्होने उसे भगा दिया था।

किन्तु फिर भी तारक रुका रहा। बार-बार उसने कहा था, 'सर, मुझे एक नौकरी की ज़रूरत है। मुझे मेहरबानी करके एक नौकरी दीजिये, सर !'

हठात मिस्टर सिमसन की नीद टूटी। उन्होने चारो ओर गौर से देखा। कोई भी तो न था कही। ग्रैंड होटल के दो-तल्ले के एक कमरे मे वह अकेले सोये हुए है। न तो मिस्टर डगलस है, न मिस्टर दासगुप्त और न ही तारक। यही क्यो, वह उन्नीस सौ पैंतालीस साल का कलकत्ता भी नही है !

उन्होने बिछौने के पास की घटी दबायी। एक बेयरा चाय लेकर भीतर आया। बेड-टी। यह दार्जिलिंग की चाय कितने दिनो के बाद पीने को मिली थी ! बगाल मे अगर कोई उम्दा चीज़ है तो वह है चाय। यही दार्जिलिंग-टी।

बेयरे ने पूछा, 'ब्रेकफास्ट कब ले आऊँ, हुजूर ?'

'आठ बजे . ।'

बेयरा चला जा रहा था। मिस्टर सिमसन ने उसे रोकते हुए पुकारा, 'बेयरा...!'

'कहिये, हुजूर !'

सिमसन साहब ने कहा, 'एक जेंटलमैन मेरे साथ मुलाकात करने आयेंगे। उनका नाम है मिस्टर सेन। तारक सेन। यदि वह आये तो उन्हे मेरे कमरे मे भेज देना।'

बेयरा सलाम कर बाहर चला गया। मिस्टर सिमसन ने स्नान-घर की ओर कदम बढाये।

उधर तारक खूब तडके ही सोकर उठा। कितने अरसे के बाद मिस्टर सिमसन आये हैं। जब सभी के दरवाजो का चक्कर लगाने के बाद भी उसे कोई कूल-किनारा नही मिला था, तभी निरुपाय होकर उसने इस साहब को चिट्ठी लिखी थी। साहब उसकी चिट्ठी का इस तरह जवाब देंगे, यह उसकी कल्पना के परे था।

ट्राम की पटरी पार कर किनारे पर खड़े होकर उसने देखा कि ट्राम-बस का चलना अभी तक शुरू नही हुआ था ठीक से। अनेक वर्ष पहले एक दिन वह अकेला आश्रयहीन अवस्था मे इसी रास्ते पर ही आकर खडा हुआ था। पास मे था फायर-ब्रिगेड का गुमटी-घर। फायर-ब्रिगेड की कई गाडियाँ बिलकुल तैयार खडी रहती थी। युद्ध के मौके पर जिस-किसी भी जगह से आग बुझाने के लिए बुलाहट आ सकती थी। सब तैयार रहते थे। कौन किसका कब खून कर दे, इसका ठिकाना नही था। कौन कब तोड-फोड की कार्रवाई शुरू कर दे, इसका भी कोई हिसाब नही था। इतना बडा देश जर्मनी...इतने बडे अस्त्र 'वी-2' का आविष्कार करके भी युद्ध मे हार रहा है। फिर भी सब लोग तैयार रहो। बैनर उडता रहे ! उन फायर-ब्रिगेड वालो की तरह ही सिर पर हेलमेट पहनकर तैयार रहो—सिर्फ अपने शत्रुओ को मार गिराने के लिए। कौन न्याय करता है

अथवा किसने अन्याय किया है, यह जानने की ज़रूरत नही। बस दुश्मन हो, इतना ही काफी है। उसे खत्म करना ही होगा। 'वी-2'।

खडे-खड़े वे बाते उसके मस्तक के ऊपर फाइटर बम की भाँति गुन-गुन करने लगीं—आज की दुनिया मे सबसे अधिक कीमती चीज़ जो है, उसका नाम है—'प्रयोजन'।...तुम्हारे पास जब चरित्र-बल ही नही रहा, तो फिर हमारे लिए तुम्हारा भी कोई प्रयोजन नही रहा। हमारी पार्टी मे तुम्हारा प्रयोजन खत्म हो चुका है।

और फिर गुन-गुन करती आवाज़ पुन. प्रतिध्वनित हुई—तारक का क्या होगा, यह तारक समझे। उन बातो मे माथा खपाने की हमे ज़रूरत नही। प्रफुल्ल-दा का कहना है—सबसे पहले देश है, उसके बाद हम सब।

बार-बार वही शब्द गूँजने लगे—...जहाँ कर्त्तव्य का सवाल है, वहाँ दया-माया और प्यार का सवाल उठाना उचित नही।

इन विभिन्न वाक्यो ने मानो तारक के मानस मे प्रवेश कर उसमे मथन पैदा कर दिया था। परेशान कर डाला था उसे। किन्तु तब तक उसकी आँखो के आँसू सूख चुके थे। अलकेश ने ही जब उसके खिलाफ इतना बडा अभियोग लगाया है, तो फिर वह पृथ्वी पर किसी के पास से भी करुणा की भीख कभी नही लेगा।

सिर्फ याद आने लगी मासी माँ की। तब तक निश्चय ही निखिल, कालीपद आदि सभी वहाँ जा पहुँचे होगे। और अलकेश ? क्या अलकेश भी गया है वहाँ ? उसके विरुद्ध तो गिरफ्तारी का वारंट है। पुलिस अगर उसे वहाँ देख ले, तो वह उसे तुरत गिरफ्तार कर लेगी।

ट्राम के उसी रास्ते पर खडे-खडे तारक ने अधकार के देवता को लक्ष्य करते हुए कहा, 'भगवन, तुम तो जानते हो कि मेरा कोई कसूर नही। तुम तो जानते हो कि अलकेश से छिपाकर मैने कभी भी कोई काम नही किया। अलकेश से छिपाकर मैं कोई भी काम कर ही नही सकता। अब तुम्ही विचार करो, मैं अपराधी हूँ या निरपराध। मैं यदि अपराधी हूँ तो तुम मुझे क्षमा मत करना; तुम मुझे दड ज़रूर देना, भगवन !'

किन्तु उस समय कौन किसकी बात सुने ! उस समय वह एक अराजक युग चल रहा था। कोई किसी का विश्वास नही करता। कोई किसी

को प्यार भी नही करता था । हिन्दुओ को मुसलमानो का विश्वास नही और न ही मुसलमानो को हिन्दुओ का । अविश्वास, असन्तोष, हत्या और अनिग्रह—यही थी मनुष्य की पूँजी उस समय । उधर मद्रास के राजगोपालाचारी 'पाकिस्तान' का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए राज़ी हो गये । येन-केन-प्रकारेण अगरेज़ो को हटाना ही उनका उद्देश्य था । अगरेज़ सरकार ने उनका यह प्रस्ताव रद्द कर दिया ।

अलकेश कहता, 'सर्वनाश हो गया, रे ! हम लोगो के इतने दिनो के सारे प्रयास नष्ट हो गये, रे ! !'

और इधर गाधी जिन्ना के हाथ-पैर पकड़कर अनुनय-विनय करने लगे थे । उन्होने जिन्ना को एक पत्र लिखा, 'I have always been a servant and friend to you Do not disappoint me' (मैं हमेशा ही आपका एक सेवक और मित्र रहा हूँ । मुझे निराश मत कीजिये ।)

हिन्दुओ के नेता सावरकर ने बिगडकर चीख़-पुकार मचाना शुरू कर दिया था । उन्होने कहा, 'भारतवर्ष गाधी या राजगोपालाचारी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नही है कि वे अपनी इच्छानुसार जिसे चाहे, उसे इसे दान मे दे दे ।'

यह तो हुई राजनीति । किन्तु राजनीति के बाहर भी तो और कोई नीति है । जिस नीति पर विश्वास करते है लाख-लाख तारक, अलकेश, निखिल और कालीपद जैसे लोग । जिस नीति के आधार पर परिवार छोडकर, आत्मीय-स्वजन का त्याग कर वे बाहर निकल आये थे—प्राणोत्सर्ग करने के लिए तैयार हो गये थे—वह कौन-सी नीति थी ? उसे कौन-सी नीति कहेगे ? क्या है उस नीति का नाम ?

बगाल के अकाल मे जो पन्द्रह लाख लोग खाये-पीये बिना मर गये थे, उनको मारकर कितना लाभ हुआ था व्यापारियो को ?

अलकेश कहता, 'हर लाश के पीछे एक हज़ार रुपया था ! अब हिसाब करके देख लो कि कुल कितने रुपये होते है ।'

तारक ने हिसाब जोडकर देखा था । कुल लाभ था—एक-सौ पचास करोड रुपये !

तो फिर ?

अलकेश कहता, 'मिलेगा, उन्हे भी दड मिलेगा। एक बार अगरेज चले जायें, तब तुम देखोगे कि उन्हे दड मिलेगा ही। जवाहरलाल ने खुद क्या कहा है, जानते हो? उन्होने कहा है—मै खुद एक कीडा भी नही मारता, किन्तु यदि सारे अनैतिक व्यापारियो को एक साथ गले मे फदा डालकर पास के लैम्प-पोस्ट से झुलाकर मैं मार सकूँ, तो इसमे मुझे सबसे अधिक खुशी होगी।'

तारक को याद है कि हठात अधेरे मे ट्राम की राह पर खडे होकर वह मन-ही-मन चीख उठा था, 'भगवान, तुम झूठ हो। काली, दुर्गा, शिव ब्रह्मा, विष्णु—तुम सभी हो मिथ्यावादी। जवाहरलाल मिथ्यावादी है, गाधी मिथ्यावादी है, राजगोपालाचारी, सावरकर, अलकेश, निखिल, कालीपद —सभी मिथ्यावादी है। यही क्यो, प्रफुल्ल-दा! तुम भी मिथ्यावादी हो। मै किसी का भी विश्वास नही करता, किसी का भी नही...।'

'क्यो रे तारक, तुम? तुम फिर यहाँ?'

तब तक मानो तारक की तन्द्रा टूटी। कब अनजाने ही उसके कदम यदु भट्टाचार्य लेन की ओर बढ चुके थे, खुद उसे ही पता नही। ट्राम के रास्ते पर खडे-खडे जिन्हे वह मिथ्यावादी कहकर गालियाँ दे रहा था, वह उन्ही के दरवाज़े तक चला आया था। मानो वह फिर उनसे कहने आया था, 'तुम सब मुझे माफ करो। मै जो कुछ भी बोल रहा था, सभी कुछ गुस्से मे बोल रहा था। वह मेरे मन की बातें नही, मुँह की बाते है। मुँह की बातो को सच मानकर तुम लोग मुझे ठुकराओ नही। मैं तुम लोगो के दल मे ही हूँ। तुम सब अपने दल से मुझे बाहर मत निकालो, भाई!'

'क्या रे, मुँह बाये खडे-खडे क्या देख रहे हो? अलकेश ने तो तुम्हे भगा दिया है, फिर भी तुम यहाँ आये हो?'

तारक उस समय एकटक आँगन की ओर देख रहा था। मासी माँ की सज्ञाशून्य मृत देह वहाँ एक खटिया के ऊपर लिटायी गयी थी। किसी भी तरफ दृष्टि न थी। निश्चल—शान्त शरीर। जो एक दिन पल-पल अपनी बेटी को पुकार-पुकारकर अस्थिर कर दिया करती थी, अब से वह और किसी को परेशान नही करेगी। पारुल हजार अन्याय करे, तो भी

उसकी माँ अब उस पर और हुक्म चलाने आयेगी नही। सिर्फ क्या यही ? तारक से अब अफीम लाने का तकाजा भी अब कोई नही करेगा।

'क्या रे, तुम फिर आ गये ? कुछ बोल नही रहे हो ?'

पारुल चबूतरे पर खडी-खडी रो रही थी। उसे एक हाथ से अलकेश ने पकड रखा था। वह उसे सान्त्वना दे रहा था।

तारक ने उस ओर से नजर हटा ली।

'तो फिर अब चलो।'

सभी ने पकडकर मासी माँ की अरथी को कधे पर उठाया। अँधेरे मे अच्छी तरह किसी को देखा भी नही जा पा रहा था। कुछेक अस्पष्ट छाया-मूर्तियाँ ! किसी के भी मुँह मे कोई शब्द न था। मानो पारुल की माँ की मृत्यु उपस्थित सभी लोगो के अपने किसी नितान्त आत्मीय की मृत्यु थी।

हठात अलकेश चबूतरे से उतरकर बोला, 'निखिल, यह लो। ये कुछ रुपये अपने पास रख लो। कुछ खरच-वरच हो, इसी से काम चला लेना। जाओ...।'

निखिल ने कहा, 'तुम्हे आने की जरूरत नही। हम लोग सारी व्यवस्था कर लेगे।'

'कर सकोगे तो ?'

'हाँ-हाँ, कर सकेंगे। कितने ही मुर्दे फूँके है। और फिर तुम्हारे नाम पर तो वारट है, तुम यही रुको। तुम यदि यहाँ से चले जाओगे तो पारुल को कौन सभालेगा ?'

अलकेश ने कहा, 'ठीक है। किसी को भी मत बतलाना कि मैं यहाँ हूँ। देखो, कोई भी जानने नही पाये।'

उनके जाने के बाद अलकेश ने भीतर से सदर दरवाजे की कुडी लगा दी। उसके बाद चबूतरे पर जाकर पारुल की तरफ लक्ष्य करते हुए उसने कहा, 'तुम रोओ मत। किस आदमी के माँ-बाप चिरकाल के लिए बचे रहते है ?'

पारुल ने रोते-रोते कहा, 'मै अकेली इस घर मे कैसे रहूँगी, अलकेश-दा ? इस मुहल्ले मे तो हमारा कोई नही।'

अलकेश सान्त्वना देते हुए पारुल का माथा सहलाने लगा।

उसने कहा, 'मैं तो हूँ। मैं तुम्हारी देख-भाल करूँगा।'

पारुल ने कहा, 'तुम्हारे पास वक्त ही कहाँ है कि मेरी देख-भाल करोगे ? तुम्हारे हाथो मे तो कितने काम है...।'

अलकेश ने कहा, 'मै और कही भी नही जाऊँगा, पारुल ! कही जाने का उपाय भी नही है मेरे पास। मेरे खिलाफ पुलिस का वारट है। मैं दो पुलिस के सिपाहियो की हत्या कर भागता फिर रहा हूँ। मुझे अगर एक बार भी पुलिस पकड ले तो फिर मुझे फाँसी दिये बिना वह नही मानेगी। पुलिस ने मेरी गिरफ्तारी की कीमत रखी है दस हज़ार रुपये।'

पारुल शायद डर से काँप उठी उसकी बातो को सुनकर। कहने लगी, 'तो फिर क्या होगा ?'

'और होगा क्या, कुछ भी नही। मै जैसा हूँ, वैसा ही रहूँगा।'

'किन्तु अगर कोई पुलिस को खबर दे दे ?'

अलकेश ने कहा, 'खबर और कौन देगा ? किसी को मालूम ही नही हो पायेगा कि मैं इस घर मे हूँ। कोई यह कल्पना भी नही कर पायेगा। और अगर कोई खबर दे भी दे तो मुझे जिन्दा पकडने की क्षमता पुलिस मे तो क्या पुलिस के बाप मे भी नही।'

पारुल ने कहा, 'मुझे बहुत डर लग रहा है, अलकेश-दा !'

'डर की कोई बात नही। जब तक मै तुम्हारे साथ हूँ, तब तक डरने की कोई बात नही। मैं आज से यही रहूँगा, यही खाऊँगा, यही सोऊँगा। मैंने निखिल से कह दिया है कि वह कल से इस घर का सारा काम सभाल लेगा। बाज़ार से सौदा लाने के साथ-साथ और भी सभी काम !'

'क्यो तारक-दा ? तारक-दा को क्या हुआ ? तारक-दा क्या कलकत्ता मे नही है ?'

अलकेश ने कहा, 'तारक को मैंने एक दूसरा काम देकर बाहर भेज दिया है ! कलकत्ता वापस लौटने मे उसे काफी समय लगेगा।'

पारुल ने कहा, 'लेकिन तारक-दा ने हम लोगो पर कितना उपकार किया है ! तारक-दा अगर हमारी देखभाल नही करता, तो पता नही हम कब के समाप्त हो जाते। तारक-दा का कर्ज़ मैं जीवन मे कभी भी नही चुका पाऊँगी।'

इन बातो को सुनकर अलकेश कुछ क्षुब्ध हुआ। कम-से-कम उसकी आवाज़ सुनकर कुछ ऐसा ही लगा।

अलकेश ने कहा, 'तारक ने जो कुछ भी किया है, वह मेरे कहने पर ही। मैने उसे जो कुछ भी करने के लिए कहा है, उसने ठीक वैसा ही किया है। इसमे भला उसकी बहादुरी क्या है ?'

पारुल ने कहा, 'नही अलकेश-दा, तुम ठीक्र-टीक जानते नही। तारक जैसा आदमी मिलना बहुत मुश्किल है।'

यह बात सुनकर अलकेश खुश हुआ या नाराज़, अँधेरे मे यह ठीक-ठीक देखा नही जा सका। लेकिन अलकेश ने कहा, 'लगता है कि इसीलिए तुमने तारक के साथ अपनी फोटो खिचवायी है!'

पारुल इस बात का जवाब देती, इसके पहले ही एक कांड हो गया। सम्भवत अलकेश की नज़र पड गयी थी कि अँधेरे मे आँगन के बीच मानो कोई खडा था !

'कौन ? कौन यहाँ खडा है ? कौन ?'

कहते-कहते अलकेश चबूतरे से कूदकर आँगन मे उतर आया और वह एकबारगी तारक के सामने खडा हो गया।

'तुम ? यहाँ ?'

तारक ने कहा, 'जाने के पहले एक बार मासी माँ को देखने आया था।'

'किन्तु मैंने तो तुमसे कहा था कि और अब इस घर मे कदम भी नही रखना। तो फिर तुम आये कैसे ?'

'कहा न, मासी माँ के आखिरी दर्शन करने के लिए।'

पारुल तब तक तारक की आवाज सुनकर आँगन मे उतर आयी थी। वह तारक के ठीक सामने खडी होकर बोली, 'तारक-दा, तुम ? तुम कब आये ?'

तारक ने कहा, 'काफी देर पहले।'

'किन्तु मै तो जान ही नही पायी, कब आये ?'

उसके बाद अलकेश की ओर आँखे गडाकर उसने पूछा, 'लेकिन तुमने तो कहा था कि तुमने तारक को कलकत्ता से बाहर भेज दिया है और उसे

लौटने मे काफी समय लगेगा।'

अलकेश ने उस बात का जवाब न देकर कहा, 'तुम रुको। मैं तारक से बात कर रहा हूँ और बीच मे तुम क्यो टपक पडी? तुम अपने कमरे मे जाओ।'

पारुल ने कहा, 'लेकिन मेरी बात का उत्तर तो दोगे! मैं तो तुम लोगो के काम-काज कुछ भी समझ नही पाती हूँ।'

अलकेश ने कहा, 'तुम्हे समझने की कोई जरूरत भी नही। हम लोगो की बातो के बीच तुम क्यो आती हो?'

तारक ने कहा, 'अब इस घर मे और रुकना मेरे लिए भी उचित नही है। मैं भी अब यहाँ आऊँगा नही। अलकेश तुमसे जो कुछ कहता है, तुम वही करो।'

उसके बाद लौटते-लौटते वह फिर कुछ क्षणो के लिए रुका। कहने लगा, 'सिर्फ़ एक बात...।'

अलकेश ने कहा, 'क्या बात है, कहो!'

तारक ने कहा, 'यह मैं तुमसे एकान्त मे कहना चाहता हूँ।'

अलकेश ने कहा, 'पारुल, तुम अपने कमरे मे जाओ तो। तारक मुझसे एकान्त मे कुछ कहना चाहता है...।'

पारुल के जाते ही तारक ने विनम्र स्वर मे कहा, 'तुम बुरा मत मानना, भाई अलकेश! मैं तुमसे सिर्फ एक अनुरोध करना चाहता हूँ। क्या तुम मेरा अनुरोध रखोगे?'

'बोलो, क्या है तुम्हारा अनुरोध?'

तारक ने कहा, 'पारुल के साथ जो मेरी फोटो है, वह चाहता हूँ मैं। क्या तुम मुझे वह फोटो दे सकोगे?'

यह सुनकर अलकेश गुस्से मे फट पडने वाला ही था, किन्तु उसने अपने-आपको किसी तरह सभाल लिया। उसने पूछा, 'वह फोटो लेकर तुम क्या करोगे?'

'मै सिर्फ अपने पास रख लूंगा।. .और कुछ भी नही करूँगा।'

अलकेश बाघ की-सी पैनी दृष्टि से सिर्फ तारक को देखता-भर रहा। उसके मुँह से कोई भी उत्तर नही निकला।

तारक ने कहा, 'वह फोटो दे दो, भाई! मेरा कोई नहीं, कुछ भी नहीं। तुम तो मेरे विषय मे सब-कुछ जानते हो। तुम्हारे लिए कुछ जानना बाकी नही है। न मेरा घर-द्वार है और न ही माँ-बाप। तुमने भी आज मुझे ठुकरा दिया। तो फिर मैं भला किसके सहारे जीवित रहूँगा, बोलो? तुम्हारे पैर पडता हूँ, अलकेश, वह फोटो तुम मुझे दे दो।'

यह कहकर सचमुच अनुनय-विनय करते हुए वह अलकेश के पैरो पर झुकने लगा।

और ठीक उसी समय अलकेश क्रोध से फट पडा, और साथ-ही-साथ उसने तारक के ऊपर एक लात जमायी। उसने चीखते हुए कहा, 'बदमाश, निकल जा यहाँ से! निकल जा, दूर हट!'

ठोकर खाते ही तारक सीमेंट की फर्श के ऊपर उलट गया।

'निकल, निकल यहाँ से!'

चीत्कार सुनते ही पारुल भीतर से दौडकर बाहर आयी। कहने लगी, 'क्या हुआ है, अलकेश-दा! क्या हुआ है? तारक-दा को मार क्यो रहे हो? क्या किया है उसने?'

किन्तु तब तक तारक को मारते-मारते घर से बाहर निकालकर अलकेश ने दरवाजा बन्द कर लिया और कुडी लगा दी। वह अब तक हाँफ रहा था।

पारुल कुछ भी समझ नही पा रही थी।

बार-बार वह पूछने लगी, 'क्या हुआ है, अलकेश-दा? आखिर हुआ क्या है? तुम्हे इतना गुस्सा क्यो आ गया? उसे भगा क्यो दिया तुमने?'

अलकेश ने कहा, 'उसे जान से नही मारा, यही काफी है! जानती हो, उसने क्या किया है?'

पारुल ने कहा, 'जो कुछ भी करे। इसलिए क्या तुम उसे इस कदर मारोगे?'

अलकेश ने कहा, 'उसने क्या किया है, सुनोगी? जब सुनोगी तो खुद समझ जाओगी कि उसे मैंने क्यो मारा है!'

'तारक-दा ने क्या किया था?'

अलकेश ने कहा, 'उसने हमारे संगठन के रुपये चुराये थे।'

'यह क्या ?'

अलकेश ने कहा, 'हाँ, मैने उस पर सबसे ज्यादा भरोसा किया था। उसी भरोसे के वल पर मैने उसके हाथो मे संगठन के हजारो-हज़ार रुपये सौप दिये थे। अब वह उन रुपयो का हिसाब नही दे रहा है। उसने सारे रुपये गोल कर दिये।'

पारुल ने कहा, 'क्या कह रहे हो तुम ? तारक-दा के सम्बन्ध मे मैं तो इसकी कल्पना भी नही कर सकती।'

दरवाज़े के वाहर खडे तारक के कानो तक सारी बाते गयी। उसके बाद और कुछ भी सुना नही जा सका। सम्भवतः फिर दोनो ही कमरे के भीतर चले गये।

उसके वाद वहाँ खडे-खडे उसने सोचा कि वह अब क्या करेगा ? इतने बड़े अभियोग का एक शाब्दिक प्रतिवाद कर पाने पर भी शायद पारुल के सामने वह मुँह दिखाने लायक रहता। अथवा उसकी इज्जत बचती। इतना बडा मिथ्या अभियोग अगर वह निर्विकार चित्त से पचा जाये तो इससे तो पारुल के सामने उसकी कायरता ही सिद्ध होगी। अलकेश की मित्रता क्या इतनी ही कीमती है कि उसे बचा रखने के लिए सम्पूर्ण जीवन-पर्यन्त इस झूठ को अपने माथे पर ढोना पडेगा ? अलकेश के प्रति उसका प्रेम क्या इतना ही अपरिहार्य है कि उसके लिए उसे इतनी बडी ग्लानि सहन करनी होगी ?

तारक और फिर वहाँ रुका नही। वह जिस ओर से आया था, उसी ओर धीरे-धीरे बढने लगा। उसी फायर-ब्रिगेड की गुमटी के निकट ! ट्राम के रास्ते की ओर ! !

लाल-बाज़ार की वही फाइल तब तक सरकते-सरकते चौरगी की इलशियम रो तक चली आयी। वह फाइल अब और भी मोटी हो गयी है। उस फाइल मे अव और एक नाम जुड गया है। पहले से उसमे हजारोहज़ार नाम दर्ज थे ही। इस बार उसमे और एक नया नाम जोडा गया

है—अलकेश चक्रवर्ती।

अलकेश चक्रवर्ती की हुलिया कुछ इस प्रकार दर्ज थी—पाँच फुट आठ इंच लम्बाई, माथे पर काले घुँघराले बाल। वेशभूषा के सम्बन्ध मे भी विशद रूप से वर्णन था। काफी दिनो से उसकी खोज की जा रही है। बहुतेरे जासूस लगे हुए है उसके पीछे। उसे आखिरी बार देखा गया था फ़रीदपुर ट्रेन डकैती के समय। डकैतो के दल मे वह भी शामिल था। उसकी ही पिस्तौल से पुलिस के दो आदमी मारे गये थे। उसके लिए अनेक प्रान्तो की पुलिस को भी सतर्क किया गया था। बिहार, उड़ीसा, असम से शुरू कर यू० पी०, सी० पी०—सभी प्रान्तो की पुलिस उसे ढूँढती फिर रही है। उसके पकडने की कीमत घोषित की गयी है—नगद दस हजार रुपये!

ऊपर से हुक्म आया है कि उसे जिन्दा पकडना ही होगा।

मिस्टर जॉन सिमसन ने सभी भेदियो को बता दिया है। उन्होने कह दिया है कि चाहे जैसे भी हो, इस अलकेश चक्रवर्ती को पकडना ही होगा। पुलिस के दो आदमियो को जिसने गोलियो से भून दिया है, उसे यदि जिन्दा रहने दिया गया तो इडिया से ब्रिटिश एम्पायर का अस्तित्व ही मिट जायेगा! और अगर इडिया से उनका अस्तित्व मिटा तो फिर फार ईस्ट, मिडिल ईस्ट, वेस्ट एशिया और साउथ एशिया से भी उन्हे बिस्तर गोल करना होगा। युद्ध के समय इडिया साउथ-ईस्ट एशिया का हेड-क्वार्टर बन गया था। उधर जर्मनी की अवस्था अब-तब की-सी हो रही थी तथा जापान भी काबू मे आ गया था। ऐसे समय मे इडिया से ब्रिटिश पावर की प्रेस्टीज पर आँच आये, ऐसी किसी भी घटना को बरदाश्त नही किया जा सकता। फिर तो काग्रेस, महात्मा गाधी और जवाहरलाल नेहरू की प्रेस्टीज और भी बढ जायेगी। तब तो वे जो कुछ माँगेगे—वही देना होगा। उसके बाद तो हिन्दू-मुसलमानो के बीच दगा-फसाद करवा के भी फिर काग्रेस को और रोक रखा नही जा सकेगा। वे सब फिर तो पूर्ण स्वाधीनता माँगेगे—कम्प्लीट इडिपेडेस। फिर तो उन्हे ब्रिटिश कॉमनवेल्थ मे भी नही रखा जा सकेगा।

यदु भट्टाचार्य लेन के टूटे-फूटे इकतल्ला मकान के भीतर बैठा-बैठा

अलकेश इसी तरह की बाते कहता।

वह कहता, 'पुलिस की गिरफ्त मे आने मे मुझे कोई भी आपत्ति नही है, पारुल ! मेरी एकमात्र आपत्तिअगर है भी तो सिर्फ यही कि मुझे पकडते ही पुलिस प्रफुल्ल-दा को भी पकड लेगी।'

पारुल कहा करती, 'ऐसा न कहो, अलकेश-दा ! अगर तुम्हे पुलिस पकड लेगी, तो फिर मेरा क्या होगा ?'

अलकेश कहता, 'तुम कयो डरती हो ? मुझे जिन्दा पकड़ने की क्षमता है ही नही अगरेज-पुलिस मे। उसके पहले ही मैं अपने हाथो खुद अपने प्राण ले लूंगा।

पारुल कहती, 'और मैं ? मेरे विषय मे क्या तुम कुछ भी नही सोचोगे ? अगर तुम्हे कुछ हो गया, तो फिर मै क्या करूँगी ? फिर मै अकेली कहाँ जाऊँगी ? कौन मेरी सुधि लेगा ?'

अलकेश जवाब देता, 'मै तुमसे कह रहा हूँ न, तुम्हे घबराने की कोई जरूरत नही। मैं इतनी आसानी से टलने वाला नही हूँ। मुझे पकड ही कौन सकेगा ? मैं यहाँ हो सकता हूँ, यह कोई स्वप्न मे भी नही सोच सकता। पुलिस यही सोच रही है कि निश्चय ही मै दिल्ली या बम्बई मे कही छिपा हुआ हूँ।'

उसके बाद कुछ रुककर उसने कहा, 'किन्तु मेरे कारण तुम्हे भी काफी कष्ट का सामना करना पड रहा है।'

'क्यो, इसमे कष्ट की क्या बात है ?'

'वाह, कष्ट कैसे नही है ? मैं घर मे पड़ा रहता हूँ और तुम्हे बाजार जाकर सौदा लाना पड़ता है।'

कभी-कभी बातचीत के दौरान दरवाजे की कुडी बज उठती।

'अरे, वे सब आये है। तुम तुरत छिप जाओ। कुछ और ही तरीके से दरवाजा खटखटा रहा है कोई। मै जाकर देखती हूँ कि दरवाजे पर कौन है ..।'

अलकेश बिछौने से उठकर तख्तपोश के नीचे से जाकर एक आलमारी को ओट मे छिप गया।

पारुल ने सदर दरवाजे के पास पहुँचकर भीतर से ही पूछा, 'कौन

है ?'

'मै।'

'मै ? ...आपका नाम क्या है आखिर ?'

'मैं निखिल हूँ। दरवाज़ा खोलो।'

पारुल की जान मे जान आयी। दरवाज़ा खोलकर उसने कहा, 'तुम से मैंने कह रखा है न कि तीन बार दरवाज़े की कुडी बजाओगे, तो मै समझ जाऊँगी कि निखिल-दा या काली-दा आया है। मैं तो घबरा गयी थी। आओ, दरवाज़ा ठीक से बन्द कर लो।'

निखिल की आवाज़ सुनते ही अलकेश सामने आ गया। कमरे से बाहर आकर बाहर चबूतरे पर खड़े निखिल को उसने देखा। उसने निखिल से पूछा, 'क्यो रे, तुम्हे बताया था न कि तीन बार दरवाजे की कुडी बजाओगे, ताकि हम समझ जाये कि या तो तुम आये हो या काली। इस तरह की गलती क्यो करते हो ?'

निखिल ने कहा, 'लेकिन मैंने तो तीन बार ही कुडी बजायी थी।'

अलकेश बोला, 'दुर्..., लगता है कि तुम जोड़-घटाना भी भूल गये हो।...तो क्या यह कहना चाहते हो कि पारुल और मैंने—दोनो ने ही ग़लत सुना है ? छोडो। बतलाओ, ख़बर क्या है ? रुपये लाये हो ?'

'हाँ।'

'कितने रुपये जुटाये ?'

'दो सौ रुपये।'...यह कहकर निखिल ने अलकेश के हाथ मे रुपये रख दिये।

अलकेश ने कमीज की जेब मे रुपये रखते हुए पूछा, 'रुपये किसने दिये है ?'

'बैरिस्टर शरत बोस ने।'

'यह क्या ? एल्गिन रोड वाले शरत बोस ? सुभाषचन्द्र बोस के बडे भाई ? उन्हे तुम पहचानते हो क्या ?'

निखिल ने कहा, 'ज्योतिष-दा ने उनका ठिकाना बतलाया था। उन्होने कहा था—तुम उनके पास जाओ, मेरे नाम लेते हुए आग्रह करना, तुम्हे रुपये ज़रूर मिलेंगे। वैसा आदमी मिलना मुश्किल है। वही एक ऐसे

व्यक्ति है, जो अब भी हमारे जैसे क्रातिकारियो के लिए रुपयो की व्यवस्था करते है। देश मे उनकी बराबरी का और कोई आदमी नही।'

अलकेश उसकी बातो को सुनकर कुछ निश्चिन्त हुआ।

उसके बाद उसने कहा, 'क्या तुमने उनके सामने मेरे नाम का भी ज़िक्र किया था ?'

'हाँ। नाम सुनते ही उन्होने पूछा था—वही फरीदपुर ट्रेन की डकैती काड का आसामी ? खूब नाम सुना है। उसके जैसे लडको की ही ज़रूरत है देश को। उसे बता देना कि भविष्य में अगर केस-वेस हो तो उसके लिए मै तैयार हूँ।'

अलकेश ने जेब से रुपये निकालकर पारुल के हाथ मे दिये। उसने कहा, 'ये रुपये तुम अपने पास रखो। दो दिनो से कुछ भी खाने को मिला नही, अब अपनी इच्छा के अनुसार भरपेट खाओ, कोई तुम्हे रोकने वाला नही।'

पारुल बोली, 'मैने क्या अपने लिए कुछ कहा था ? मुझे तो तुम्हारी चिन्ता थी। भई निखिल-दा, यह आदमी कैसा अद्‌भुत है ! काश, तुम सब यह जान पाते ! इस आदमी के साथ एक घर मे महीने-भर तक रहकर मैं देख चुकी हूँ कि उसके लिए जैसे भूख-प्यास कुछ है ही नही। या तो वह तुम लोगो की बाते करता रहेगा, या फिर देश की। और जो मै एक जीती-जागती लडकी इसी घर मे मौजूद हूँ, यह बात का मानो अलकेश को खयाल ही नही रहता।'

'मुझे तुम क्या समझा रही हो, पारुल ? मुझे सब मालूम है।'

पारुल ने कहा, 'तुम लोग भला कितना जानते हो, निखिल-दा ? यदि मेरी जैसी नजर तुम लोगो की होती, तब जान पाते। जान पाते तुम लोग कि अलकेश कैसे खुले दिल का आदमी है। दोस्तो के लिए जान तक...।'

अलकेश ने पारुल को रोकते हुए कहा, 'रुको भी, पारुल ! अपने ही कानो क्या अपनी तारीफ सुनी जाती है कही ! और फिर निखिल, मैं देश के लिए कर ही क्या पाया हूँ ? क्या खुदीराम की तरह मैं प्राणोत्सर्ग कर सका हूँ ? भला कितने अगरेज़ो को मैं अपनी गोलियो का शिकार बना पाया हूँ, बोलो तो ? एक को भी नही। और फिर बटुकेश्वर दत्त, चन्द्र-

शेखर आजाद, प्रफुल्ल चाकी, यतीन दास और सुभाषचन्द्र बोस जैसे लोगो ने क्या नही किया है ? उनकी तुलना मे तो मैं कुछ भी नही ! उनके सामने मैं एक चीटी हूँ, सिर्फ एक चीटी !'

उसके बाद कुछ देर रुककर उसने फिर कहा, 'जानते हो, उस दिन पारुल से मै यही कह रहा था कि मुझे और अब इस तरह चोरो की तरह छिपकर रहना बिलकुल पसन्द नही । सच ही तो ! पुलिस के डर से मैं एक सामान्य लडकी के आँचल की ओट मे सिमटकर बचा हुआ हूँ; इससे बेहतर तो यही था कि मैं मर जाता ।'

पारुल ने कहा, 'अच्छा निखिल-दा, तुम्ही बतलाओ । सब-कुछ जानते-बूझते इस आदमी को बाहर कैसे जाने दिया जाये ? जब इसके विरुद्ध गिरफ्तारी का परवाना भी निकल चुका है, तो फिर इसे घर से बाहर निकलने देना कौन-सी अकलमन्दी की बात है ?'

निखिल ने कहा, 'नही, नही, पारुल ! तुमने ठीक ही किया है, अलकेश बिलकुल भी बाहर न निकलने पाये ! बाहर तुम्हे क्या काम है, मुझे बतलाओ । मैं कर दूँगा सारे काम ।'

अलकेश ने हँसते-हँसते कहा, 'अरे निखिल, पारुल कोई अबोध बच्ची है क्या ? पारुल जब भी कुछ खरीदारी करने के लिए बाजार जाती है, वह सदर दरवाजे पर ताला लगाकर जाती है ।'

'क्यो ?'

पारुल ने कहा, 'तुम क्या कह रहे हो, निखिल-दा ! भला इस आदमी का कोई विश्वास है ? क्या जाने कब बगैर मुझे बतलाये वह भाग निकले ! फिर तो तुम लोग सब दोष मेरे मत्थे मढोगे । कहोगे कि अलकेश-दा को तनिक सभालकर भी रख न सकी ।'

अलकेश ने कहा, 'मै यदि भाग ही जाऊँ तो क्या तुम सोचती हो कि मुझे रोक लोगी ? इतनी बडी अगरेज सरकार के कारागार ही जब मुझे पकडकर नही रख सके—कितनी ही बार मै जेल से भाग निकला—तो फिर उनकी तुलना मे तुम हो ही क्या ! तुम एक मामूली लडकी के सिवाय तो और कुछ नही हो.. ।'

पारुल ने कहा, 'जितना मन चाहे, तुम मुझे गालियाँ देते जाओ ।

लेकिन मैं यह कहे देती हूँ कि किसी भी तरह मुझे तुम्हारे ऊपर गुस्सा आ ही नही सकता ।'

निखिल की ओर देखते हुए अलकेश ने कहा, 'जानते हो निखिल, पारुल एक विचित्र लडकी है । उसे इतनी खरी-खोटी सुनाता हूँ, उसका इतना अपमान करता हूँ, गुस्से मे उसे न जाने क्या-क्या बक जाता हूँ; फिर भी वह सिर्फ चुप्पी साधे रहती है । विरोध के रूप मे मुझसे कभी एक शब्द भी नही कहती । वह अगर 'लडका' होती तो अकेले ही देश को स्वाधीन कर देती ! ऐसी है उसकी सहनशीलता ।'

पारुल बोल उठी, 'रहने भी दो । मेरे साथ इतनी दिल्लगी करने की जरूरत नही । मैं तो एक मामूली लडकी हूँ न ! मुझे अपने पास पाकर अगर इतना अपमान नही ही करते तो क्या बिगड जाता ? एक मुँह मे दो तरह की बाते । एक बार तो कहोगे 'मामूली लडकी' और दूसरी बार सीधे आसमान पर चढा दोगे !'

'तुम्हारे साथ मैं दिल्लगी कर रहा हूँ ? क्या कह रही हो तुम ? इतने दिनो से मेरे साथ हो, फिर भी यह समझ नही पाती हो कि कौन-सी बात मेरे मुँह की है और कौन-सी बात मेरे मन की !'

पारुल ने कहा, 'तुम्हे समझ पाने के लिए इस धरा-धाम पर एक बार फिर से जन्म लेना होगा । मैं आज तक यह समझ ही नही पायी कि तुम क्या चाहते हो अथवा क्या मिलने पर तुम्हे खुशी होती है ।'

अलकेश ने निखिल की ओर लक्ष्य करते हुए कहा, 'देख तो लिया, निखिल ? मेरे सम्बन्ध मे तुम लोग जो कुछ कहते हो, पारुल भी वैसा ही कह रही है । अरे, मेरे माँ-बाप, भाई-बहन भी मुझ पर ही यही दोष लगाया करते थे । अच्छा, इस दुनिया मे सभी मुझे गलत क्यो समझते हैं, बोलो तो ? क्या इसलिए कि मैं स्पष्टता के साथ सच्ची बाते कहने का आदी हूँ ? क्यो, यही तो ?'

हठात बाहर फिर खट्-खट की आवाज होने लगी । सभी सतर्क हो गये ।

निखिल ने सकेत से अलकेश को छिपने के लिए कहा और वह खुद सदर दरवाजे के पास चला आया । उसने पूछा, 'कौन ?'

'एक बार दरवाज़ा खोलिये तो !'

'कहिये, क्या काम है ?'

बाहर से जवाब मिला, 'एक बार दरवाज़ा खोलिये तो। सभी कुछ बतलाता हूँ।'

दरवाजा खोलने पर निखिल ने देखा कि दो अनजान आदमी खडे थे।

निखिल ने पूछा, 'कहिये, क्या काम है ?'

'अच्छा, यह क्या हरिचरण गांगुली का मकान है ?'

'हाँ।'

'वह कहाँ हैं ?'

निखिल ने कहा, 'उनका स्वर्गवास हुए तो काफी दिन बीत गये। लेकिन आप यह सब क्यो पूछ रहे है ?'

दोनो आदमियो ने हठात पूछा, 'हम सब अलकेश चक्रवर्ती को ढूँढने आये है। क्या वह इस घर मे है ?'

निखिल मानो आकाश से गिरा। उसने पूछा, 'अलकेश चक्रवर्ती ? कौन है वह ?'

उन दोनो ने कहा, 'वह माहिम हलदर स्ट्रीट मे रहते है। उनके घर पर हम लोग गये थे। वहाँ हमे खबर मिली कि वह इस घर मे है।'

निखिल ने कहा, 'आप लोगो को गलतफहमी हुई है। यहाँ अलकेश चक्रवर्ती नाम का कोई आदमी आया ही नही।'

'आपका क्या नाम है ?'

'मेरा नाम है निखिल। निखिल दास।'

'तो फिर हरिचरण बाबू के परिवार का कोई आदमी क्या यहाँ मौजूद है ?'

'उनका अपना अगर कोई है, तो वह है पारुल—उनकी लडकी। और कोई नही। उसके साथ यदि बात करनी हो, तो मै उसे बुला देता हूँ।'

उन दोनो ने कहा, 'नही, इसकी जरूरत नही। अच्छा, हम लोग चलते है। नमस्कार ! आपको थोडी तकलीफ दी, कुछ खयाल मत कीजियेगा।'

यह कहकर वे चले गये। निखिल अच्छी तरह दरवाजे की कुडी चढा-

कर भीतर कमरे मे चला आया।

पारुल ने पूछा, 'कौन थे ? वे सब अलकेश-दा को खोजने आये थे क्या ?'

अलकेश तब तक निकलकर सामने चला आया। उसने कहा, 'और किसे ढूँढने आयेगे ? दस हज़ार रुपये मुझे पकडने का इनाम है। इस लालच से बच पाना क्या आसान है ?'

निखिल ने कहा, 'तुम्हे अब यहाँ से बाहर निकलना नहीं चाहिए, अलकेश ! देख तो लिया, यहाँ तक धावा बोल गये है।'

पारुल बोली, 'तुम ज़रा समझा जाओ, निखिल-दा ! मेरी बात बिलकुल ही नही सुनेगे वह । इसलिए तो मैं भी हमेशा चिन्तित रहती हूँ। बाज़ार जाने पर जितनी जल्दी हो सके, लौट आया करती हूँ।'

निखिल ने कहा, 'तो मै अब चलता हूँ। बाद मे फिर आऊँगा। यदि कोई खबर होगी, तो आकर बता जाऊँगा। तुम थोडा सावधान रहना। और पारुल, तुम भी जिस-किसी के लिए दरवाज़ा मत खोल देना।'

पारुल ने कहा, 'और तुम्हे भी फिर बता देती हूँ कि आने के समय तीन बार दरवाज़े की कुडी बजाना। समझे ? याद तो रहेगा ?'

'हाँ।'

यह कहकर निखिल चला गया और उसके जाते ही पारुल ने सदर दरवाज़ा बन्द करके भीतर से कुडी लगा ली।

मिस्टर जॉन सिमसन बहुत दिनो से सोच रहे थे...नही, अब और नही। इतने बडे देश को अब सिर्फ पुलिस के बल पर वश मे नही रखा जा सकता। भेदिये तरह-तरह की खबरे लाते और उसके लिए काफी रुपये भी पाते —किन्तु वह तो होता रुपयो के लालच मे। उन खबरो मे भी आधी से अधिक होती झूठी खबरे।

इसी बीच एक दिन उन्होने पढा कि कैबिनेट-मिशन इडिया मे आ रहा है।

डगलस से वह बोले, 'मिस्टर डगलस, इस बार शायद हमे यह देश छोडना ही पड़ेगा।'

डगलस कुछ दूसरी ही किस्म के आदमी थे। उन्होने पूछा, 'तुम्हे डर लग रहा है क्या ?'

सिमसन ने कहा, 'मैं क्यो डरूँगा ? डर रही है ब्रिटेन की सरकार। अन्यथा जापानियो द्वारा वर्मा के जीते जाने के चार दिन वाद ही कैबिनेट-मिशन को यहाँ क्यो भेजा जा रहा है ? यह आसार तो कोई अच्छा नही है।'

मिस्टर डगलस ऐसी सब बातो को मानने वाले आदमी नही हैं।

वह कहते, 'देखो सिमसन, तुम बहुत ही भावुक प्रवृत्ति के आदमी हो। तुम क्या सोचते हो कि हमारी सरकार इतनी कमज़ोर है कि उन नेटिवो के बम और गोलियो के डर से उन्हे स्वतत्रता दे देगी ? वही बात यदि होती तो सिपाही-विद्रोह के समय ही दे देती। सिपाही-विद्रोह किसे कहते है, यह तो जानते हो न ?'

मिस्टर सिमसन का जवाब होता, 'मैं ऑक्सफर्ड का ग्रेजुएट हूँ। यह बात आपको पता होगी।'

मिस्टर सिमसन सोचते कि नेटिवो की गोलियो और बमो के कारण न सही, डगलस जैसे अफसरो के कारण ब्रिटेन की सरकार को एक दिन यह देश छोडकर चला जाना पडेगा। ये सब ही ब्रिटेन की सरकार के इस देश से उखड जाने का मुख्य कारण बनेंगे !

किन्तु किसी के मुँह के सामने सिमसन यह बात नही कह पाते। जिससे यह सब कहा जा सके, वैसा आदमी ही नही मिलता। जो भी अगरेज यहाँ नौकरी करने के लिए आते, वे किसी हिन्दुस्तानी के साथ मेल-जोल नही रखते। जो उनसे मेल-जोल रखता, वे न तो अंगरेज होते और न ही हिन्दुस्तानी। भारतीय भी प्राय. उनसे मेल-जोल नही रखते। जो रखते थे, वे सब थे खिताब-विभूषित 'राय साहब' या 'राय बहादुर' !

कोई भी आदमी जब मिस्टर सिमसन के साथ मुलाकात करने के लिए आता, वह उससे पूछते, 'तुम क्यो आये हो ? अपने जाति-भाइयो के खिलाफ खबर देते समय क्या तुम्हारा विवेक तुम्हे डाँटता-फटकारता नही ?'

'नही।'

'आखिर क्यो ?'

'सर, वे सब बदमाश है। सर, उन सब को आप लोग फाँसी दे डालिये ?'

सिमसन साहब पूछा करते, 'उनको फाँसी देने पर तुम्हे क्या लाभ होगा ? उनके ज़िन्दा रहने पर क्या तुम्हारा कुछ नुकसान हो रहा है ?'

'हाँ साहब, बेशक नुकसान हो रहा है।'

'तो क्या तुम नही चाहते कि भारत आज़ाद हो ?'

'नही सर, हम लोग नही चाहते। आप लोग ही युग-युगान्तर तक यहाँ राज चलाये। सर, आप लोग यह देश छोडकर चले मत जाइयेगा। आप सब अगर इस देश से चले गये तो हमारा तो सर्वनाश हो जायेगा! हम लोगो के बीच आपस मे झगडा-फिसाद शुरू हो जायेगा। हम मर जायेगे, सर! हम रुपया-पैसा भी गँवायेगे और जान भी...।'

'तो क्या तुम लोग गाधी का समर्थन नही करते ?'

'नही सर, हम लोग गाधी के विरुद्ध है। हम सब आपके पक्ष मे है।'

सिमसन साहब मन-ही-मन ऐसे लोगो से घृणा करते। ऐसे ही लोग थे देश के असल शत्रु! इंडिया के असल शत्रु ऐसे लोग ही थे, अगरेज़ नही। टैक्सी मे बैठे-बैठे ये सारी बाते मिस्टर सिमसन को याद आ रही थी। कितनी पुरानी बाते! आखिरकार आज इडिया आजाद हो गया है। चारो ओर दृष्टिपात करते चले जा रहे थे मिस्टर सिमसन। कलकत्ता प्राय वैसा ही है—वही चौरगी, वही मैदान। मैदान मे उन दिनो फुटबॉल खेला जाता था! और पश्चिम मे था फोर्ट विलियम। और बायी ओर बडी-बडी गगनचुम्बी इमारते मस्तक ऊँचा किये खडी थी।

टैक्सी चल पडी। सचमुच इन तीस वर्षों मे कुछ भी नही बदला। सब-कुछ प्राय. वैसा ही है। ट्रैफिक-सिगनल के लाल होने के कारण पार्क-स्ट्रीट के मोड पर आकर टैक्सी रुक गयी। पार्क-स्ट्रीट के पास की गली—इलशियम रो—मे ही उनका ऑफिस हुआ करता था। हठात उनकी नज़र पडी एक मूर्ति पर।

अरे वह मूर्ति—वह पुरानी प्रतिमा तो नही है। वही, जनरल

आउट्राम का स्टैच्यू ? उस जगह पर अब गाधी की मूर्ति है ! गांधी—सब जिन्हे महात्मा गाधी कहा करते थे ! गुड, वेरी गुड ! उन्होने इसके विषय मे कभी अखबारो मे पढा था; यह उन्हे याद न रहा था—अब याद आ गया ।

टैक्सी-ड्राइवर ने पूछा, 'कहाँ जाना है, सर ?'

सिमसन साहब ने कहा, 'साउथ की तरफ चलो ।'

हाँ, साउथ । साउथ कैलकटा ! कलकत्ता के चप्पे-चप्पे से वह परिचित है । एक समय कलकत्ता की प्रत्येक लेन और बाइ-लेन का नाम उनकी जुबान पर रहता था । अब भी धुँधली-सी याद बाकी है । हाजरा रोड के चौराहे पर पहुँचकर पश्चिम की तरफ जाना होगा । उसके बाद है एक फायर-ब्रिगेड की गुमटी । उस गुमटी को छोडकर और थोडा आगे जाना होगा । तभी बायी ओर एक गली मिलेगी । उस गली का नाम है यदु भट्टाचार्य लेन ।

खबर तारक ने ही दी थी । वही तारक सेन ! अहा, तारक उन्हे बडा विचित्र आदमी लगा था । मिस्टर सिमसन थे उस समय जख्म-खाये आदमी । जेनी के साथ तलाक होते ही मानो उनका सब-कुछ चला गया था । मानो उनका मन ही बुझ गया हो । तब तो उन्हे जिन्दगी निरर्थक लगने लगी थी । उस समय तक यूरोप मे युद्ध शुरू नही हुआ था । अगर युद्ध शुरू हो जाता तो सम्भवतः वह भी अपना नाम फौज मे लिखा लेते । तब और कोई दूसरी राह न पाकर वह चले आये इडिया । इडिया के पूर्वी हिस्से मे—यही, इसी कलकत्ता मे ।

उसके बाद ही युद्ध छिड गया । युद्ध शुरू होने के साथ-ही-साथ कलकत्ता से लोग भाग निकलने लगे । रातो-रात शहर सूना-सा जान पडने लगा । उन्हे याद है कि उस समय ब्लैक-आउट के दौरान वह रात-भर घूमते रहते । कलकत्ता की वेश्याओ की उस समय कैसी दुर्दशा थी ! एक ओर तो उन्हे कोई आमदनी नही रही थी और दूसरी ओर था पुलिस का अत्याचार ! उसके बाद शहर पर जापानियो ने बम गिराये । अकाल पड़ा । रास्तो पर हजारो लाशे सडती रही, दुर्गन्ध के कारण राह निकलना तक दूभर हो गया ।

यह सब-कुछ तो इतिहास मे लिखा हुआ है। इगलैड लौटकर यह सारा इतिहास वह पढ चुके है। एक समय जिस देश की नस-नस से जुडे हुए थे, इतिहास का वह पन्ना पढकर उन्हे अच्छा ही लगा—किन्तु वह इतिहास तो झूठी बातो से भरा हुआ है।

मिस्टर सिमसन के दोस्त पूछा करते, 'तुम तो इडिया मे थे जॉन, क्या अखबार जो कुछ छाप रहे है यह सच है ?'

सिमसन जवाब देते, 'कुछ-कुछ सच भी है। फिर भी सभी कुछ सच ही हो, ऐसी बात नही।'

'इसका मतलब ? इडिया के मारवाडियो ने ही तो अकाल को न्यौता दिया ! वे ही तो अकाल का कारण बने !'

सिमसन कहते, 'नही। टेक इट फ्रॉम मी, अकाल के लिए सब इडियन जिम्मेवार नही है। अकाल ले आये हमी अगरेज लोग।'

'यह क्या ?'

'हाँ, तुम सुनो। मैं उस समय इडिया के सबसे बडे शहर मे था। दैट इज कैलकटा। कैलकटा-पुलिस का मै डिप्टी-कमिश्नर था। आइ नो एवरीथिंग। युद्ध के ईस्टर्न कमाड का हेड-क्वार्टर भी था कलकत्ता मे। जापानी आकर यदि कलकत्ता पर दखल कर लेते तो ? इसीलिए हम लोगो ने सारा चावल-दाल-तेल इकट्ठा करके मिलिटरी के गोदामो मे जमा कर रखा था और उसी का नतीजा था—बीसवी सदी का सबसे बडा अकाल—द ग्रेटेस्ट फैमिन !'

'किन्तु हम लोगो ने तो कुछ और ही पढ-सुन रखा है।'

'तुम लोगो ने गलत सुना है। हमी लोगो ने झूठा प्रचार किया था, इसी से तुम लोग उन बातो पर विश्वास करते हो। वह सब था हम लोगो का ब्लैक प्रोपेगैडा।'

'दरअसल सारा इतिहास ही मिथ्या है। जर्मनी का गोयबल्स जो कुछ कहता, जर्मन लोग उसी का विश्वास करते। उसी तरह हम लोगो के अखबारो मे जो कुछ छपता रहा है, तुम लोगो ने उसी पर विश्वास किया।

लेकिन एक दिन तुम लोग देखोगे कि जब इडिया आज़ाद होगा, तब इसका प्रतिशोध लेकर ही रहेगा। इस समय हमने जिस तरह आयात-निर्यात के करो की घेराबन्दी मे इडियस को मांचेस्टर के कपडे खरीदने के लिए मजबूर किया हुआ है, उस समय तुम लोग देखोगे कि इंडिया भी तुम लोगो को इडिया-मेड कपडे खरीदने के लिए बाध्य कर देगा।'

सब लोग सिमसन की बाते गौर से सुनते।

सिमसन कहते, 'मैं जो कुछ तुम लोगो से कह रहा हूँ, वे इतिहास मे पढी हुई बाते नहीं है। ये सब बाते इतिहास मे नही हैं। किसी दिन ये बाते इतिहास मे स्थान पायेंगी भी नही। अगर कभी इडिया का कोई आदमी इतिहास लिखे, तब भले ही ये बाते उसमे शामिल हो जाये।'

टैक्सी चौरगी रोड पर सरपट भागी जा रही थी। एकाएक न जाने मिस्टर सिमसन के मन मे क्या आया! उन्होने टैक्सी-ड्राइवर से बँगला मे पूछा, 'यह टैक्सी तुम्हारी अपनी हे या किसी महाजन की?'

गोरी चमडी वाले एक साहब के मुँह से स्पष्ट बँगला भाषा सुनकर टैक्सी-ड्राइवर चकित रह गया।

उसने पूछा, 'सर, आपने इतनी बढिया बँगला कहाँ से सीखी? आप क्या हमेशा से कलकत्ता मे रहते है?'

सिमसन ने कहा, 'मैं कल रात ही कलकत्ता आया हूँ।'

ड्राइवर ने पूछा, 'तो फिर इतनी साफ-सुथरी बँगला आपने कहाँ से सीखी? साहब लोगो के मुँह से ऐसी बँगला तो मैंने कभी नही सुनी।'

सिमसन ने जवाब दिया, 'बहुत साल पहले लडाई के ज़माने मे मैं कलकत्ता मे नौकरी करता था। मैं तभी बँगला सीख गया था। लेकिन फिर भी, वह कलकत्ता अब रहा नही। अब देख रहा हूँ कि काफी कुछ बदल गया है।'

ड्राइवर ने कहा, 'नही सर, कुछ ख़ास बदला नही है। हाँ, चीजो के दाम ज़रूर कुछ बढ गये है, बस यही। आप लोगो के ज़माने मे चीजे सस्ती थी। इस समय हम बडी तकलीफ मे है। चीज़ो की कीमतो मे मानो आग लग गयी है।'

'दिन-भर मे कितना कमा लेते हो ?'

ड्राइवर ने कहा, 'वही, कर्ज चुकती करने के बाद चालीस-पचास रुपये बचते है।'

'कर्ज ? कैसा कर्ज ? किससे लिया है ?'

ड्राइवर ने कहा, 'बैंक मे कर्ज लिया है मैने। यह गाडी खरीदने के लिए बैंक ने कर्ज दिया है। महीने-महीने किस्तो मे इसे चुकाना पडता है। और फिर दो वर्ष मे कर्ज का भुगतान हो जाने के बाद यह गाडी मेरी अपनी हो जायेगी। उस समय मेरी आमदनी भी बढ जायेगी।'

'क्या यहाँ अब पहले की तरह जुलूस नही निकलते ? वही गली-रास्ता-कूचा बन्द कर देने वाले जुलूस !'

'नही सर, वे जुलूस अब नही निकलते !'

किन्तु लन्दन मे उन्होने लोगो के मुँह से तरह-तरह की बाते सुनी थीं। उन लोगो ने कहा था—कलकत्ता की प्रत्येक दीवार पर कोलतार से नारे लिखे रहते है। लिखा रहता है—चीन का चेयरमैन हमारा चेयर-मैन ! कहाँ, किसी भी दीवार पर तो कुछ लिखा हुआ नही है। सभी झूठ था। ऑल रबिश। हाँ, तारक मेन से बातचीत होने पर अवश्य ही सच्ची बातो की जानकारी मिलेगी।

'अब किधर चलूँ, साहब ? हाजरा रोड का चौराहा यह आ गया।'

'चलिये, दाहिनी तरफ चलिये।'

मिस्टर सिमसन को वह बगाली ड्राइवर बडा भला लगा। कुछ ही मिनटो मे वह उसी महिला से मुलाकात करेगे। दैट ग्रेट लेडी ! तारक ने पत्र लिखकर उसके सम्बन्ध मे उन्हे बतलाया था। आखिरकार तारक ही उसके साथ विवाह करेगा, यह अवश्य ही उस समय वह जान नही पाये थे।

मिस्टर सिमसन को अच्छी तरह याद है कि जिस दिन उन्होने नौकरी से इस्तीफा दिया था, उस दिन कुछ देर तक डगलस उनकी ओर ठगे-से देखते रह गये थे।

मिस्टर डगलस ने पूछा था, 'यह क्या ?'

सिमसन ने शान्त स्वर मे कहा था, 'मै नौकरी छोडकर चला जाना चाहता हूँ। यह रहा मेरा रेजिग्नेशन-लेटर ..।'

'व्हॅट ? क्या बक रहे हो !'

मिस्टर डगलस बौखला उठे थे। कुछ पल तक वे सिमसन का मुह देखते रहे। युद्ध की वह डॉवाडोल स्थिति, जब कि प्रत्येक अगरेज़ अफसर का कर्तव्य ही था स्थिर भाव से काम किये जाना, जब कि चारो तरफ से ब्रिटेन की सरकार की नाक मे दम आ गया था—उस वक्त सिमसन नौकरी छोडकर चला जाना चाहता है भला !

'आर यू मैड—तुम क्या पागल हो गये, सिमसन ! ऐसे समय मे भला कोई नौकरी छोडता है ? तुम्हारा आखिर मतलब क्या है ? क्या तुम चाहते हो कि गवर्नमेट और भी परेशान हो ?'

सिमसन ने स्पष्ट शब्दो मे सिर्फ यही कहा था, 'नही।'

'तो फिर क्या यह समझा जाये कि नौकरी मे अब तुम्हारी दिलचस्पी नही रही ?'

सिमसन ने फिर पहले-से ही स्पष्ट शब्दो मे उत्तर दिया था, 'नही, यह बात भी नही।'

'तो फिर ? तुम क्या बहुत अकेलापन महसूस कर रहे हो ? आर यू फीलिंग लोनली ? तुम्हारी जेनी ने क्या तुम्हे देश लौट आने के लिए खत लिखा है ?'

मिस्टर सिमसन ने इस बार भी कहा था, 'नही।'

'तो फिर ? क्या यहाँ की आबोहवा तुम्हारे अनुकूल नही ? ठडे देश मे इस ट्रॉपिकल कट्री मे आकर रहना पहले-पहल बहुतो को माफिक नही आता। शुरू मे शरीर भी ठीक नही रहता । . यदि तुम सोचते हो कि तुम्हारा स्वास्थ्य खराब हो गया है, तो फिर कुछ दिनो के लिए छुट्टी ले लो। गो टु हिल्स, गो टु दार्जिलिग। दार्जिलिग मे कुछ दिन बिता आओ। मैं तुम्हारी छुट्टी मजूर कर दूंगा।'

सिमसन ने कहा, 'नहीं, मेरा स्वास्थ्य बढिया ही है। मै सिर्फ नौकरी छोड देना चाहता हूँ।'

डगलस ने कहा था, 'लेकिन क्यो ? मै तो तुम्हारे नौकरी छोडकर

चले जाने का कोई भी युक्तिसगत कारण समझ नही पा रहा हूँ । तुम खुलासा बतलाओ, आखिर असल बात क्या है ?'

मिस्टर सिमसन ने कहा था, 'मै असत्यवादी हूँ। मैं झूठा हूँ—लायर । मैंने गवर्नमेट को ठगा है । इसके बाद इस नौकरी मे अब बरकरार रहने का मुझे कोई हक नही ।'

मिस्टर डगलस अपने कौतूहल को दवा नही पाये । कहने लगे, 'तुम जरा बैठो तो, सिमसन ! आराम से बैठो जरा । सुस्ता लो । तुम क्या कह रहे हो, शायद यह तुम खुद भी नही समझ सके हो । मुझे लगता है कि तुम्हारा दिमाग ही फिर गया है । तुम्हे आराम की सख्त जरूरत है । मुझे लगता है कि तुम अब तक अपनी स्त्री को भुला नही पाये हो । मैंने तो तुम्हे पहले भी कहा था कि तुम यहाँ के किसी क्लब के मेम्बर बन जाओ । यहाँ किसी लडकी से फिर विवाह करो, घर बसाओ । यह न कर तुम नौकरी ही छोडने पर तुल गये हो, क्यो ?'

सिमसन ने कहा, 'नौकरी छोड देना चाहता हूँ सिर्फ इसीलिए कि मैने असत्य व्यवहार किया है !'

'असत्य व्यवहार ? क्या व्यवहार किया है तुमने ?'

सिमसन ने कहा, 'मैंने गवर्नमेट सर्वेट होकर भी गवर्नमेट के खिलाफ काम किया है ।'

'यह क्या ?'

'हाँ, मैंने झूठी बाते कही है ।'

डगलस फिर भी समझ नही पाया । उसने पूछा, 'तुमने झूठी बाते कही है ? कौन-सी झूठी बातें कही है ? कब और कहाँ ?'

सिमसन ने कहा, 'देखो डगलस, तुम लोगो ने मुझे हमेशा यही सिखाया है कि नेटिव झूठे होते है, असभ्य और अशिष्ट होते है ! यहाँ आने से पहले जब मैं देश मे था, उस समय भी अखबारो मे जो कुछ पढा करता था, सभी कुछ नेटिवो के विरुद्ध होता था । मैं समझता कि वे सब गुडे-बदमाश है, वे मन्दिर की मूर्ति के सामने देवता को प्रसन्न करने के लिए अपने पुत्र की बलि भी दे देते है, या कभी उसे नदी मे बहा देते है ! यही विश्वास अपने हृदय मे पालकर मैं इतने दिनो से नौकरी कर रहा

था। किन्तु हठात मेरी आँखे खुली। मैंने पाया कि इडिया मे मनुष्य भी है। इस इडिया की लडकियाँ भी प्यार करना जानती है। सच्चा प्यार क्या होता है, यह मेरी पत्नी नही जानती थी—सम्भवतः हम लोगो के देश की कोई भी लडकी नही जानती। तुमने भी तो विवाह किया था। तुम्हारी पहली पत्नी ने तुम्हे तलाक क्यो दिया था ? मेरी पत्नी मुझे छोड-कर क्यो चली गयी ? मैंने ऐसा कौन-सा भारी अपराध किया था कि मेरी पत्नी मेरे साथ इतनी ज्यादती करके दूर हो गयी ? किन्तु इस बार इसी कलकत्ता मे मैने एक ऐसी लडकी को देखा है, जो जानती है कि सच्चा प्यार किसे कहते है ! रीयल लव ! !'

डगलस ने पूछा, 'वह लडकी कौन है ? देखा है उसे तुमने ?'

सिमसन ने जवाब दिया, 'यही, कालीघाट के यदु भट्टाचार्य लेन के एक घर मे।'

डगलस ने कहा, 'यह क्या, अपनी किसी रिपोर्ट मे तो तुमने ऐसी कोई बात लिखी ही नही !'

सिमसन ने कहा, 'मैने रिपोर्ट मे झूठी बाते लिखी है। इसीलिए तो मैं यह नौकरी छोडकर चला जा रहा हूँ। यदु भट्टाचार्य लेन मे जो कुछ घटना हुई, मैने उसे लिखा नही। जो कुछ मैने लिखा है, वह सब झूठ है।'

डगलस ने कहा, 'आखिर यदु भट्टाचार्य लेन मे क्या घटना घटी थी, यह तो मुझे बतलाओ।'

सिमसन ने कहा, 'वह सब-कुछ बयान करने के लिए मुझे मजबूर मत करो, डगलस ! मैं जान भले ही दे दूँगा, लेकिन इस घटना के सम्बन्ध मे कुछ बताऊँगा नही। उस घटना को देखने के बाद मेरे मन मे कोई दुख, शोक रहा ही नही। जेनी के लिए मेरे मन मे बडी तकलीफ थी, वह भी अब नही रही। अब मैं सुखी हूँ। नाउ आइ एम हैप्पी। मै बिलकुल शान्त मन से अपने देश लौट सकूँगा। अब मैं जेनी को भी माफ कर सकूँगा।'

'किन्तु असल घटना जानने की मेरी बडी ख्वाहिश है। तुमने ऐसी कौन-सी घटना देख ली, जिससे कि तुम्हे ऐसी मानसिक शान्ति प्राप्त हुई ?'

सिमसन ने कहा, 'नही, यह मैं नही बतला सकता। मै नही चाहता कि किसी भी फाइल मे इस घटना का कोई उल्लेख रहे। मैं नही चाहता कि इतिहास मे यह घटना लिखी जाये। इतिहास यह भी नही जान पायेगा कि यहाँ ऐसा प्रेम भी है। इस घटना को सिर्फ मेरे अन्तर-मानस मे रहने दो—यह मेरे मन की अमूल्य सम्पदा है। मै इसी सम्पदा को साथ लेकर इडिया से विदाई लेना चाहता हूँ।'

इतिहास सिर्फ राजनीति और समाज-नीति के झमेलो मे ही सिर खपाता है। तभी तो इतिहास मे आदमी के सुख-दुख की कहानी नही मिलती। वहाँ मिलती है महात्मा गाधी की कहानी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की कहानी, जवाहरलाल नेहरू की कहानी, अथवा लॉर्ड वेवल और माउटबैटेन की कहानी। राष्ट्र के कर्णधारो के गुणगान से ही इतिहास के पन्ने रँगे होते है। लेकिन अलकेश चक्रवर्ती, तारक सेन, निखिल दास और कालीपद? . इतिहास की नज़र मे वे सब किसी ब्याह के घर की जूठी पत्तलो से अधिक और कुछ भी नही। उनका स्थान है सिर्फ गन्दे कूडे-खाने मे!

और पारुलबालाएँ?

उनकी तो बात ही छोडिये। शरत बाबू जैसे साहित्यिक अगर न होते तो उनके विषय मे कभी कोई जान भी नही पाता। उनकी व्यथा-कथा अनकही रह जाती!

उन दिनो के कलकत्ता के साथ आज के कलकत्ता की तुलना करना सम्भवत निरी विडम्बना ही है। अन्यथा जो पारुल कभी घर से बाहर नही निकली थी, उसे बाज़ार जाते समय चारो तरफ की लोलुप दृष्टियो से अपने-आपको बचाकर चलने मे इस प्रकार अनावृत होने का एहसास क्योकर होता?

सध्या के समय घर के सदर दरवाज़े पर ताला लगाकर वह बाज़ार जाती। और फिर बाज़ार से खरीददारी पूरी कर उसे ताला खोलकर घर

मे प्रवेश करना होता ।

जब तक पारुल घर से बाहर रहती, तब तक अलकेश घर के भीतर एक ओर से दूसरी ओर चलकदमी करता रहता। उसके बाद जब ताला खुलने की आवाज़ आती, तब उसकी जान-मे-जान आती।

पारुल को देखते ही अलकेश कहता, 'क्या हुआ, आ गयी ?'

पारुल कहती, 'क्यो ? तुमने क्या सोच लिया था कि मै लौटकर आऊँगी ही नही ?'

'नही, ऐसी बात नही । मै तो यही सोचता रहता हूँ कि मेरे कारण तुम्हे इतना कष्ट उठाना पड रहा है ।'

पारुल कहती, 'वाह रे, और मेरे लिए जैसे तुमने कोई कष्ट सहा ही नही !'

अलकेश कहता, 'मुझे क्या कष्ट होता ? मैं तो हूँ मर्द-मानुष। कष्ट उठाने के लिए ही तो मर्दों का जन्म होता है ! मेरे साथ तुम क्यो बराबरी करती हो ? मेरे लिए ही तुम्हे बाजार जाना पडता है, खाना बनाना पडता है, बरतन माँजने पडते है, और सारा घर बुहारना पडता है ।'

पारुल कहती, 'तो क्या कष्ट किये बिना ही कन्हैया मिलता है ?'

अलकेश कहता, 'किशन-कन्हैया पृथ्वी पर एक ही था, पारुल ! दूसरा पैदा हो ही नही सकता ।'

पारुल कहती, 'यह तुम्हारी समझ के बाहर है। एक दिन ऐसा आने वाला है, जबकि लोग तुम्हारी पूजा करेगे। अभी तो कोई तुम्हे पहचानता नही है. .।'

अलकेश कहता, 'भला क्या मैं यह चाहता हूँ कि लोग मेरी पूजा करें ? यह सोच कर मै काम नही करता। फिर भी कभी-कभी लगता है कि अगर वह दिन आया तो मुझसे अधिक सुखी और कौन होगा ?'

तभी पारुल को जैसे कुछ याद आया। आँचल की गाँठ खोलकर उसने शाल-पत्रो की एक पुडिया बाहर निकाली। उस पुडिया मे कुछ फूल, सन्देश और थोड़ा-सा सिन्दूर था।

वह अपने बायें हाथ की छोटी अँगुली पर सिन्दूर लेकर अलकेश की तरफ आगे आयी। बोली, 'मैं तो बिलकुल भूल ही गयी थी। यह क्या,

'पीछे क्यो हट रहे हो ? आगे आओ, मेरी तरफ और थोडा-सा...। हॉ, अब ठीक है। अब चुपचाप खडे रहो।'

अलकेश फिर भी कुछ समझ नही पाया।

उसने कहा, 'अरे, यह सब क्या कर रही हो ?'

पारुल बोली, 'तुम डरो मत। तुम्हारी भलाई के लिए ही कर रही हूँ।'

यह कहकर उसने अलकेश के माथे पर सिन्दूर का टीका लगा दिया। उसके बाद शाल-पत्तें के दोने से उसने एक सन्देश निकालकर उसे अलकेश के मुँह की ओर बढाया। उसने कहा, 'ज़रा मुँह खोलना तो...। हॉ, ज़रा जल्दी।'

सन्देश देखकर अलकेश पीछे हटा।

कहने लगा, 'यह सब क्या दे रही हो खाने के लिए ?'

पारुल बोली, 'डरने की कोई बात नही है। मै भला कही तुम्हे जहर खिला दूंगी ? यह ठाकुर का प्रसाद है। इससे तुम्हारा मगल होगा।'

'अचानक तुम यह सब लाने क्यो गयी ?'

पारुल बोली, 'नही, मेरी बात रख लो, अलकेश-दा ! सचमुच इससे तुम्हारा मगल होगा।'

'इससे मेरी क्या भलाई होगी, ज़रा मैं भी तो सुनूं ! प्रसाद खाने पर क्या मै राजा बन जाऊँगा ?'

पारुल ने कहा, 'छि, ठाकुर को लेकर कही ठट्ठा किया जाता है ! पाप लगता है, समझे ?'

अलकेश ने कहा, 'पाप-पुण्य की कहानी अपने पास ही रखो। मगल-कामना की भी मुझे जरूरत नही और न ही राजा बनने की।'

'न सही। हो सकता है कि तुम्हे इसकी जरूरत न हो, लेकिन मुझे तो है।'

अलकेश बोला, 'क्यो ? मेरी जरूरत की बात सोच कर तुम्हे क्या लाभ होगा ?'

पारुल बोली, 'भई, तुम्हारी तरह इतना नफा-नुकसान सोचकर मै काम नही करती। मुझे यह ठीक जँचा, इसीलिए मैने किया।'

अलकेश ने कहा, 'तुम्हारी ये सब बाते झूठी है। तुम्हें बतलाना ही पड़ेगा कि अचानक तुमने काली-मन्दिर मे मेरे नाम की पूजा क्यो की ?'

पारुल उसकी बात का जवाब दिये बगैर अलकेश के बगल से रसोई-घर की तरफ जाने लगी। पारुल बोली, 'छोडो भी, तुम्हारे साथ अब बक-झक करने की सामर्थ्य नही है मुझमे। रसोई का ही काम निपटा लूँ। उसके बाद बाते करूँगी।'

अलकेश तब तक वही गूँगे की भाँति खड़ा रहा।

पारुल पास आकर कहने लगी, 'चलो, तुम भीतर चलो, मैं अभी आती हूँ।'

अलकेश ने कहा, 'नही, पहले मेरी बातो का जवाब दो।'

पारुल बोली, 'देखो, इस तरह जोर-जोर से बातचीत करने पर अगर बाहर से कोई सुन लेगा तो फिर जो कुछ भी मुसीतब होगी, वह मेरी ही। मुहल्ले मे सभी जानते है कि मैं इस घर मे अकेली रहती हूँ। चलो भई चलो, बात मान लो। खाना खाते समय मैं तुम्हे सब-कुछ बतलाऊँगी। तुम्हारी आवाज़ बाहर किसी ने सुन ली तो सब सन्देह करेगे। कहने पर तुम सुनते क्यो नही ? जाओ, भीतर जाओ। मैं अभी आती हूँ ..।'

कहकर पारुल रसोई घर की ओर बढने लगी।

जब अलकेश भोजन करने के लिए बैठा, तब चकित रह जाना पडा। उसने पूछा, 'यह क्या, मैं अकेला ही भोजन करूँगा क्या ? और तुम ? तुम नही खा रही हो क्या ?'

पारुल बोली, 'आज मुझे कुछ नही खाना है।'

अलकेश के आश्चर्य का ठिकाना नही रहा। पारुल क्यो नही खायेगी आखिर ! अलकेश को इसका कोई युक्ति-सगत कारण समझ नही पडा। अब तक तो रात मे वे दोनो एक साथ ही भोजन करने बैठते थे।

अलकेश ने पूछा, 'तुम कुछ भी खाओगी नही ! आखिर क्यो ?'

पारुल ने कहा, 'नही, तुम इस बात का कुछ ख़याल नही करना अपने मन मे। सिर्फ़ आज-भर तुम अकेले भोजन करो। कल से तो फिर मैं

तुम्हारे साथ ही भोजन करूँगी ।'

अलकेश फिर भी कुछ समझ नही पाया। उसने पूछा, 'क्यो ? आज हम दोनो एक साथ भोजन क्यो नही कर सकते ? आज आखिर ऐसा कुछ विशेष क्या हो गया ? देखो, अगर तुम नही खाओगी तो मैं भी अपने मुँह मे एक ग्रास भी नही रखने वाला हूँ ।'

पारुल बोली, 'ओ माँ, क्या कह रहे हो ? राम...राम...! भई, आज-भर की ही तो बात है। आज तुम अकेले ही भोजन करो, कल से तो मै तुम्हारा साथ दूँगी ही ।'

'लेकिन आज एक साथ खाने मे हर्ज क्या है, यह तो बतलाओगी ?'

'तुम जब ज़िद ही कर बैठे, तो फिर सुनो। आज मैं कुछ भी खा नही सकती। आज मेरा व्रत है।'

'व्रत ? कौन-सा व्रत ? किस बात के लिए व्रत ?'

पारुल ने कहा, 'सावित्री व्रत ! अब सुन लिया तो ? लो, अब भोजन शुरू करो ।'

'सावित्री व्रत ? यह व्रत तो स्त्रियाँ अपने पति के लिए करती हैं।'

पारुल ने कहा, 'मैंने तुम्हारी स्त्री न होने पर भी यह व्रत किया है ।'

'तब तो व्रत फलेगा नही !'

पारुल ने कहा, 'वाह-वाह, कालीघाट के ठाकुर-महाशय तो जैसे कुछ समझते ही नही, तुम्ही सब-कुछ जानते हो !'

अलकेश ने कहा, 'किन्तु मैं एक बात नही समझ पा रहा हूँ। मेरे लिए तुम यह सब कष्ट क्यो उठा रही हो ?'

'कष्ट किस बात का ?'

'वाह, उपवास करने मे क्या कष्ट नही होता ?'

पारुल ने कहा, 'अगर तुम भी लडकी होते तो समझ पाते कि हम लडकियो को उपवास करने मे कोई तकलीफ नही होती। अब आओ, चलो शुरू करो।'

अलकेश भोजन करने लगा। उसने पूछा, 'तो क्या सचमुच ही इस बेला तुम कुछ भी नही खाओगी ? सारी रात तुम भूखी रहोगी ?'

'भूखी क्यो रहूँगी ? मै जो व्रत का प्रसाद लायी हूँ, वही खाऊँगी।'

'कब खाओगी ?'

'पहले तुम खा लो। तुम्हारे बाद मैं भी प्रसाद ले लूँगी।'

अलकेश ने कहा, 'सचमुच पारुल, तुमने मुझे निस्तब्ध कर दिया है। जानती हो, प्रफुल्ल-दा के निर्देशो के अनुसार मैं हमेशा लडकियो से दूर-दूर ही रहता आया हूँ ! लडकियो के साथ मिलने-जुलने वाले को मैने हमेशा सन्देह की दृष्टि से देखा है। अब लगता है कि शायद वह मेरी भूल थी। इतने दिनो से शायद मै गलती पर था।'

पारुल हँसती हुई बोली, 'छोडो भी, मेरी इतनी बड़ाई करने की ज़रूरत नही।'

अलकेश ने कहा, 'मै बडाई नही कर रहा हूँ, सच्ची बात कह रहा हूँ। तुम्हारे साथ जो भी विवाह करेगा, वह परम सौभाग्यवान होगा।'

पारुल बोली, 'इन बातों को रहने दो। ऐसी बाते सुनने पर तो मैं आसमान मे उडने लगूँगी—धरती पर मेरे पैर पडेगे ही नही !'

अलकेश ने कहा, 'सच्ची बात कहने पर भी यदि तुम उसे मज़ाक समझो, तो फिर यह मेरी लाचारी है।'

पारुल बोली, 'ओ माँ, तुम रुको भी ! तुम्हारा भोजन हो चुका, अब उठो ! मैं नही खाऊँगी क्या ? शायद मुझे भूख लगती ही नही, क्यो ?'

अलकेश उठ खडा हुआ। उसके बाद आँगन मे जाकर नल के पानी से उसने हाथ-मुँह धोया। आकर अलकेश ने देखा कि फर्श को साफ-सुथरा कर वहाँ बैठी-बैठी पारुल प्रसाद खा रही थी।

अलकेश ने निकट आकर कहा, 'यही है तुम्हारा सावित्री व्रत !'

'मुझे छू मत देना। जाओ, बगल से चले जाओ और बिछौने पर चलकर बैठो।'

'क्यो ? तुम्हे छू देने से क्या होगा ?'

पारुल ने कहा, 'छि, देवी-देवताओ के सम्बन्ध मे मज़ाक नही किया करते।'

'यह लो, छू दिया मैने तुम्हे।'

यह कहकर सचमुच अलकेश ने अपनी अँगुली से पारुल की पीठ छू

दी ।

पारुल भभक उठी । बोली, 'यह क्या किया तुमने ? तुमने मुझे छू दिया ? अब क्या होगा, बोलो तो ? अब मै क्या करूँगी ?'

अलकेश ने कहा, 'करोगी और क्या ? प्रसाद खा चुकी, अब एक गिलास पानी पीकर पेट भर लो ।'

'तुम क्या कर बैठे ! इसीलिए तो मुझे गुस्सा आ जाता है । सचमुच, क्या तुम मे थोडा-सा भी विवेक-विचार नही है ? आखिर तुमने मुझे छुआ क्यो ? यदि ठाकुर अब श्राप दे देगे, तब ?'

अलकेश ने कहा, 'तुम्हारे ठाकुर क्या खाक बिगाडेगे ! क्या कर लेंगे ठाकुर मेरा ? तुम्हारे ठाकुर मे यदि इतनी ही क्षमता है तो वह मेरी मनोकामना पूरी क्यो नही करते ?'

'तुम्हारे साथ तर्क करके तो मैं जीत नही पाऊँगी ।'

यह कहकर थाली-गिलास उठाकर वह बाहर चली गयी । और फिर कुछ ही देर बाद कमरे मे आकर उसने एक काड कर डाला । न बात, न चीत; अलकेश के सामने घुटनो के बल बैठी वह जमीन पर माथा टेककर उसे प्रणाम करने लगी ।

अलकेश मानो एकाएक आकाश से गिर पडा ।

अपने दोनो पैर पीछे हटाते हुए उसने कहा, 'यह क्या कर रही हो ? यह क्या कर रही हो तुम ?'

किन्तु तब तक पारुल को जो कुछ करना था, वह कर चुकी थी । पारुल के सीधे खडे होते ही अलकेश ने पारुल की ओर दोनो हाथ बढाकर उसे डराना शुरू किया, 'इस बार यदि मैं तुम्हे छू दूँ तो ? तो फिर क्या होगा ? क्या इस बार भी ठाकुर को नाराजगी होगी ?'

बात पूरी होते-होते ही कही से मानो कुछेक लोगो की पद-ध्वनि अलकेश को सुनायी पडी । साथ-ही-साथ वह सावधान हो गया ।

'कौन ? कौन ? कौन ?'

पारुल भी डर गयी । कभी लगता कि आवाज़ सामने की ओर से आ रही थी तो कभी ऐसा लगता मानो पीछे की ओर से । वह भयाक्रान्त हो अलकेश से सटकर खडी हो गयी ।

इतनी रात मे एक भयानक धमाके से तब तक मुहल्ले के सभी लोग-बाग भी जाग गये थे। क्या हुआ यह ? किसके घर पर बम गिरा है ? किसने बम फेका है ? अरे भाई, किधर से यह आवाज़ आयी ? क्या कुछ समझ मे आया ? शायद हरि मुख्तार के मकान के भीतर से ! लेकिन उस घर मे तो सिर्फ एक लडकी रहती है ..और तो कोई रहता नही वहाँ। वहाँ क्यो फूटेगा बम ?

एक मकान की खिडकी के साथ सटी दूसरे मकान की खिडकी के बीच सवाल-जवाब होने लगे। अन्धकार मध्य रात के सन्नाटे को चीरते हुए एक ओर से जैसे-जैसे सवाल किये जाते, दूसरी ओर से वैसे-वैसे ही जवाब मिलते। सच पूछा जाये तो कोई जान भी नही पाया था कि वास्तव मे क्या घटना हुई है। अनेक दिन से लोगो के मन मे जाने कैसा सन्देह पनप रहा था। सन्देह था उस मकान के सम्बन्ध मे ही। समूचा मकान ही मानो लोगो के कौतूहल का पात्र हो गया था। जाने कैसी रहस्यमय थी उसकी गतिविधि ! घर के मालिक हरि मुख्तार की मृत्यु के दिन से ही इस कौतूहल की सृष्टि हुई थी। जाने कौन उस घर के दो व्यक्तियो की रुपये-पैसो से तथा सेवा-जन से सहायता करने आये थे ! दुबले-पतले कुछेक कम उम्र के लडके। उनके ऊपर उनकी यह कृपा-दृष्टि क्यो थी ? ससार मे जब दया-ममता इतनी दुष्प्राप्य है, तो भी उस घर को स्नेह, दया, माया, सेवा—सब-कुछ ही इतने खुले हाथों सुलभ क्यों है ? वे लोग आत्मीय-स्वजन तो नही, तो फिर इतनी माया-ममता का आकर्षण किस लोभ-वश है ? तो क्या वह जवान लडकी ही इस दया-माया-ममता का उत्स है ?

'क्या जाने साहब, सभी कुछ सम्भव है। आजकल किसी का भी विश्वास नही किया जा सकता।'

'जानते है जनाब, हमने आधी-आधी रात को भी वहाँ रोशनी देखी है। और फिर मकान मे रहने वाले के नाम पर बस एक प्राणी है !'

'एक ही प्राणी, मतलब ?'

'मतलब, हरि मुख्तार की वही एकमात्र लडकी। उसका विवाह अभी भी नही हुआ। बूढी माँ अब तक बची हुई थी, लेकिन उसके मरने के बाद

ही तो कुछ उत्पात बढे हैं।'

'तो फिर बाज़ार-वाज़ार कौन जाता है ?'

'वाज़ार और कौन जायेगा ? वे छोकरे ही जाते है।'

'यदि मुहल्ले के छोकरे बाजार से सौदा ला भी देते है तो आख़िर रुपये-पैसे कौन देता है ?'

'और कौन देगे ? वे छोकरे ही देते है।'

'मुहल्ले के बीच यह सब अनाचार हो रहा है और आप सब चुप्पी साधे देख रहे है ! वाह भाई, वाह ! ! छोकरो को पुलिस के हवाले क्यो नही करते ? मुहल्ले मे इस तरह का अनाचार चल रहा है और आप सब आँखे वन्द कर सभी कुछ सहन कर रहे हैं ! '

'अरे श्रीमान जी, आजकल के छोकरो की मति-गति आप समझते नही ? उन्हे छेडने का परिणाम क्या होगा, यह तो जानते है न ! और फिर हमारे पास इतना समय ही कहाँ है साहब, कहिये तो ! हम सब अपने रोजी-रोज़गार की चिन्ता करे या इस बात के लिए सिर खपाये कि किस के घर पर किस तरह की खिचडी पक रही है ! '

इस तरह काफी दिनो से ही इस ओर मुहल्ले के लोगो की नज़र थी। हरि मुख्तार की मौत के बाद ही वे देखते कि कुछ सन्देहास्पद लडके उस मकान मे सुबह-शाम आते। कोई-कोई बाज़ार से सौदा भी ले आता। मछली और मास पकने की खुशबू भी हवा मे तैर आती। कहाँ से ये रुपये आते है, कौन जाने !

एक दिन मुहल्ले के एक भद्र ने इन लडको मे से एक से प्रश्न किया था, 'भाई, तुम लोग कौन हो ? इस मुहल्ले के लडके हो क्या ?'

लडके ने उलटा सवाल कर डाला था, 'क्यो सर, यह बात क्यो पूछ रहे है ? क्या आप लोगो का हमने कोई नुकसान किया है ?'

उस भद्र ने कहा था, 'नही-नही, ऐसी वात नही। पहचान नही पाया, इसलिए पूछ रहा हूँ। तुम लोग किस मुहल्ले मे रहते हो ?'

'यही माहिम हालदर स्ट्रीट मे।'

'तो उस हरि मुख्तार के घर से तुम लोगो का किस तरह का सम्बन्ध

है ?'

लडके ने कहा था, 'उनका घर गरीबी और पैसे के अभाव से पीडित है। अतएव हम लोग अपने क्लब से रुपये-पैसे देकर उनकी सहायता करते है। तो क्या यह सहायता करना भी अन्याय है, आप यही कहना चाहते है क्या ?'

'ओह', कहकर वह भद्र चुप रह गये। उन्होने बात बढायी नही। उसके बाद से ही मुहल्ले के बीच कानाफूसी शुरू हो गयी थी, लेकिन मुँह से कोई कुछ कहता नही। सिर्फ मुहल्ले की बूढी स्त्रियाँ आपस मे कहा करती, 'हाय राम, बेचारी माँ के भाग्य मे कितना कष्ट लिखा था !'

और फिर कोई वृद्धा कहती, 'जब यह लडकी उसके पेट मे पडी थी, तभी तो उसे समझ लेना चाहिए था कि यह लडकी घर मे भी आग लगायेगी और मुँह मे भी। वह बेचारी तो मरकर बच गयी। उसे तो छुटकारा मिला...।'

ये सारी बाते अब तक घर के भीतर ही चला करती। लेकिन उस दिन रात मे वह दुर्घटना घटी तो फिर किसी के मुँह पर लगाम लगाये रखना सम्भव नही रह गया। जो भी जिसके मन मे आया, वह खुल्लम-खुल्ला बोलने लगा।

उसके बाद फिर भोर हुई। मुहल्ले के लोग रास्ते मे उस घर के सम्बन्ध मे ही आपस मे आलोचना-प्रत्यालोचना करने लगे।

'क्या माजरा है, साहब ? कल रात हरि मुख्तार के घर मे क्या काड हुआ था ? गोली-बारूद की आवाज क्यो हो रही थी ?'

किसी एक आदमी ने जवाब दिया, 'पुलिस जो आयी थी ! क्या आपको कुछ मालूम नही है ?'

'पुलिस ? पुलिस क्या करने आयी थी ?'

उस आदमी ने उत्तर दिया, 'पुलिस ने आकर एक आदमी को वहाँ गोलियो से भून डाला है।'

'पुलिस ने गोलियो से भून डाला ? किसे ? किसे मार डाला है पुलिस ने ?'

'एक छोकरा था—पुलिस ने उसे ही मार डाला है।'

बहुतो को विश्वास ही नही हो पाया इस बात का। उन्होने पूछा, 'इतनी रात मे वह लडका वहाँ आया कहाँ से ? उस मकान मे कोई लडका तो रहता ही नही था, साहब ! हरि मुख्तार की विधवा के गुज़र जाने के बाद तो मकान मे सिर्फ उसकी लडकी ही अकेली रहती है। कितनी ही बार उस लडकी को सदर दरवाज़े पर ताला लगाकर बाज़ार जाते देखा है। अचानक इतनी रात मे उस घर मे कोई छोकरा अगर आया, तो कहाँ से ?'

'अरे साहब, यह सीधी-सी बात भी आप नही समझ रहे हैं ? वह छोकरा अगर न हो तो फिर पेट का धन्धा कैसे चले, बताइये तो ?'

'छोडिये भी। आप तो वहाँ खडे थे। उसके बाद आपने क्या देखा, वह बताइये ?'

उस आदमी ने उत्तर दिया, 'उसके बाद पुलिस उस छोकरे को गाडी मे लादकर क्या जाने कहाँ ले गयी ! देखने पर जो अन्दाज़ लगा, उससे तो यही पता चलता है कि बच्चू अब बचेगा नही। सारा शरीर खून से लथ-पथ हो रहा था। पुलिस के बडे साहब खुद आये थे। ठीक छाती मे गोली लगी थी। ऐसा पक्का निशाना था कि बस पूछिये मत।'

एक आदमी इसी बीच वहाँ आया। उसने कहा, 'भाई, वह लडका मर गया है। मैं अभी अस्पताल से सीधा आ रहा हूँ।'

'कौन था वह लडका ? कुछ पता चला ?'

उस आदमी ने जवाब दिया, 'अजी होगा और कौन ? गुडा था, गुडा। रात मे शायद इस घर मे छिपा हुआ था। पुलिस काफी दिनो से ताक मे थी। मौका मिलते ही उसने धर दबोचा। पुलिस को देखकर वह भागने की कोशिश कर रहा था। ऐसी स्थिति मे पुलिस के सामने दूसरा चारा ही क्या था ? पुलिस को लाचार होकर गोली चलानी पडी। इसमे पुलिस का कोई दोष नही है।'

उसके बाद जब ऑफिस जाने का समय होने लगा, तब धीरे-धीरे भीड छँटने लगी। यदु भट्टाचार्य लेन बिलकुल खाली हो गया। युद्ध के उस ज़माने मे, जबकि सारी पृथ्वी पर करोडो-करोड लोगो की मृत्यु का

महोत्सव चल रहा था, उस समय यदु भट्टाचार्य लेन के एक टूटे-फूटे मकान के भीतर हुई एक मौत—चाहे वह जितनी भी मर्मभेदी क्यो न रही हो—आखिर लोगो के मन को कहाँ तक विचलित करती ? पृथ्वी के आकाश-वातास मे उस समय मृत्यु की गन्ध फैल चुकी थी और इतिहास के पन्ने-पन्ने पर नृशस हत्याओ की कालिमा अकित हो चुकी थी। पृथ्वी पर जितने भी महापुरुष हो चुके थे—मानो उनकी प्रेतात्माएँ कब्र से वाहर निकलकर दिव्यलोक मे आ खडी हो गयी थी। उनकी अकाय आत्माओ ने मानो अपनी भाषा मे बोलना शुरू किया था—बन्द करो, बन्द करो। हत्याओ की यह ताडव-लीला बन्द करो। हम लोगो के आत्म-बलिदान को इस प्रकार निष्फल मत करो।

किन्तु कौन किसकी सुनता है ? इतिहास-विधाता के नाक-कान और नेत्र नही होते। उसका कानून जैसा निरकुश है, वैसा ही निर्मम भी। उसके लिए दया, माया और स्नेह-प्रीति का कोई मोल नही। उसके यहाँ न कोई अपना है, न पराया। इतिहास की गति समझ मे आ जाये, ऐसी क्षमता ही नही है किसी के पास।

दूसरे दिन मिस्टर डगलस सदा की तरह ही अपने ऑफिस मे आये थे। सिमसन अपनी रिपोर्ट लेकर गये और सामने चेयर पर बैठ गये।

डगलस ने रिपोर्ट को थोडा-सा पढकर पूछा, 'यह क्या, तुमने उसे पकडा है ? उसी बदमाश को !'

सिमसन ने कहा, 'हाँ, लेकिन पहले रिपोर्ट के आखिरी हिस्से को पढ जाइये।'

'आखिरी हिस्से को ?'

आखिरी हिस्से को पढते ही डगलस भडक उठे।

'यह क्या, तुमने चक्रवर्ती का खून कर दिया ? उसे जिन्दा नही पकड सके ? तुम्हे तो ऑर्डर दिया गया था उसे जिन्दा पकडने के लिए ! क्या वह भागने की कोशिश कर रहा था ?'

सिमसन ने कहा, 'हाँ।'

'लेकिन उसका खून करने की क्या जरूरत थी ? तुम्हे तो मालूम है कि अलकेश चक्रवर्ती ने पुलिस के कितने आदमियो की जान ली है। उसे पकडने के लिए दस हज़ार रुपये का इनाम रखा गया था, क्या यह भी तुम्हे मालूम नही था ? आखिर हुआ क्या, बतलाओ तो ! चुप क्यो हो ?'

सिमसन ने कहा, 'मैं और क्या कहूँ ? मुझे जो कुछ कहना था, वह सब तो रिपोर्ट मे लिख दिया है मैने।'

'तो क्या तुम्हारा यह कहना है कि चक्रवर्ती तुम्हारे मुकाबले मे ज्यादा चालाक था ? तुमसे बढकर होशियार था वह ? तो फिर तुम अपने स्टाफ के बारह आदमियो के साथ वहाँ क्या करने गये थे ? उसे जब तुम ज़िन्दा पकड ही नही सके तो खुद तुम्हारे जाने से क्या फायदा हुआ ? तुम्हारे स्टाफ के जाने से भी काम चल जाता।'

इस बात का उत्तर देने मे सिमसन को दुविधा होने लगी।

डगलस ने कहा, 'असल मे घटना किस प्रकार हुई, यह सच-सच बतलाओ तो !'

सिमसन ने कहा, 'असली बात को मैं अपने होठो पर नही ला पाऊँगा।'

'क्यो ?'

सिमसन ने कहा, 'यदि मैं बात के मर्म को बतला दूँगा तो मेरी रिपोर्ट ही झूठी हो जायेगी।'

'इसका मतलब ?'

सिमसन ने कहा, 'इसका मतलब मै अभी बतलाता हूँ।'

यह कहकर वही बैठे-बैठे एक कागज़ पर मिस्टर सिमसन जाने क्या लिखने लगे। उसके बाद उन्होने वह कागज़ मिस्टर डगलस के सामने बढा दिया।

उन्होने कहा, 'यही है मेरा जवाब।'

डगलस उसे पढने लगे। उसके बाद सिर उठाकर उन्होने पूछा, 'यह क्या ? तुमने यह सब क्या लिखा है इस कागज़ मे ?'

सिमसन ने स्पष्ट शब्दों में जवाब दिया, 'मैं नौकरी छोड़ रहा हूँ। मैं इस्तीफा देता हूँ, डगलस! मैंने अपनी रिपोर्ट में जो कुछ लिखा है, सब झूठ है। उस रिपोर्ट का एक-एक शब्द, एक-एक अक्षर झूठ है। मैंने अपनी नौकरी के दौरान देखा है कि भारत के निवासियों के सम्बन्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की जो धारणा है, वह झूठी है। आज हम जिन्हें फांसी दे रहे हैं, टेररिस्ट कहकर गोलियों से भून रहे हैं और कालापानी भेज रहे है, वे लोग केवल मानव ही नहीं—महामानव है। ब्रिटिश पार्लियामेंट में वह ताकत नहीं जो इन्हें अब ठगती रह सके। इनके ऊपर हम पुलिस वालो ने जो अमानुषिक अत्याचार किये हैं, उनका एक दिन हमें जवाब देना होगा। उस दिन, डगलस, तुम मेरी बातों को याद करना! एक-न-एक दिन इंडिया आज़ाद होगा ही, यह भी मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ। हिन्दू-मुसलमानो के बीच झगड़े पैदा करने पर भी उन्हें आजादी से अब वंचित नही किया जा सकता। उस समय इन्ही भारतीयों के सामने हमें फिर खाने-पहनने के लिए हाथ फैलाना पड़ेगा। इंडिया की कपड़ा-मिलों का कपड़ा फिर हम लोगो को ही गाँठ का पैसा खर्च करके खरीदना होगा, जिस तरह मुगल-राज्य के समय हम लोग खरीदा करते थे। हम लोगों के लिए फिर वैसे ही दिन आने वाले है!'

'व्हॉट? क्या तुम पागल हो गये हो, सिमसन?'

सिमसन ने मानो सचमुच ही पागल की तरह कहना शुरू किया, 'तुम आज मुझे पागल कहोगे, यह मैं भलीभाँति जानता हूँ, डगलस! हम लोगो ने जब जलियाँवाला बाग में हज़ारो-हजार निहत्थे आदमियो को गोलियो का शिकार बनाया था, उस समय जो हमने जनरल ओ-डायर को पागल नही कहा, वही हमारी भूल थी। हम लोगों ने जब खुदीराम, भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त को फाँसी दी थी, उस समय हम लोगों का दिमाग जो फिर गया था—हम पागल थे, यह बात उस दिन समझ पायेंगे जब हम यहाँ से चला जाना पड़ेगा।'

मिस्टर डगलस कुछ देर तक चुप रहे। उसके बाद उन्होंने कहा, 'नौकरी छोड़ देने पर तुम खाओगे क्या, सिमसन? तुम्हारी गुज़र-बसर कैसे होगी?'

सिमसन ने उत्तर दिया था, 'जो नौकरी नही करते, उनकी गुजर-बसर कैसे होती है ? इडिया मे तो ऐसे करोडो आदमी है, जिनके पास कोई नौकरी नही। वे सभी क्या जिन्दा नही रहते, मर जाते है ?'

डगलस ने कहा था, 'देखता हूँ कि तुम्हारा इडिया छोडकर देश लौट जाना ही उचित है। तुम्हारे यहाँ रहने पर ब्रिटेन का नुकसान होगा।'

सिमसन ने कहा था, 'ब्रिटेन का नुकसान तो तुम्ही लोग कर रहे हो, डगलस ! ब्रिटेन की नयी पीढी एक दिन इस सर्वनाश के लिए तुम लोगो से ही जवाब मांगेगी। उस दिन मेरी बाते याद करना, डगलस ! आजकल फौज मे भी यह जहर फैल चुका है। बम्बई मे जो सैनिक-विद्रोह हुआ, उसके मूल मे भी तुम्ही सब लोग तो हो।'

उसके बाद कुछ क्षणो के पश्चात कुरसी से उठकर सिमसन खडे हो गये। दरवाजे की तरफ बढते हुए उन्होने कहा, 'मै चलता हूँ, डगलस ! गॉड सेव द किंग !'

ये सब पुरानी बातें है। टैक्सी मे बैठे-बैठे मिस्टर सिमसन को ये सारी बाते याद आ रही थी। उस दिन मिस्टर डगलस से जो कुछ वह कह आये थे, वे सब बाते अब सच साबित हुई है। जो ब्रिटेन सभी को पॉव तले रौदे हुए था, वही ब्रिटेन अब क्षमता के दृष्टिकोण से यूरोप का सबसे छोटा देश हो गया। वही ब्रिटेन इस समय इडिया से कपडा खरीदता है। इस समय ब्रिटेन की नयी पीढी के लडके कहते है कि हम लोग 'आउटसाइडर' है। वे इस समय अपने-आपको 'एग्री यग मैन' कहते है। राइफल-बन्दूक से भी अधिक शक्तिशाली अस्त्र है तो उसका नाम है महात्मा गाधी। वीर से भी जो बडा वीर है, उसी का नाम तो महावीर होता है। ठीक ही हुआ है। चलो ठीक ही हुआ, उसकी भविष्यवाणी सच्ची साबित हुई। इस समय एशिया के काले आदमियो से इगलैड भर गया है। ये सब बाते उस समय ब्रिटिश गवर्नमेट ने सपने मे भी नही सोची थी।

टैक्सी यदु भट्टाचार्य लेन के भीतर घुसी।

यही है वह यदु भट्टाचार्य लेन। यही उस मकान पर नजर रखने के लिए उन्होने कितने भेदिये छोड रखे थे। असल अपराधी को कोई भी पकड नही पाता था। असल अपराधी—वही अलकेश चक्रवर्ती। जाने कैसे उसे खबर मिल जाती कि पुलिस आयी है और देखते-ही-देखते वह हवा हो जाता। सचमुच, लडका बहुत होशियार था—बहुत ही चालाक !

आखिरकार एक दिन एक लडका उनके पास आया था।

उसने चुपचाप उनसे कहा था, 'सर, मै अलकेश चक्रवर्ती को पकडवा सकता हूँ।'

सिमसन ने पूछा था, 'तुम कौन हो ?'

लडके ने अपना परिचय दिया था।

सिमसन फिर भी सन्तुष्ट नही हुए थे। उन्होने पूछा था, 'तुम जो अलकेश को पकडवा दोगे, इसमे तुम्हे क्या लाभ होगा ?'

लडके ने कहा था, 'लाभ यही कि रुपये मिलेगे। आप लोग मुझे दस हजार रुपये का इनाम देगे।'

सिमसन ने समझा कि लडका रुपये चाहता है।

उन्होने पूछा, 'क्या तुम ठीक-ठीक जानते को कि अलकेश चक्रवर्ती उस मकान मे मिलेगा ?'

लडके ने कहा था, 'हाँ सर, निश्चित रूप से मिलेगा। देख लीजियेगा।'

'यदि नही मिला, तो ?'

लडके ने जवाब दिया था, 'अगर अलकेश चक्रवर्ती नही मिला तो आप मुझे एक भी पैसा नही दीजियेगा। फिर भी एक बात कहूँगा, सर ! आप अपने स्टाफ पर भरोसा नही कीजियेगा। उनके साथ आप खुद भी वहाँ जाइयेगा।'

'क्यो, मुझसे जाने के लिए क्यो कह रहे हो ?'

'अलकेश चक्रवर्ती बहुत ही चालाक लडका है। इसीलिए आपको जाने के लिए रह रहा हूँ, सर ! उसके पास हमेशा भरी पिस्तौल रहती है। आप सब पहले मकान घेर लीजियेगा। उसके बाद दीवार लाँघकर

भीतर घुसियेगा।'

सिमसन ने कहा, 'क्या तुम घर का नक्शा बतला सकोगे ?'

'हाँ सर, ठीक-ठीक बतला सकता हूँ। मकान का सदर दरवाजा पूरब की तरफ है। घर के भीतर जाते ही एक छोटा-सा आँगन है। आँगन के उत्तर मे एक कोने मे टीन की छत के नीचे रसोईघर है। उसके आँगन के पश्चिम मे एक चबूतरा है। चबूतरे के पीछे ही दो कमरे है, पास-पास। दोनो कमरो के दरवाजे उस चबूतरे की तरफ ही है। दाहिनी तरफ के कमरे मे रहती है पारुलबाला।'

सिमसन ने पूछा, 'पारुलबाला ? पारुलबाला कौन ?'

'हुजूर, उस घर की लडकी पारुलवाला गागुली।'

'क्या उस लडकी का विवाह हो चुका है ?'

'नही सर, अभी तक अविवाहिता है। अभी शादी नही हुई।'

सिमसन ने पूछा, 'उस लडकी का और कौन है उस घर मे ?'

लडके ने बतलाया, 'उस लडकी का और कोई नही है, सर! पहले उसके पिताजी जीवित थे, जो कचहरी मे मुख्तार थे। वह स्वर्गवासी हो चुके है। एक विधवा माँ थी, वह भी अब नही रही। अब लडकी का अपना कहलाने वाला कोई भी नही। एकमात्र वह अलकेश चक्रवर्ती ही उस लडकी के साथ रहता है।'

सिमसन आश्चर्यान्वित रह गये। उन्होने पूछा, 'साथ रहता है, इसका मतलब ? उनका विवाह नही हुआ है और फिर भी वे एक साथ रहते हैं ? इडिया मे तो यह सब नही होता। तो क्या मुहल्ले के लोग उन्हे कुछ भी नही कहते ?'

लडके ने कहा, 'मुहल्ले के लोग तो कुछ जानते ही नही, सर! उनको अगर कुछ मालूम हो, तभी तो वे बोले!'

सिमसन ने पूछा, 'तो फिर अलकेश चक्रवर्ती और पारुलवाला के बीच असल सम्बन्ध क्या है ?'

'हुजूर, सम्बन्ध क्या होगा ? वही प्यार-मुहब्बत। अलकेश तो घर से बाहर निकलता ही नही, दिन-रात घर मे छिपा पडा रहता है ताकि देखने पर कोई पुलिस को खबर न दे दे!'

सिमसन ने पूछा, 'तो फिर बाज़ार का काम-धाम कौन सभालता है? बाहर के भी तो कितने ही काम होगे! शायद कोई नौकर-नौकरानी हो?'

लडके ने कहा, 'नही, सर! नौकर-नौकरानी रख सकने लायक पैसे ही नही है उनके पास। वे सारे काम अलकेश के कुछेक दोस्त करते है। वे भी उस घर मे अधिक आने-जाने से घबराने लगे है। बीच-बीच मे आकर वे लोग कुछ रुपये-पैसे उन्हे दे जाते है। बाजार से सौदा वगैरह लाने का काम स्वय पारुलबाला ही करती है।'

'यह क्या? लडकी होकर बाज़ार से सौदा खरीदने जाती है?'

'तो और क्या करेगी, सर! अलकेश चक्रवर्ती खुद तो बाज़ार जा नही सकता। बाहर निकलते ही सब उसके बारे मे जान जायेगे। इसीलिए लाचार होकर खुद पारुलबाला को ही बाजार जाना पडता है। बाज़ार जाते वक्त वह सदर दरवाज़े पर ताला लगा देती है और बाज़ार से लौटने पर ताला खोलकर वह घर के भीतर लौट आती है।'

सिमसन ने सारी बाते एक कागज पर नोट कर ली। उसके बाद उन्होने उस लडके का नाम भी लिख लिया। आखिर मे पूछा, 'तुम्हारा पता-ठिकाना क्या है?'

लडके ने बतलाया, 'मेरा कोई भी पता-ठिकाना नही।'

'पता-ठिकाना नही! इसका क्या मतलब हुआ? तो फिर तुम रहते कहाँ हो? कोई एक जगह तो होगी, जहाँ तुम रहते होगे!'

लडके ने जवाब दिया, 'सर, मेरे रहने का कोई बँधा ठिकाना नही है। सर, मै बहुत ही गरीब हूँ। दुनिया मे जिसे मैं अपना कह सकूँ, ऐसा कोई भी नही है, सर! मै कभी हावडा स्टेशन के प्लेटफार्म पर सो रहता हूँ तो कभी कालीघाट मे यात्रियो की धर्मशाला मे पडा रहता हूँ। कभी-कभी फुटपाथ का ही आसरा मिलता है। मेरा पता-ठिकाना भला क्या रहेगा, सर?'

सारी बात सिमसन समझ चुके थे। उन्होने कहा, 'ठीक है, तुम अब जाओ। फिर कभी यहाँ आकर खबर लेना। अगर आसामी पकडा गया तो तुम्हे रुपये मिलेगे। तुम यहाँ आकर रुपये ले जाना।'

'सर, एक बात है ..।'

'बोलो !'

'देखिये, मेरा नाम ज़ाहिर नही होना चाहिए, सर !'

'हाँ-हाँ। कुछ भी जाहिर नही होगा। तुम्हे डरने की कोई जरूरत नही।'

उसके बाद और देर नही की सिमसन ने। उन्होने डगलस को खबर दी और तुरत ही सारा इन्तजाम कर डाला। लगभग पन्द्रह सिपाही—सभी सादी पोशाक मे। उन लोगो ने आधी रात को वह मकान घेर लिया। दो आदमी सामने की दीवार लाँघकर भीतर कूद पडे थे। भीतर कूदते ही उन्होने सदर दरवाज़े की कुडी खोल दी—इसलिए कि मिस्टर सिमसन को भीतर जाने मे कोई असुविधा न हो। एक पत्ता भी नही खडका...। सिमसन भी सादी पोशाक मे थे। कमरे का दरवाज़ा अधखुला था। कमरे के भीतर रोशनी जल रही थी। इस वक्त तक कोई भी सोया नही था। उन्होने देखा कि एक लडकी एक लडके के पैर छूकर उसे प्रणाम कर रही थी। लडका कह रहा था, 'तुम मुझे प्रणाम क्यो कर रही हो ? मै तो तुम्हारा कोई नही हूँ।' लडकी ने जवाब दिया था, 'तुम मेरे गुरुजन हो। सावित्री व्रत के अन्त मे प्रसाद खाने के बाद गुरुजनो को प्रणाम करने का नियम है। तुम्हारे सिवा मेरे लिए और कोई गुरुजन है ही कहाँ ?' लडके को देखते ही मिस्टर सिमसन ने पहचान लिया। उनकी फाइल मे अलकेश चक्रवर्ती की जो फोटो थी, उसके साथ चेहरा हू-ब-हू मिलता था।

साथ-ही-साथ भीतर घुसने के लिए उन्होने अपने सिपाहियो को इशारा किया।

और उधर से वे लोग भी चिल्ला पडे थे, 'कौन ? कौन ? कौन ?'

अलकेश चक्रवर्ती को ज़िन्दा पकडना होगा—यही था हुक्म। उन लोगो को देखते ही लडकी ने अलकेश चक्रवर्ती को जकड लिया। वह चीख पडी, 'नही, नही, नही !'

हठात टैक्सी-ड्राइवर ने पूछा, 'कौन-सा मकान है, साहब ?'

तब तक साहब मानो फिर होश मे आ गये थे। एक अरसे के बाद

इसी यदु भट्टाचार्य लेन मे आना हुआ ! कहाँ उनका देश और कहाँ यह कलकत्ता ! और कलकत्ता ही क्यो कहे ? ठीक कलकत्ता भी नही कहा जा सकता—कलकत्ता की एक अनजानी उपनगरी की गली, यदु भट्टा-चार्य लेन। इतने दिनो के बाद उस दिन के आधी रात को देखे गये मकान को ढूँढ निकालना क्या कोई आसान बात थी ?

फिर भी उन्होने पहचान लिया। मकान का नम्बर उन्हे मालूम था। उन्होने नम्बर मिलाया। हाँ, यही है वह मकान। इतने दिनो मे धरती पर कितना-कुछ बदल गया। इतिहास बदल गया है। सिर्फ इतिहास नही, पृथ्वी का भूगोल भी बदल गया है। साथ-ही-साथ दुनिया के नक्शे के कई रग भी बदल गये है। लेकिन यदु भट्टाचार्य लेन के इस मकान का चेहरा कभी बदलने वाला नही था !

टैक्सी वाले का भाडा चुकती कर सिमसन ने उसे छोड दिया। टैक्सी वाला चला गया।

इतने सवेरे इस गली मे एक साहब को देखकर मुहल्ले के कुछ आदमी सामने आये।

एक आदमी ने अंगरेज़ी मे कहा, 'आप किसी को खोज रहे है क्या, सर ?'

'क्या यहाँ तारक रहता है ? तारक सेन ?'

उस आदमी ने जवाब दिया, 'हाँ सर, इसी मकान मे तारक सेन रहता है।'

यह कहकर वह जोरो से दरवाज़ा खटखटाते हुए पुकारने लगा, 'तारक-दा, ओ तारक-दा...!'

भीतर से किसी आदमी ने जवाब दिया, 'वह घर पर नही है।'

इस ओर से कहा गया, 'दरवाज़ा खोलिये, मासी माँ ! एक साहब आये है; तारक-दा के साथ मुलाकात करने के लिए।'

थोडी देर बाद ही दरवाज़ा खुला, और मिस्टर सिमसन ने बहुत दिनो पहले देखे एक चेहरे को अपने सामने देखा। वही चेहरा। हाँ, वही चेहरा। उस चेहरे पर उम्र ने अपनी छाप अवश्य लगा दी थी।

साहब ने बँगला मे पूछा, 'मुझे पहचान रही है, दीदी ?'

पारुल ने पहले ही घूंघट निकाल लिया था। इस बार उसने घूंघट और भी अधिक कर लिया।

सिममन ने कहा, 'तारक सेन ने इसी मकान का ठिकाना दिया था अपने पत्र मे। मै उसके साथ मुलाकात करने के लिए ही इंडिया आया हूँ।'

पारुल ने पूछा, 'क्या आपका ही नाम है मिस्टर जॉन सिमसन ?'

सिमसन ने जवाव दिया, 'हॉ दीदी, आपने मुझे ठीक पहचाना।'

पारुल ने कहा, 'आइये, भीतर आइये।'

सिमसन साहव के भीतर आते ही पारुलवाला ने सदर दरवाजे की कुडी लगा दी। उसके वाद उसने कहा, 'वह आपसे मिलने के लिए ही सुवह-सुवह आपके होटल मे गये है।'

साहव ने कहा, 'मै तो अपने होटल मे काफी देर तक तारक का इन्तजार करता रहा, लेकिन फिर भी उससे मुलाकात नही हुई। इसीलिए मै टैक्सी लेकर सीधे यहाँ आ पहुँचा हूँ।'

'कल रात ही तो वह आपसे मुलाकात करके आये थे।'

साहव ने कहा, 'हाँ, मुलाकात हुई थी। लेकिन चूँकि हमारा प्लेन कुछ देर मे उतरा था, इसीलिए तारक से अधिक वाते नही हो सकी। इसीलिए मैंने तारक से आज सुबह मिलने के लिए कहा था। उसके कष्ट की वात सुनकर ही तो मैं इतनी दूर से कलकत्ता आया हूँ।'

साहव ने कमरे मे चारो तरफ नज़र दौडायी। इसी कमरे मे एक वार पहले भी वह आये थे। हॉ, वही पहली वार। और आज वह दूसरी वार आये है। इसी कमरे के भीतर ही तव को ब्रिटिश गवर्नमेट का चरम शत्रु गोली का निशाना वना था। रक्तरजित हो उठा था उस दिन यह कमरा। उस हत्या के बाद ही वह नौकरी छोडकर अपने देश चले गये थे। आज पुन उसी कमरे के भीतर बैठकर वह उसी महिला के साथ शिष्टता और सदव्यवहार से बातचीत कर रहे है। एक समय का शत्रु आज परम मित्र हो गया है। सचमुच, मनुष्य का जीवन बडा विचित्र है!

तभी पारुलबाला एक प्याली चाय लेकर भीतर आयी।

उसने कहा, 'यह चाय ही पीजिये। घर मे और कुछ भी नही है।

इसीलिए केवल यह चाय ही दे रही हूँ।'

साहब ने कहा, 'आपने इतनी तकलीफ क्यों की ? मैं तो होटल से चाय पीकर ही चला था।'

'फिर भी पीजिये। आप हमारे लिए कई हजार मील दूर से ढेरों रुपये खर्च करके आये हैं और आप हमारी एक प्याली चाय भी नहीं पियेंगे ?'

साहब चाय पीने लगे। उसके बाद उन्होंने लक्ष्य किया कि पारुल सीधे उन्हीं की तरफ देख रही थी। एक अरसे पहले जब इस कमरे में खून बह उठा था, उस समय भी पारुल इसी तरह देख रही थी। ठीक वही दृश्य, ठीक वही भंगिमा।

साहब ने पारुल की ओर देखते हुए कहा, 'आप उस दिन की घटना के लिए शायद मुझे माफ नहीं कर पायी, है न ?'

पारुल ने जवाब दिया, 'आप इस तरह क्यों कह रहे हैं ? आपने तो अपना कर्तव्य-भर निभाया।'

साहब ने कहा, 'नहीं, सच पूछिये तो मैंने अपनी ड्यूटी पूरी नहीं की।'

'मतलब ?'

'शायद आप जानती नहीं। यदि सचमुच उस दिन मैंने ड्यूटी की होती तो अपनी रिपोर्ट में भी मैं सच्ची बात ही लिखता। किन्तु मैंने तो वैसा किया नहीं। मैंने अपने ऊपर वाले अफसर के पास झूठी रिपोर्ट फाइल की थी।'

पारुल फिर भी कुछ समझ नहीं पायी। कहने लगी, 'मैं तो आपकी बात ठीक-ठीक समझ नहीं पा रही हूँ।'

साहब ने कहा, 'मैंने अपनी रिपोर्ट में झूठी बातें लिख भरी थीं। इसीलिए मैंने उसी दिन नौकरी छोड़ दी और मैं अपने देश लौट गया।'

'क्यों, आपने ऐसा क्या कुछ किया था ?'

साहब ने जवाब दिया, 'नहीं दीदी, आप उसे अपराध नहीं भी कह सकती हैं। आप सम्भवतः मेरी बातों को कुछ-कुछ जरूर समझ पायेंगी। इस नौकरी में आने के पहले ही मैंने विवाह किया था। पत्नी का नाम था जेनी। जेनी का चेहरा-मोहरा आप जैसा ही था। इस तरह का सुन्दर

मुखडा मैंने कम ही देखा है। किन्तु न जाने क्या हुआ, वह मुझे छोडकर चली गयी। हम दोनो के बीच तलाक हो गया—डाइवोर्स। उसके बाद मैंने पाया कि एक दिन उसने एक दूसरे नौजवान से विवाह कर लिया। उसी दुख से पीडित होकर मैंने एक बार आत्महत्या करने की भी ठान ली थी, किन्तु मै आत्महत्या नही कर सका। इसीलिए अपना देश छोडकर मै इडिया चला आया था।'

'उसके बाद आपने विवाह नही किया फिर ?'

साहब ने कहा, 'नही, दीदी! मनुष्य के जीवन मे प्रेम का प्रस्फुटन एक बार ही होता है। उसके बाद फिर विवाह करने की इच्छा ही नही हुई। हमारे कमिश्नर मिस्टर डगलस ने मुझसे कितनी ही बार कहा कि मैं यूरोपियनो के किसी क्लब का मेम्बर बन जाऊँ और वहाँ अगरेज लडकियो के साथ अपना मेल-जोल बढाऊँ। किन्तु मै वैसा कर नही पाया। मैंने मिस्टर डगलस से भी कहा था कि मनुष्य के जीवन मे प्रेम एक ही बार आता है।'

'उसके बाद ?'

'उसके बाद यही—इसी कलकत्ता मे चला आया। नौकरी के कामो मे अपने-आपको भुला-डुबाकर रखने लगा मै। मैं कोशिश करने लगा—जेनी को भुला डालने की। किन्तु क्या पहले प्रेम को इतनी आसानी से भुलाया जा सकता है ? इडिया मे उस समय टेररिस्टो का जमाना था—आतकवादियो का युग! आप लोगो के महात्मा गाधी ने उस समय 'क्विट इडिया' का—'भारत छोडो' का आन्दोलन शुरू कर दिया था। हजारो-हजार लोगो ने उस समय रेल की पटरियाँ उखाड फेकी थी! अगरेज अफसरो को देखते ही गोलियो से उडा दिया जाता था। ट्रेनो को लूटा जा रहा था और सुभाषचन्द्र बोस उस समय जापान के रेडियो से अगरेजो के खिलाफ हिन्दुस्तानियो को उत्तेजित कर रहे थे। अराजकता का युग चल रहा था इडिया मे। वे सारी बाते निस्सन्देह आपको भी याद होगी!'

पारुल ने कहा, 'हाँ, याद है।'

सिमसन फिर कहने लगे, 'हाँ, ठीक उसी समय मैंने आपको देखा।'

'आपने मुझे देखा, इसका मतलब ?'

'हाँ दीदी, विश्वास कीजिये। मैंने आपको देखा और फिर मुझे जेनी की याद आ गयी। सम्भवतः आप-जैसी महिलाएं और भी होंगी दुनिया मे। मैंने न तो उन्हे देखा है और न उनके सम्बन्ध मे कुछ सुना ही है। मैंने यदि देखा, सुना और समझा - तो सिर्फ आपको। और फिर मैंने सोचा --इस पृथ्वी पर ऐसा प्रेम भी तो है। मैंने सोचा कि जिस तरह आपने अलकेश चक्रवर्ती से प्यार किया है, ठीक उसी तरह ही काश मेरी जेनी भी मुझे प्यार करती! उस दिन मुझे अलकेश चक्रवर्ती से बेहद ईर्ष्या हुई थी। मुझसे यदि कोई इस तरह प्यार करता तो, दीदी, मै नयी जिन्दगी पा जाता। आपको देखने के वाद मेरा रिवॉल्वर मेरे हाथो मे बस पडा ही रहा, इसीलिए मेरे रिवॉल्वर से एक भी गोली नही निकली। अलकेश चक्रवर्ती के प्रति आपका प्यार देखकर मै मुग्ध था, विस्मित था।'

पारुल के मुंह मे एक भी शब्द नही निकल रहा था। वह चुपचाप साहब की वाते सुन रही थी।

'उसके बाद अलकेश चक्रवर्ती की प्राणहीन देह के साथ भी वही किया गया, उसे पुलिस हॉस्पिटल मे भेज दिया गया। वहाँ के डाक्टर ने अलकेश चक्रवर्ती के खून से लथपथ शरीर का परीक्षण किया और कहा—द पेशेंट हैज एक्सपायर्ड। रोगी मर चुका है।'

कहते-कहते क्षण-भर के लिए मिस्टर सिमसन रुके। उनकी आँखें भर आयी थी। उन्होने तुरत रूमाल निकालकर अपनी आँखें पोछ डाली।

उन्होने फिर कहा, 'उसके वाद मैने वह काम किया, जो कभी पहले जीवन मे नही किया था। ऑफिस पहुँचते ही मैंने झूठी रिपोर्ट लिखी। रिपोर्ट मे मैने लिखा कि मैने खुद अपनी रिवॉल्वर से गोली चलाकर अलकेश चक्रवर्ती का खून किया है, क्योंकि वह भागने की कोशिश कर रहा था।'

पारुल इस वार चुप नही रह सकी थी। उसने पूछा, 'आपने यह झूठी बात क्यो लिखी ?'

सिमसन ने कहा, 'वही, आपसे पहले ही बतला चुका हूँ। ऐसा प्यार मैने अपने जीवन मे पहली बार ही देखा था। दीदी, आपने पहली बार यह दिखाया कि सभी औरते जेनी की तरह नही होती। इस ससार मे आपकी

जैसी नारियाँ भी मौजूद हैं।'

'उसके बाद ?'

'उसके बाद झूठी रिपोर्ट लिखने की सज़ा को भुगतने के लिए मैं स्वयं ही तैयार हो गया। कमिश्नर डगलस साहब के सामने बैठकर ही मैंने अपना इस्तीफा लिख डाला। फिर दो-एक दिनो के भीतर ही मै अपने देश लौट गया। इन्डिया छोडकर जाते समय और कुछ भी याद नही रहा। याद रही सिर्फ आपकी बात। आपके एकनिष्ठ प्यार की बात। यह सोच-सोचकर मैं परम तृप्ति की अनुभूति पाता कि इस ससार मे आप-सरीखी नारियाँ भी है—आपके जैसे प्रेम-सरीखे एकनिष्ठ प्रेम भी है। मैने अपने देश मे भी सभी से यही कहा है कि यदि अनन्य प्रेम का रूप देखना चाहते हो तो फिर कलकत्ता चले जाओ। वहाँ यदु भट्टाचार्य लेन की पारुल दीदी को देख आओ। इसीलिए जब तारक ने मुझे पहले आपके बारे मे लिखा, तब मुझे ज्यादा तकलीफ हुई।'

पारुल ने पूछा, 'उसने आपको क्या लिखा था ?'

सिमसन साहब ने कहा, 'तारक ने लिखा था कि आप बहुत ही आर्थिक सकट मे है। मैं यदि इडिया आकर मन्त्रियो को असली घटना बतला दूँ तो शायद गवर्नमेट की तरफ से आपको कोई मासिक वृत्ति मिल सकती है। कारण यह है कि असली घटना तो मेरे और आपके सिवाय और कोई जानता नही। मेरी रिपोर्ट मे तो झूठी बाते लिखी गयी थी। और फिर इन दिनो तो गवर्नमेट फ्रीडम-फाइटरो को महीने मे दो-अढाई सौ रुपये की सहायता दे रही है। आपको भी वह सहायता क्यो नही मिलेगी ? आपने भी तो देश की आज़ादी की लडाई मे हिस्सा लिया था। इसीलिए मैं कुछेक मिनिस्टरो से मुलाकात कर उन्हे सच्ची घटना की जानकारी देने के लिए यहाँ आया हूँ।'

पारुल ने तुरन्त कहा, 'रुकिये। मैं अभी आती हूँ। आप के लिए कुछ जलपान की व्यवस्था करती हूँ।'

सिमसन साहब बोल उठे, 'नही-नही, वह सब-कुछ भी करने की ज़रूरत नही है, दीदी! मै होटल से खाकर चला हूँ।'

'नही-नही, मै यह सब कुछ भी नही सुनूँगी।'

यह कहकर पारुल जल्दी-जल्दी कमरे से निकलकर बाहर चली गयी।

तारक सेन जब मिस्टर सिमसन से मुलाकात करने होटल पहुँचा, तब तक दिन निकल चुका था।

बेयरे ने पूछा, 'क्या आपका नाम तारक सेन है, हुजूर ?'

'हाँ, लेकिन साहब गये कहाँ ?'

'साहब काफी देर तक आपका इन्तजार करने के बाद ही बाहर निकले है। आपसे यहाँ इन्तजार करने के लिए कह गये है।'

तारक एक बेंच पर बैठ गया। होटल मे चारो ओर व्यवस्था दीख रही थी। बॉय और बेयरो की इधर-उधर दौड-भाग और लिफ्ट का कभी ऊपर जाना, कभी नीचे उतरना ! कितने ही साहब और मेमसाहब आ-जा रहे है। अगरेजो के शासनकाल मे जैसा नजारा रहता था, ठीक वैसा ही अब भी था। सारी पृथ्वी मानो इसी होटल को केन्द्र मानकर इसी के चारो ओर चक्कर लगा रही थी।

तारक ने एक बार घडी की तरफ नजर डाली। उस समय दिन के नौ बजे थे। उसके बाद दस बजे, फिर ग्यारह भी।

हठात उसने देखा कि साहब दरवाजे से भीतर आ रहे थे।

तारक दौडकर साहब के पास गया। 'गुड मार्निंग, सर...!'

मिस्टर सिमसन ने तारक को देखकर कहा, 'तुम्हे आने मे इतनी देर क्यो हुई ?'

तारक ने कहा, 'सर, बस मिलने मे देर हो गयी। मेरे यहाँ आने के कुछ ही पहले आप चले गये थे।'

सिमसन ने चलते-चलते कहा, 'मैं तो तुम्हारे घर पर ही गया था। मै वही से तो आ रहा हूँ।'

'आप मेरे घर पर गये थे ?'

'क्या करता, तुम्हारे काम के लिए ही तो इंडिया आया हूँ। सुबह-सुबह ही नीद टूट गयी थी। इसीलिए टी-ब्रेकफास्ट लेते ही मैं बाहर निकल

पडा ।'

लिफ्ट के द्वारा ऊपर जाकर सिमसन अपने कमरे मे आये । पीछे-पीछे तारक भी कमरे में गया ।

सिमसन ने कहा, 'मै आज ही लौट रहा हूँ, तारक !'

तारक ने कहा, 'यह क्या कह रहे है, सर ? तो फिर मेरा क्या होगा, सर ? आप पारुल के लिए कुछ नही करेंगे, सर ?'

सिमसन ने कहा, मैने जब वादा किया है तो उसे निभाऊँगा भी । आज ही तुम्हारे मिनिस्टर के साथ मै मुलाकात करूँगा । मिनिस्टर का नाम तुमने क्या बतलाया था ?'

तारक ने कहा, 'प्रफुल्ल चौधरी । वही प्रफुल्ल चौधरी, सर, जिसे पकडने के लिए आप लोगो ने कभी रिवार्ड की घोषणा की थी । प्रफुल्ल चौधरी—फरीदपुर ट्रेन-डैकती केस के मुख्य अपराधी । वही प्रफुल्ल चौधरी, सर, अब हमारे होम-मिनिस्टर है । किसी समय अलकेश चक्रवर्ती उनका चहेता अनुयायी था ।'

'क्या फ्रीडम-फाइटरो का केस उन्ही के हाथ मे है ?'

'हॉ, सर !'

'तो फिर तुमने इतने दिनो तक उनके साथ मुलाकात क्यो नही की ?'

'मैने मुलाकात की थी, सर ! लेकिन उन्होने कहा था कि जो कम-से-कम छह महीने तक जेल की सजा काट चुके है, उन्हे ही सहायता देने का नियम है । उसके अलावा और किसी को सहायता देने का तो नियम ही नही है ।'

मिस्टर सिमसन जाने क्या सोचने लगे मन-ही-मन । मानो कोई गम्भीर समस्या उनके मन का बोझ बन रही थी ।

हठात उन्होने कहा, 'अच्छा तारक, तुम्ही ने पारुलबाला के साथ विवाह किया है ?'

तारक ने कुछ लजाते हुए कहा, 'हाँ, सर. !'

सिमसन ने कहा, 'किन्तु यह बात तो तुमने मुझे पहले कभी नहीं बतलायी । चिट्ठी मे भी तुमने यह सब-कुछ नही लिखा था ! कल रात भी तुमने इस बारे मे कुछ नही कहा ।'

तारक ने कहा, 'मै लिखना भूल गया था, सर ! लेकिन आप यह सब पूछ क्यो रहे है ? पारुल ने कुछ कहा है क्या आपसे ?'

'पारुल क्यो कुछ कहती ! हठात पारुल का घूँघट जरा-सा हटते ही मैंने उसकी माँग मे सिन्दूर देखा । तभी मुझे कुछ शक हुआ । पूछने पर ही पारुलवाला ने तुम्हारा नाम बतलाया ।'

तारक ने पूछा, 'आपने और भी कुछ बतलाया है क्या पारुल को, सर ? आपने कही यह तो नही बतला दिया कि मैने ही आपको अलकेश के वहाँ होने की खबर दी थी ?'

मिस्टर सिमसन ने जवाब दिया, 'हाँ-हाँ, ज़रूर बतला दिया है । बिना बतलाये पारुल समझती कैसे ? अलकेश यदु भट्टाचार्य लेन मे पारुल के घर मे छिपा हुआ है, यह खबर अगर तुम न देते तो हम अलकेश को भला कहाँ खोज पाते ?'

'सर, मैने जो आपको अलकेश की खोज-खबर दी थी, क्या वह भी आपने पारुल को बतला दिया ?'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'क्या सिर्फ यही ? तुमने इसके लिए जो दस हज़ार रुपये का इनाम पाया है, उसकी खबर भी मैने पारुल को दे दी है ।'

तारक ने मानो सिर पीट लिया ।

उसने कहा, 'सर, आपने एकबारगी ही सर्वनाश कर डाला, आपने मेरा महासर्वनाश कर डाला है । अब मैं घर जाकर पारुल को कौन-सा मुँह दिखाऊँगा, सर ? क्या कहूँगा उससे ? आपने मेरा जो अहित किया है उसकी आपकी कल्पना भी नही कर सकते ।'

'तो फिर क्या तुमने पारुल से यह बात नही बतलायी थी कि तुम पुलिस के भेदिये रह चुके हो ?'

'नही सर, यह जानने पर भला क्या वह मेरे साथ विवाह करने के लिए तैयार होती ?'

'तो क्या तुम पहले से ही पारुल को प्यार करते थे ?'

'हा, सर ! मैंने पारुल के साथ अपनी एक फोटो खिचवायी थी और इसी बात पर नाराज़ होकर अलकेश ने मुझे पार्टी से निकाल बाहर किया

था। एक दिन मैं पारुल के घर पर लुक-छिपकर गया, लेकिन अलकेश ने मुझे देख लिया और मुझे ठोकरें मार-मारकर तब उसने निकाल बाहर कर दिया था। मै वह अपमान भूल नही पाया, सर ! इसीलिए मैंने इलिशयमरो मे आपके दफतर मे जाकर अलकेश की खबर दी थी। उद्देश्य था सिर्फ अलकेश से प्रतिशोध लेने का। अलकेश को इस ससार से किसी भी तरह विदा करने के बाद ही मै पारुल से विवाह कर सकूँगा—यही थी मेरी उम्मीद।'

यह सुनकर मिस्टर सिममन सोच-विचार मे डूब गये।

उन्होने कहा, 'तुम अपने सर्वनाश की बाते सोच रहे हो, तारक ! लेकिन शायद तुम यह नही जानते कि तुमने मेरा क्या सर्वनाश किया है। मेरे इतने दिनो का स्वप्न तुमने चूर-चूर कर डाला !'

'यह क्या, सर ! भला मैने आपका ऐसा क्या अहित किया है ?'

सिमसन ने कहा, 'यह तुम नही समझ सकोगे, तारक ! इतना समझ पाने की क्षमता नही है तुम्हारे पास ! तुमने सिर्फ पारुल का ही जीवन नष्ट नही किया, मेरी भी ज़िन्दगी बरबाद कर डाली।'

तारक ने कहा, 'क्या जाने, सर ! आप की बाते मेरी समझ मे बिलकुल भी नही आ रही है।'

मिस्टर सिमसन का चेहरा उसी तरह गम्भीर था।

उसके बाद उन्होने कहा, 'ठीक है, जो होना था सो हो गया। मैंने वादा किया था कि मैं पारुल के लिए तुम्हारे होम-मिनिस्टर मिस्टर चौधरी के साथ मुलाकात करूँगा। वह वादा मुझे पूरा करना है। चलो, अभी तुरन्त चलो। देर किस बात की ? चलो ...।'

उस दिन प्रफुल्ल चौधरी ने मिस्टर सिमसन के मुँह से सारी बाते सुनी। किसी समय का अपराधी आज मिनिस्टर बन चुका है ! उन बीते दिनो की बाते वह प्राय भूल ही चुके थे। सिमसन साहब के मुँह से सब-कुछ सुनकर वे बाते ताज़ा हो गयी। खूब ही आवभगत की उन्होने। उसके बाद

जब अलकेश चक्रवर्ती की बात उठी, तब उन्होंने कहा, 'सचमुच वह सोलह आने विशुद्ध देशभक्त था। आज यदि वह जिन्दा रहता तो निस्सन्देह हमारी बहुत मदद ही कर सकता था। वह देश के लिए बहुत ही काम का सिद्ध होता।'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'मिस्टर चौधरी, दरअसल हम लोग उसे मारना नही चाहते थे।'

प्रफुल्ल चौधरी ने पूछा 'तो फिर आपने उस पर इस तरह निर्ममता से गोली क्यो चलायी? क्यो उसे मार डाला आपने?'

मिस्टर सिमसन ने जवाब दिया, 'इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए मैं इडिया आया हूँ।'

'अगर मै आपके हाथो पड जाता तो क्या आप मारे बिना मुझे छोडते?'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'सम्भवत आप ठीक ही कह रहे है। उन दिनो हम लोगो को यह ऑर्डर मिला था कि किसी भी टेरररिस्ट को जिन्दा ही पकडना होगा, उसके बाद उस पर मुकदमा चलाया जायेगा और मुकदमे का फैसला जो भी हो, वही मान्य होगा। जर्मनो की तरह जिस किसी को भी मार डालने का ऑर्डर हमे नही दिया था ब्रिटिश गवर्नमेट ने।'

प्रफुल्ल चौधरी ने कहा, 'मैने होम-मिनिस्टर की हैसियत से आप लोगो की वह फाइल देखी है। आप लोगो ने अनेकानेक निर्दोष व्यक्तियो को फाँसी दी थी।'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'हो सकता है कि वैसी घटनाएँ हुई हो। किन्तु महात्मा गाधी का ही केस लीजिये। अगर और कोई दूसरी गवर्नमेट होती—चाहे जर्मन, फ्रेंच, अमेरिकन या और कोई भी—तो क्या वह महात्मा गाधी को फाँसी दिये बिना मानती? उन्हे हम लोगो ने बार-बार कारागार का बन्दी ज़रूर बनाया, लेकिन क्या हम लोगो ने उनकी जान ली?'

उसके बाद कुछ रुककर उन्होने फिर कहा, 'आप शायद नही जानते कि अलकेश चक्रवर्ती के केस के बाद ही मैंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया, और साथ-ही-साथ मैं इंडिया छोडकर चला गया।'

'लेकिन क्यो ? अलकेश चक्रवर्ती के खून के साथ आपके नौकरी छोडने का क्या सम्बन्ध है ?'

मिस्टर सिम्सन कहने लगे 'मैने आपसे कहा तो ! वही बात बतलाने के लिए ही तो मै इडिया आया हूँ। मै जानता हूँ कि आप एक व्यस्त व्यक्ति है, अतएव मैं आपका अधिक समय नही लूँगा। आपने यदि वह फाइल देखी है तो आपने उसमे मेरी एक रिपोर्ट भी अवश्य देखी होगी, जिसमे लिखा है कि जिस दिन मैं अलकेश चक्रवर्ती को पकडने के लिए यदु भट्टाचार्य लेन गया था, उस दिन मुझे देखते ही उसने भागने की चेष्टा की थी। मैंने झट-पट रिवॉल्वर चलाकर उसे खत्म कर डाला।'

प्रफुल्ल चौधरी ने कहा, 'मैने वह फाइल मँगाकर यह रिपोर्ट देखी है।'

'किन्तु सच पूछिये तो वह एक झूठी रिपोर्ट है। मैंने उस रिपोर्ट मे झूठी बाते लिखी थी। दरअसल मैने अलकेश की हत्या नही की थी।'

'तो फिर किसने किया अलकेश का खून ?'

मिस्टर सिमसन ने जवाब दिया, 'पारुलबाला गागुली ने।'

'यह क्या कह रहे है ? पारुलबाला गागुली के घर मे तो उसने आसरा ही ले रखा था।'

'हॉ, पारुलबाला ने देखा कि मैने अलकेश की तरफ रिवॉल्वर का निशाना साध रखा था। अलकेश के बचने की कोई राह नही थी। अलकेश का पकडा जाना निश्चित था और पकडे जाने पर सम्भवत हम लोग अलकेश को फॉसी चढा देते। यही सोचकर पारुलबाला ने बिछौने के नीचे छिपायी हुई रिवॉल्वर निकालकर उसी क्षण ही अलकेश पर गोली चला दी।'

प्रफुल्ल चौधरी सिमसन साहब की बातो को सुनकर अवाक रह गये। उन्होने पूछा, 'तो क्या पारुल की गोली से ही अलकेश की मौत हुई ? वेरी स्ट्रेज.. !'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'रीयली वेरी स्ट्रेज ! पारुल अलकेश को कितना चाहती थी, देश को कितना चाहती थी—उसका यह जीता-जागता सबूत है। पारुल जानती थी कि यदि अलकेश पकड़ा गया तो उसके साथ-साथ और भी कितने ही लोग पकडे जायेगे। उस दिन पारुल

ने एक अलकेश को मारकर हजार-हज़ार दूसरे अलकेशो को बचाया था। अगर अलकेश नही मरता, तो फिर आप भी पकडे जाते, फाँसी के फन्दे से झुला दिये जाते और आज आप मिनिस्टर नही होते ।'

कुछ देर तक प्रफुल्ल चौधरी के मुँह से एक भी शब्द नही निकला ।

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'आज सुबह ही मै पारुल के घर जाकर उसकी दुरवस्था देख आया हूँ । वहाँ रुपये-पैसे की वडी तगी है ..। आप लोग तो अब सभी फ्रीडम-फाइटरो को सहायता देते है, किसी को दो सौ रुपयो की तो किसी को ढाई सौ की । तो क्या आप लोग पारुल को कोई सहायता नही दे सकते ? वह भी एक फ्रीडम फाइटर है। देश के लिए उसका अवदान, उसका योगदान---क्या कुछ कम है ?'

प्रफुल्ल चौधरी बोले, 'नही-नही, उसका योगदान कम हो, ऐसी वात नही । लेकिन इडिया गवर्नमेट ने नियम बनाया है कि कम-से-कम जिसने छह महीने तक की जेल काटी हो, उसे ही सहायता दी जायेगी, और किसी दूसरे को नही ।'

मिस्टर सिमसन ने कहा, 'किन्तु फ्रीडम-फाइटरो के पीछे जो लोग थे, जिनके वल-वूते पर वे अनवरत-अक्लान्त संघर्ष कर पाये थे, उनका त्याग क्या कुछ कम है ?'

प्रफुल्ल चौधरी ने कहा, 'आपका यह नुक्ता गौर करने लायक है, मिस्टर सिमसन ! मैं इसके सम्बन्ध मे दिल्ली को एक नोट भेजता हूँ । यदि सैंक्शन मिल गयी तो तुरन्त ही पारुल को कुछ सहायता देने की मै पूरी कोशिश करूँगा । मैं वादा कर रहा हूँ .।'

यह कहकर प्रफुल्ल चौधरी ने अपने स्टेनोग्राफर को बुलाकर एक नोट लिखवाया ।

अब मिस्टर सिमसन उठ खडे हुए। कहने लगे, 'मिस्टर चौधरी, आपका वहुत-वहुत धन्यवाद । मैनी थैंक्स ..। यदि हो सके तो इस सम्वन्ध मे कुछ जरूर कीजिये । मैं सिर्फ इसीलिए इतनी दूर मे इडिया आया हूँ ।'

यह कहकर वह राइटर्स विल्डिग मे वाहर निकल आये । तारक उनके पीछे था । नजदीक आकर उसने पूछा, 'क्या हुआ, सर ? क्या मिनिस्टर साहव राजी हुए है ? पारुल की सभी वातें आपने खोलकर बता दी है ?

आपने यह तो बतलाया ही होगा कि पारुल किस तरह अभावग्रस्त है ! दो सौ रुपये-यदि नही मिले तो गवर्नमेंट कम-से-कम डेढ सौ रुपये ही दे। वही सही। बिलकुल कुछ भी न मिलने से तो कुछ भी मिल जाना बेहतर है। आखिर महीने-भर के राशन का खर्च तो चल जायेगा उससे।'

मिस्टर सिमसन के मुँह से एक भी शब्द नही निकला।

वह फिर होटल मे लौट आये। रात सात बजे उनका प्लेन था। उसी बीच भोजन भी करना था।

तारक ने पुन एक बार पूछा, 'तो सर, आखिर क्या तय हुआ ? रुपये मिलेगे तो ?'

मिस्टर सिमसन तभी पूछ बैठे, 'तारक, तुम पारुल से विवाह किस तरह कर पाये ? इस विवाह के लिए तुम पारुल को राजी कैसे कर पाये, बतलाओ तो ?'

तारक ने कहा, 'सर, इसके लिए बहुत पापड बेलने पडे है। मेरे हाथ मे तो उस समय दस हजार रुपये आ चुके थे, जबकि पारुल के हाथ बिलकुल खाली थे। अलकेश के मारे जाने के पश्चात उसकी देख-भाल करने वाला कोई नही था। ठीक ऐसे ही समय मे मैं पारुल के सामने अनायास आ उपस्थित हुआ। बेचारी पारुल, एक अनाथ लडकी ! उसके भरण-पोषण के सम्बन्ध मे कुछ भी पक्का नही था। उस समय वे दस हजार रुपये बहुत काम आये। काफी दिनो तक समझाने-बुझाने के बाद पारुल कुछ नरम पडी। उस समय पारुल की देखभाल करने वाला मेरे सिवाय और कोई था ही नही। मैंने उसकी उसी मन स्थिति का ही फायदा उठाया, सर ! एक दिन काली-मन्दिर मे जाकर हम दोनो ने विवाह कर लिया। सिर्फ विवाह ही हुआ है; सर ! हम लोग पति-पत्नी है, बस यही। लेकिन पारुल का मन कभी भी पा नही सका, सर ! वह अभी तक अपने मन-मन्दिर में अलकेश को बिठाये हुए है। उसी के बारे मे वह रात-दिन सोचा करती है। मैं उसका हस्बैंड हूँ, सिर्फ नाम के लिए।'

मिस्टर सिमसन ने सब-कुछ सुना, किन्तु उन्होने कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नही की। तारक ने न जाने कि कितनी बक-झक की, पर एक भी बात मानो मिस्टर सिमसन के कानो मे नही पड़ी।

भोजन करने के बाद वे टैक्सी मे बैठे। तारक भी टैक्सी मे बैठा। उसके बाद टैक्सी दमदम एयरपोर्ट की तरफ दौड़ने लगी। शाम हो चुकी थी। ऑफिस की छुट्टी का समय था। रास्ते मे, बस मे और ट्राम मे, हर जगह भीड़-ही-भीड़ नजर आ रही थी, असख्य यान, वाहन और असख्य मनुष्य! बस और ट्राम के पायदानो पर भी लोग झूल रहे थे।

मिस्टर सिमसन एकटक देखने लगे उस ओर। उन्हे लगा, मानो वे सब मनुष्य नही थे। वे सब मानो 'समय' के प्रतिरूप थे, टाइम के सिम्बल! बस और ट्राम पर मानो समय ही झूलते-झूलते दौड़ा जा रहा था, इतिहास का निर्माण करने के लिए। वे किसी भी क्षण ही समवेत होकर इतिहास का रूप धारण कर लेगे। उस इतिहास मे किसी की व्यथा-कथा नही होगी, किसी के सुख-दुख की गाथा नही होगी और न ही होगी किसी के आनन्दातिरेक की कहानी। उस इतिहास मे लिखी होगी सिर्फ राजा, बादशाहो और प्रेसीडेंट, मिनिस्टरो और प्राइम-मिनिस्टरो की कहानी! और हम सब? हम सब, जो इन बस-ट्रामो मे झूलते है? हमारी कहानी समय के निर्मम स्रोत मे विलीन हो जायेगी। हमारी कहानी किसी भी इतिहासवेत्ता के द्वारा नही लिखी जायेगी। न तो अतीत मे किसी ने इसे लिखा है और न भविष्य मे कोई लिखने वाला है। न तो अतीत मे हममे से किसी ने इतिहास के पन्नो मे स्थान पाया है और न कोई भविष्य मे ही पायेगा। हमारी कहानी इतिहास मे लिखी जाने लायक ही नही है। इसी-लिए तो अलकेश आदि की कहानी भी किसी इतिहास मे उल्लिखित नही है।

घर लौटते लौटते काफी देर हो गयी। मिस्टर सिमसन का प्लेन छूटने वाला था शाम सात बजे। किन्तु वह प्लेन छूटा रात के साढे दस बजे। दमदम एयरपोर्ट से इतनी रात मे घर लौटते-लौटते तारक को रात के लगभग बारह बज गये।

लेकिन तारक का मन काफी खुश था। जब मिनिस्टर साहब ने वादा किया है तो आज हो या कल, कुछ व्यवस्था तो निश्चित ही हो जायेगी।

ट्राम के रास्ते से यदु भट्टाचार्य लेन मे जाकर तारक ने अपने मकान

के सदर दरवाजे की कुडी बजाना शुरू किया। 'पारुल, ओ पारुल . ! दरवाजा खोलो. !'

भीतर मे कोई भी आवाज नही आयी—कोई भी जवाब नही। उसने फिर दरवाजा खटखटाया, तब भी पारुल से कोई जवाब नही मिला। आधे घटे तक दरवाजा खटखटाते रहने पर भी दरवाजा नही खुला, तब कुछ-कुछ सन्देह हुआ तारक को। तो क्या . ? तो क्या ! !

मुहल्ले के और कुछ भी लोग खिडकियो से तारक की ओर देखने लगे थे। पुराने जर्जर किवाड थे। पाँव से ठोकर मारते ही थोडी-सी फाँक हो गयी। उसी फाँक से दरवाजे की कुडी खोली गयी। दरवाजा खुल गया। उसके बाद आँगन था। आँगन पार करते ही था चबूतरा। पारुल का कमरा भीतर से बन्द था। वहाँ भी पुराने किवाड थे। आँगन से एक फावडा लाकर उसकी मदद से दोनो किवाडो के बीच थोडी-सी फाँक की गयी। उसी फाँक मे से किसी तरह भीतर जाकर तारक ने बत्ती का स्विच दबाया। और साथ-ही-साथ उसके सिर पर मानो वज्रपात हुआ।

गले मे साडी का फन्दा फँसाये पारुल छत के काठ से झूल रही थी।

तारक भय से विह्वल हो गया। तभी एक खत पर उसकी नजर पडी। बिछौने पर पडा था वह खत। झट-पट उसे उठाकर तारक पढने लगा।

उसमे लिखा था—

मैं अब चली। तुम मेरे साथ इस तरह की प्रवचना कर सकोगे, यह मै कल्पना मे भी नही सोच पायी थी। आज सुबह सिमसन साहब मेरे पास आये थे। वे अगर नही आते तो फिर मै कुछ भी नही समझ पाती। उन्ही के मुँह से मैने सुना कि तुम पुलिस के भेदिये थे। तुम्ही ने दस हजार रुपये के लालच मे उस दिन अलकेश को पकडवाया था। पहले यदि मै जानती तो मेरे जीवन की दिशा कुछ और ही

होती। लेकिन अब क्या हो सकता है ? अब तो और दूसरा उपाय बचा ही नहीं। इसीलिए यह रास्ता अपना रही हूँ। इस रास्ते के सिवाय और कोई दूसरा रास्ता मुझे नहीं सूझा है। तुमने इस तरह जो मुझे ठगा, उसका प्रतिशोध मैं खुद अपने-आपसे ले रही हूँ।

इति।

—पारुल

□□